ज्योतिष कार्यालय के निमय

जयपुर ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवेमूक प्रश्न आदि संस्कार संपन्न परिश्रम से बनाए जाते हैं।

जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त (टाईम) और अपना जन्मदिन, सम्वत् या उमर का अन्दाजा तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५) रुपया से लेकर १०१) रुपया तक। वर्षफल ५) रुपया से ११) रुपया तक। टेवा २) रुपया और मूक प्रश्न फीस २) रुपया। बहार से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें।

शुभेच्छु,

ज्योतिर्विद् पं० जगदीशचन्द्र गौतम

जयपुर ज्योतिष कार्यालय

मुजफ्फरपुर।

आनन्द केमिकल प्रेस, सरैयागंज-मुजफ्फरपुर में मुद्रित।

॥ श्रीः ॥

विषय सूचीपत्र—

विषय		पृष्ट नम्बर

विषय	पृष्ट नम्बर

	विषय	पृष्ट नम्बर
६३	चौर योग	१०२
६४	बंधन योग	१०२
६५	व्यभिचार योग	१०३
६६	द्वादश भाव विचार	१०३
६७	मारक	१०४
६८	द्वादश भाव से अनेक बातों का ज्ञान	११३
६९	द्वादश भाव के सामान्य नियम	११५
७०	बली ग्रह	११५
७१	मध्यम बली	११६
७२	निर्बली	११६
७३	इसके अतिरिक्त	११६
७४	द्वादश भाव शुभाशुभ ग्रह के सामान्य फल	११८
७५	अंशों से फल देखना	१२५
७६	तनु भाव संबन्धि योग	१२६
७७	धन भाव सम्बन्धी योग	१४०
७८	तृतीय भाव सम्बन्धी योग	१५४
७९	चतुर्थ भाव सम्बन्धी योग	१५९
८०	पंचम भाव सम्बन्धी योग	१६५
८१	षष्ट भाव सम्बन्धी योग	१७५
८२	सप्तम भाव सम्बन्धी योग	१८३
८३	अष्टम भाव सम्बन्धी योग	१९४

विषय | पृष्ट नम्बर

———:०:———

श्रद्धांजलि

——o——

इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिये दानवीर विभूति तथा सम्माननीय महोदय श्रीमान् राय बहादुर श्रेष्ठ जी श्री हजारीमल जी के सुपुत्र श्री सोहनलाल जी नाथानी ने मुझे आर्थिक सहायता पहुंचाकर अपने उदारता तथा साहित्य प्रेम का पूर्ण परिचय दिया अतः मैं उन्हें कोटिश धन्यवाद देता हूँ। वर्त्तमान विश्व संकट के समय इस ग्रन्थ का प्रकाशित होना असंभव था किन्तु श्रीमान् श्रेष्ठजी धनराज जी की सुबुद्धि कृपा दृष्टि व उदाराश्रय के कारण ही यह ग्रन्थ आज में जनता जनार्दन की सेवा में उपस्थित कर रहा हूँ। आपके इस महान उपकार के लिये अपने हृदय की सदीच्छा व्यक्त करने के अतिरिक्त मेरे लिये अन्य कोई साधन नहीं। अतः श्री सत्यनारायण भगवान से मेरी सविनय व नम्र प्रार्थना है की उक्त श्रीमानों को पूर्ण ऐहिक सुख प्रदान कर चिरायु करें।

——:o:——

समर्पण

सब संसार में ज्योतिष शास्त्र का चमत्कार प्रसिद्ध है। बड़े २ विद्वान महर्षियों ने इस शास्त्र के अनेक ग्रन्थ निर्माण किये हैं। यह एक ऐसा शास्त्र है की जिसके द्वारा भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों कालों के वृतान्त जाने जाते हैं। यदि पूर्ण ज्योतिषी हो तो कैसा भी कुतर्की हो उसको अपनी विद्या से विश्वास करा सकता है। जबतक इस देश में ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थ लब्ध होते थे, और पूर्ण पंडित इस विद्या के पाये जाते थे, तब तक जो कुछ वे फलित द्वारा फल कथन करते थे उसमें किसी प्रकार का फेर फार नहीं होता था। कालक्रम से सिद्धान्त ग्रन्थों का लोप होने लगा, गुरू मुख से विद्या उपार्जन करने में आलश्य आया। परिश्रम न करके कार्यवाही मात्र से हीं अपने को कृतकृत्य मानने लगे तब से ज्योतिष शास्त्र में कुछ न्यूनता-सी आ गई और मनुष्यों को भी कुछ २ विराग होने लगा तथा कोई २ आक्षेप भी करने लगे यही सोचकर मेरे परम पूज्यपाद पिता जी श्री श्री दैवज्ञवर्य्य पं० बद्री प्रसाद जी अनेक प्राचीन ग्रन्थों का सारांश लेके थोड़े ही परीश्रम से भली भांति जन्मपत्र का फलित कहने योग्य हो जाय, ऐसा समझ कर मुझे प्रदान किया यही चमत्कार ज्योतिष नामक छोटा-सा ग्रन्थ निर्माण कर, मैं पुज्य पिताजी तथा जनता जनार्दन की सेवा में उपस्थित करता हूँ। द्रव्याभाव के कारण इस संस्करण में तीन विषय नहीं छपे है आपलोगों की कृपा होगी तो अगले संस्करण में गणित, मूक प्रश्न, मूहूर्तादि विषय दिये जायेंगे इसमें कहीं दृष्टि दोष से वा लेख प्रमाद से वा प्रेस की खराबी से किसी प्रकार की त्रुटि रही हो तो सज्जन गण कृपा दृष्टि से सुधार के अशुद्धियों में हास्य न करते शुद्धार्थ से संतुष्ट हो मेरे परिश्रम को सफल करेंगे यही निवेदन है।

——:o:——

ज्योतिर्विद पं. जगदीशचन्द्र गौतम

ज्योतिष शास्त्र के गणित व फलित विभाग विषयों पर सर्वमान्य संस्कृत भाषा में तथा अन्य भाषा में या किसी विषय में प्रथम यहाँ दो शब्द लिखना हम आवश्यक समझते हैं। ज्योतिष शास्त्र यह संस्कृत भाषा में श्लोक रूप में वर्णित है और आधुनिक युग में अधिकांश सुशिक्षित समाज इस देव वाणी से सर्वथैव अपरिचित है। ऐसी स्थिति में इस ज्योतिष शास्त्र के जिज्ञासु व प्रेमियों को इसे अवगत करना तथा सर्व साधारण जनता को इसके रहस्य, मर्म, तत्व व उपयोग से पूर्णतः परिचित होना असंभव है। जनता के समक्ष यह एक कठिन समस्या दीर्घ काल से उपस्थित है और इसे कुछ अंश क्यों न हो, हल करने के हेतु हमने यह जयपुर ज्योतिष कार्यालय खोला है। उद्देश्य यह है कि इस शास्त्र पर अविश्वास या अन्ध विश्वास व्यक्त करनेवाले लोगों को तथा तरुण

अवस्था वालों को यह क्लिष्ट तिरस्कृत, परन्तु नित्योपयोगी विद्या अल्प कष्ट, खर्च व समय में प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हो और यह त्रिकालदर्शी विद्या उनके आदर को शीघ्र ही प्राप्त हो सके। इसके साथही इस सर्व श्रेष्ठ विद्या का प्रचार देश के समस्त सुशिक्षित सज्जनों में अधिक प्रभाव में होकर उन्हें इससे नित्य लाभ उठाने का सुअवसर मिल सके।

इस देश में इस शास्त्र का जन्म कई हजार वर्ष पूर्व मानवी प्राणी के कल्याण के लिये अर्थात् हताशों के हृदय में नवशक्ति उत्पन्न करने के लिये, दीनों का दुःख दूर करने के लिये मूढ़ों के मन का अन्धकार नष्ट कर उनमें कर्तव्य कर्म स्फूर्ति की ज्योति प्रज्वलित करने के लिये, मार्ग भ्रष्ट लोगों को सन्मार्ग दिखाने के लिये, मदान्धों को मद से जागृत करने के लिये, दुखियों को सुखी, अज्ञानी को ज्ञानी—नास्तिकों को आस्तिक तथा प्रारब्धवादियों को प्रयत्नवादी बनाने के लिये, पतितों का उद्धार करने के लिये, समाज शुद्धि के लिये और राष्ट्र का बनाव संस्कृति उद्दीपित करने के लिये हुआ है। जिसके ज्ञान से प्रत्येक व्यक्ति, कुटुम्ब, व समाज को लाभ होकर राष्ट्र को लाभ होना निश्चित है। जगत में राष्ट्रीय-धर्म, राष्ट्रीय-भावना, राष्ट्रीय-संस्कृति व राष्ट्रीय-विद्या के प्रति राष्ट्र के प्रत्येक सन्तान के मन में अभिमान जाग्रत हुए बिना किसी भी राष्ट्र की उन्नति होना असम्भव है। अतः यह जयपुर ज्योतिष कार्यालय जनता के हित के लिये खोला गया है।

ज्योतिष विद्या की महानता व अनमोल उपयोगिता तथा अद्भुत चमत्कार से जगत के विद्वजन पूर्ण परिचित हैं परन्तु शास्त्र की क्लिष्टता तथा सूक्षता के कारण यदि अनभिज्ञ लोग इस शास्त्र पर अज्ञानवश कटाक्ष करते हों तो उसपर दुरलक्ष करना ही योग्य होगा। इस शास्त्र की उत्पत्ति प्रगति व महति तथा प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास का पूर्ण विवेचन हमने आगे किया है। अतः यहां उसकी पुनरावृत्ति करना उचित नहीं। किन्तु विषयारंभ करने के पूर्व प्रथम यह जानना आवश्यक है कि (१) एक ज्योतिष शास्त्र क्या है और (२) क्या मानवी जीवन सुखमय वनाने के लिये इस शास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता है।

१ ज्योतिष शास्त्र यह एक दूरबीन यंत्र है जिसके द्वारा मनुष्य अत्यन्त दूर की शुभाशुभ घटनायें प्रत्येक क्षण अत्यन्त स्पष्ट रीति से देख सकता है अर्थात् इस विद्या के बल मनुष्य को भविष्य काल में होनेवाले शुभाशुभ घटनाओं तथा समय का निश्चित ज्ञान वर्तमान समय में हो सकता है। यह एक ऐसी विद्या है कि सुख के समय यह दूरवीन का कार्य करती है और दुःख आने पर यह टौर्च की तरह प्रकाश देने का कार्य करती है। अर्थात् यह एक ही विद्या भिन्न २ समय पर भिन्न २ रूप से अपना कार्य कर मनुष्य को भावी संकटों से जागृत कराती है। इसीलिये इस जगत में इसका अस्तित्व, महत्व

और प्रभूत्व आजतक कायम रह सका और प्रतिदिन वलवत्तर होता जा रहा है।

२ मनुष्य यह एक आशावादी प्राणी है और वह प्रायः आशा पर ही जीवित रहता है। मानवी जीवन की श्रेष्टता केवल वर्तमान घटनाओं के ज्ञान से नहीं किन्तु भविष्य में होनेवाली शुभाशुभ घटनाओं के ज्ञान ही से सिद्ध हुई है। और भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने का एकमेव साधन याने ज्योतिष शास्त्र है। अतः भविष्य ज्ञान प्राप्त कर जीवन सुखमय बनाने के लिये इस शास्त्र की मनुष्य को अधिक आवश्यकता है। इसके सिवाय दूसरी दृष्टि से विचार करने से पाठकों को यह ज्ञात होगा कि मनुष्य यह एकाग्रवासी प्राणी है। वह मृत्यु की टिकट ले जन्म स्टेशन से काल की गाड़ी में बैठकर नित्य प्रवास को पार करता है। परन्तु जिस तरह से रेलगाड़ी का प्रवासी प्रवास आरम्भ करने के पूर्व या आरम्भ करने पर अपने स्टेशन से मुकाम तक के प्रत्येक अगले छोटे बड़े व गाड़ी बदलनेवाली जंक्शन स्टेशनों का तथा मार्ग में मिलनेवाले सुख दुःखादि और निश्चित समय का ज्ञान अनुभवी प्रवासी से रेलवे गाईड से स्वयं प्राप्त कर लेता है अथवा मोटर गाड़ी का प्रवासी अपने निश्चित स्थान से मुकाम तक के स्थान को तथा मार्ग में मिलनेवाले नदी पुल या सड़क की स्थिति आदि का ज्ञान अनुभवी प्रवासी से अथवा मोटर गाईड से स्वयं प्राप्त कर लेता है उसी तरह काल रूपी गाड़ी के प्रवासी को जन्म

स्टेशन से मृत्यु स्टेशन तक मिलनेवाले छोटे बड़े व जंक्शन स्टेशनों का व मार्ग के अनेक सुख दुःखादि समय का निश्चित ज्ञान अनुभवी भविष्यज्ञों से अथवा ज्योतिष शास्त्र से स्वयं प्राप्त कर लेना चाहिये। अन्यथा रेल व मोटर गाड़ी के अज्ञ प्रवासी को मार्ग में अकल्पित कष्ट मिलना तथा उसकी यात्रा कष्ट समय होना जिस तरह निश्चित है उसी तरह काल रूपी गाड़ी के प्रवासी की स्थिति का होना भी निर्विवाद है। तात्पर्य समय के ज्ञान के सिवाय रेलगाड़ी से प्रवास करने की जिस तरह चेष्टा करना है उसी तरह ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान के सिवाय आयुष्य का काल भ्रमण करने की चेष्टा करना है। इस शास्त्र के आधार पर मनुष्य आगामी प्रत्येक शुभाशुभ समय व यशापयश, हानि लाभ भावी परिस्थिति और परिणाम आदि स्टेशनों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर ऐसे प्रसंगों से सावधान रह सकता है तथा उन्हें प्रतिकार करने के लिये यह पूर्व ही से सावधान हो जाता है। इस शास्त्र से इस तरह का ज्ञान प्राप्त कर सूज्ञ लोग अशुभ प्रसंगों को घटाने या हटाने के प्रयत्न में संलग्न हो जाते हैं किन्तु अज्ञ जन भविष्य मालूम होने पर भी शास्त्र के सत्यता का अनुभव लेने के हेतु वे स्वस्थ्य बैठते हैं, यही समंजस और असमंजस मनुष्य में अन्तर है।

प्राचीन ग्रन्थों में ऐसे कई उदाहरण दिये गये हैं जिससे प्रत्येक मनुष्य को यह स्पष्ट मालूम होगा कि इस शास्त्र का ज्ञान कितना पोषक वतारक है। उन सबों का यहां उल्लेख करना

असंभव है किन्तु उदाहरण रूप में एक दो घटनाओं का यहां उल्लेख करना आवश्यक है।

जैसे १—भारतवर्ष की प्रसिद्ध कन्या सती सावित्री को उसके विवाह होने के पूर्व यह मालूम हुआ कि उसका भावी पति अल्पायुषी है। उसने उसी समय से शिवाराधना शुरु की और अपने सत्कर्मों द्वारा समय आने पर यमराज का सामना कर अपने पति को मृत्यु के पंजे से बचाकर जीवन शक्ति दिलाई।

२—दूसरी सती सीमंतिनी के जन्म समय उसके पिता (राजा) ने ज्योतिषियों को फलित वर्णन करने के लिये कहा। परन्तु यथार्थ भविष्य कथन करने में ज्योतिषियों को कुछ संकोच हुआ। अंत में एक नज्ञ ने यह स्पष्ट रीति से कहा कि "इस लड़की को तरहवें वर्ष में वैधव्य प्राप्त होगा।" कुछ वर्षों के बाद सीमंतिनी को यह हाल मालूम हुआ और संकट निवारणार्थ उसने शिवाराधना शुरु की। परिणाम यह हुआ कि विवाह होने पर ठीक १३ वें वर्ष उसका पति कालिंदी नदी में डूबकर बह गया, परन्तु सीमंतिनी की अराधना कायम ही थी। अंत में वह प्रवाह से बचकर तीन वर्ष के पश्चात् सीमंतिनी के समक्ष पुनः प्रकट हुआ। भारतवर्ष के इन सतियों को यह ज्ञान यदि न होता तो क्या वे इन आपत्तियों का सामना कर उनपर विजय प्राप्त कर सकती ?

भविष्य के ज्ञान से प्रत्येक मनुष्य के मन में बुद्धि, शक्ति व धैर्य उत्पन्न होता है यह स्पष्ट है। कई आधुनिक पण्डितों का यह कहना है कि आकाशस्थ ग्रहों का पृथ्वी के चराचर वस्तु और प्राणियों से कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु जबतक दुनिया में सूर्य प्रकाश कायम है, नभो मण्डल में वायु नित्य वह रही है और चन्द्र सूर्य के ग्रहणों का अनुभव लोगों को मिल रहा है तबतक ऐसे पण्डितों के निर्मूल विधानों का सुज्ञ जनता पर वा कोई परिणाम नहीं पर सकता यह हमारा दृढ़ विश्वास है। इसके सिवाय इनका दूसरा आक्षेप यह भी है कि ज्योतिषज्ञ लोग जनता के अज्ञानता का लाभ उठा उनसे अर्थ प्राप्ति करते है। यह यथार्थ में सत्य है किन्तु इन आक्षेपकारों से क्या हम यह प्रश्न कर सकते हैं कि इस मार्ग का अवलंबन आंग्ल विद्या विभूषित पंडित नहीं करते ? हमारे समझ में दोनों में सिर्फ इतना ही अन्तर है कि आधुनिक विद्या के पण्डितों को राजाश्रय होने के कारण लोगों से द्रव्य उपार्जन करने का उन्होंने लायसंस लिया है किन्तु इस प्राचीन विद्या के आचार्यों ने ऐसा कोई लायसंस प्राप्त नहीं किया है और केवल इसी कारण इस विद्या को निरुपयोगी ठहराना याने सूर्य के तेज को हथेली से रोकने का प्रयत्न करना है।

तथापि ऐसे आक्षेपकारों से हमारा यह निवेदन है कि वे इस शास्त्र से स्वयं परिचित हो ऐसे प्रसंगों से बचने का प्रयत्न करें क्योंकि इस जगत में अज्ञानी से अज्ञानता का फायदा ज्ञानी

लोभ ही उठाया करते हैं। अतः उनके लिये इनसे बचने का यही एक राज मार्ग है।

ज्योतिष शास्त्र यह एक सर्वोपयोगी शास्त्र होने के कारण अनादि काल से यह कट्टर विरोधियों के आघातों को टक्कर देते हुये अपनी प्रगति कर रहा है। इस शास्त्र का जन्म इस देश में होते हुये आज बिसवीं सदी में इंगलैंड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, जापान आदि समस्त देशों में ज्योतिष विषय पर नित्य नई पुस्तकें प्रसिद्ध हो रही है और केवल अमेरिका में आज दिन ५०००० से अधिक ज्योतिषज्ञ हैं यही इसके प्रगति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

क्लेपर जैसे महान् विद्वान पाश्चात्य ज्योतिषज्ञ को सैकड़ों वर्ष पूर्व यह मान्य करना पड़ा कि ग्रहों के योग व प्रतियोग का प्रत्यक्ष अनुभव मनुष्य को नित्य मिलने के कारण इनके शुभाशुभ परिणामों पर निःशंसय विश्वास करना चाहिये। परन्तु इस देश के आधुनिक पण्डितों का इस शास्त्र पर यदि विश्वास न होता तो उनसे हमारा नम्र प्रश्न है किः—

१—अधिकार, यह ऐश्वर्य व वैभव के शिखर पर रहनेवाले महानुभावों को जगत के सर्व साधन उपलब्ध होते हुये भी उन्हें शारीरिक तथा मानसिक संकटों का सामना करने का दुर्धर प्रसंग तथा स्त्री पुत्रादि के वियोग वश शोक सागर में एकाएक डूबने का उनपर जो दुर्भाग्य प्राप्त होता है इसका क्या कारण है?

२—संपन्न स्थिति में जन्म लेनेवाले सज्जनों के परिस्थिति में आकस्मिक परिवर्तन होने का कारण अपरिमित कष्ट से आयुष्य क्रमण करने का उन्हें जो दुर्भाग्य प्राप्त होता है, व इसके विपरीत विपन्न स्थिति में जन्म लेनेवाले सज्जनों को अकल्पित सुख ऐश्वर्य प्राप्त होकर अत्यन्त सुख से आयुष्य क्रमण करने का उन्हें जो सौभाग्य प्राप्त होता है, इसका क्या कारण है ?

ज्योतिष शास्त्र यदि ऐसे अनेक विकट प्रश्नों का तथा अनेक शुभाशुभ घटनाओं का अत्यन्त समाधान पूर्वक उत्तर देने के लिये समर्थ है तो आधुनिक विद्वज्जन इस विद्या के प्रति अपना अविश्वास किस न्याय से प्रकट करने का साहस कर सकते हैं। यह हमारे ध्यान में नहीं आता। अस्तु ! हमारा यह विश्वास है कि ज्योतिष के ज्ञान के बिना आयुष्यक्रमण करना याने घोर अंधकार में दीपक के सिवाय मार्ग क्रमण करना है।

आधुनिक सुशिक्षित समाज यदि इसी प्रकार से अपना आयुष्यक्रमण करना चाहते हो तो हमारा कोई आग्रह नहीं। क्योंकि हम यह जानते हैं कि इस जगत मे मनुष्य प्राणी ईश्वर व पशु इन दोनों के बीच खड़ा है अर्थात् वह इन दोनों बातों के बीच का एक सांचा है। चाहे तो वह महान से महान होने का प्रयत्न कर सकता है अन्यथा वह पशु से पशु भी हो सकता है और उसके विचार व कर्मों पर से दुनियां को यह मालूम करना कठिन नहीं।

आकाशस्थ ग्रहों की तीन अवस्था हैं

अर्थात् उच्च, मध्यम और नीच, और इन ग्रहों के अवस्थानुसार प्रत्येक मनुष्य सत्, रज और तम इन तीनों गुणों से युक्त हो वह पृथ्वी पर जन्म पाकर तज्ञ, सूज्ञ और अज्ञ कहलाता है। इस जगत में प्रत्येक मनुष्य इन ग्रहों के प्रभावानुसार जन्म से मरण तक काल रूपी गाड़ी के पहिले, दूसरे और तीसरे दर्जे मे बैठकर अपना प्रवास करता है।

और इसी क्रम से उसे सुख या दुःख का मिलना निश्चित है इन सब बातों का विचार करते हुये यदि कोई मनुष्य तीसरे दर्जे से प्रवास करते हुये इस शास्त्र के बल पहिले दर्जे के सुख की आशा करे तो उसे अवश्य निराश होना पड़ेगा। परन्तु इस शास्त्र के द्वारा वह यह जान सकता है कि कब से कब तक वह किस दर्जे में प्रवास करने योग्य है और उसी स्थिति में रहकर वह अपनी जीवन-यात्रा किस तरह सुखमय बना सकता है। यह भविष्य तथा आगामी सूचना किसी भी दृष्टि से मनुष्य को हितावह और लाभदायक है इसमें सन्देह नहीं।

इस देश के प्राचीन तथा अर्वाचीन धुरंधर विद्वान ग्रंथकारों ने इस शास्त्र के संस्कृत श्लोकों का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर सटीक हिन्दी ग्रंथों द्वारा इस शास्त्र के प्रति देश के विद्वानों की भावना तथा श्रद्धा आजतक जीवित रक्खी।

अतएव वे विद्वान रत्न और ज्योतिषज्ञ धन्यवाद के पात्र हैं अन्यथा इस देश से संस्कृत भाषा लोप होते ही यह परोपकारी व त्रिकालदर्शी विद्या भी तद्वासियों को सदैव के लिये अपरिचित हो जाती।

वर्तमान युग में मानवी जीवन का कलह प्रतिदिन भयंकर स्वरूप धारण कर रहा है और मध्यः स्थिति के लोगों की स्थिति अत्यंत शोचनीय व कष्टमय होती जा रही है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति को इस ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान से विशेष लाभ होना निश्चित है और इसी हेतु से जयपुर ज्योतिष कार्यालय नाम का खोलने का हम साहस किया है। हमारे इस प्रयत्न से यदि जनता को लाभ हुआ तो जनता जनार्दन की सेवा करने का हमें हर्ष व संतोष होगा। इसमें संदेह नहीं।

इस जगत में ईश्वर सर्वज्ञ हैं और मनुष्य अल्पज्ञ है।

ऐसी स्थिति में इस क्लिष्ट विषय पर कोई खास नई बातें लिखना असंभव है। इस सम्बन्ध से ऋगवेद संहिता में कहा है कि—

" धातायथा पूर्वम् कल्पयत् "

अर्थात् साक्षात् विधाता ने जैसी सृष्टि पूर्व में थी वैसी ही फिर से निर्माण की। तो उस विधाता निर्मित मानवी प्राणी में से हमारे समान एक अत्यल्प मति के मनुष्य के लिये ज्योतिष शास्त्र जैसे समुद्र की तरह अगाध, गहरा, अपार, व त्रिकालदर्शी शास्त्र के अनेक अंगों पर पूर्ण प्रकाश डालना

तथा उसके अनमोल उपयोगिता से जनता को परिचित करा देना केवल अशक्य है। तथापि हमने यह जयपुर ज्योतिष कार्यालय जनता की दुविधाओं को दूर करने के लिये स्थापित किया है। परन्तु हमारे इस प्रयत्न में हमें कहां तक यश मिला अथवा नहीं, इसका निर्णय करना विद्वानों व जनता पर सर्वस्व निर्भर है।

" व्यासो च्छिष्टं जगत् सर्वम् "

इन कहावतों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस जगत् में नया कुछ नहीं है। अर्थात् सब कुछ पुराना ही है। तथापि यहां यह लिखना आवश्यक है कि जिस परमेश्वर ने यह अल्प लोकसेवा करने की हमें बुद्धि प्रदान कर यह कार्य पूरा करने के लिये शक्ति और यश दिया उस सृष्टिकर्त्ता सर्वव्यापी विश्वेश्वर को अनन्य भाव से शरण जाकर यह कार्यालयहम खोलते हैं।

जगत् के इतिहास से सोधकों ने एक स्वर में यह घोषित किया है कि भारतीय आर्यों का वेद ग्रंथ जगत् के सर्व ग्रंथों में अत्यन्त प्राचीन, सर्वोत्कृष्ट, सर्वमान्य और आद्य ग्रंथ हैं। इस ग्रंथ में जगत् के सब शास्त्रों अर्थात् ज्योतिष-शास्त्र, गणित-शास्त्र, धर्म-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र, संगीत-शास्त्र इत्यादि का संपूर्ण विवेचन संस्कृत भाषा में बीज रूप में किया है। अतः जगत के सब शास्त्रों की

उत्पत्ति का केन्द्र स्थान वेद ग्रंथ है। यह स्पष्ट रीति से सिद्ध हो चुका है। वेद इस शब्द की उत्पत्तिविद् इस धातु से हुई है जिसका अर्थ "जानना" या ज्ञान है। इस ग्रंथ पर से जीवात्मा के ज्ञान के साथ ही परमात्मा का भी ज्ञान हो सकता है। अतः इसे वेद चक्षु भी कहते हैं।

इस अप्रतिम व परम पवित्र ग्रंथ में प्रत्येक शास्त्रों का वर्णन बीजरूप में होने के कारण भृगु, लोमस आदि महर्षियों ने संस्कृत भाषा में भृगु-संहिता, लोमस-संहिता तथा सूर्यारुण नाम के स्वतंत्र ज्योतिष ग्रंथ अनादि काल पूर्व निर्माण किए।

जिसमें प्रायः प्रत्येक घड़ी, पल, नक्षत्र, दिपर जन्म लेने वाले मानवी प्राणी के कुण्डलियों का फलित संपूर्ण रीति से वर्णन किया है ऐसा कहते हैं। इन महान् तपस्वी महर्पियों को धन्यवाद है कि जिन्होंने अपना आत्मबल व तपोबल, जगत् कल्याण के लिये समर्थन कर इन आद्य ग्रंथों द्वारा मानवी प्राणी को त्रिकाल ज्ञान की दिव्य दृष्टि दी, अन्यथा भविष्य के ज्ञान के बिना मानवी जीवन की प्रगति असंभव हो गई होती। ज्योतिष शास्त्र यह वेद का अंग होने के कारण इसे वेदांग ज्योतिष भी कहते हैं।

भृगु महर्षि आदि ऐसे त्रिकालज्ञ महर्पियों ने अपने सामर्थ्य व योगबल के आधार पर आकाशस्थ ग्रहों के मानवी प्राणी पर होनेवाले शुभाशुभ परिणामों का चिकित्सक बुद्धि से अनुभव के पश्चात् जो सिद्धान्त निर्माण किया उसे फलित

शास्त्र कहते हैं। इसके पश्चात् वशिष्ठ, पराशर, व्यास, गार्ग, मरीचि; अत्रि, सूर्य, पितामह, भारद्वाज, जैमिनी, शुक्रादि जैसे महान् तपस्वी महर्षियों ने अनेक ग्रंथों द्वारा तथा रावण समान महान् तपस्वी, राक्षस राजा ने भी रावण संहिता द्वारा इस शास्त्र को अधिक उज्वलित किया। इसलिये वे महर्षि भी कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं, अन्यथा वह दुःखमय भवसागर मानवी प्राणी के लिये सुख से पार करना असमव हो गया होता। इस शास्त्र के गणित व फलित शास्त्र ये दो मुख्य भाग हैं और सिद्धान्त, संहिता और जातक ये तीन विभाग हैं।

गणित-शास्त्र के अन्तर्गत सिद्धान्त और संहिता विभाग और फलित-शास्त्र के अन्तर्गत जातक विभाग का अन्तर्भाव किया है। हजारों वर्ष पूर्व इन्हीं महर्षियों ने गणित शास्त्र के आधार पर ग्रहों के गुण, धर्म, रूप, रंग, स्वभावादि का समस्त चराचर वस्तु और प्राणियों पर पड़नेवाले शुभाशुभ परिणामों का विस्तारपूर्वक वर्णन फलित शास्त्र में किया है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि इन महर्षियों को शास्त्र का सम्पूर्ण ज्ञान था अन्यथा इन्हें अनादि काल पूर्व यंत्रों के बिना ग्रहों के बलाबल व फल के विषय इस शास्त्र के फलित भाग पर स्वतंत्र ग्रंथ लिखना असंभव हुआ होता। इन महर्षियों की प्रचंड शक्ति तथा त्रिकाल दृष्टि और उनके सर्वज्ञ होने का पूर्ण परिचय जगत् के विद्वज्जनों को वेदांग ज्योतिष तथा सूर्य सिद्धान्त आदि भारतीय शास्त्रों में वर्णित किये हुये फलित

तथा भविष्य कथन पर से मिल चुका है। इसके अतिरिक्त जिस आर्यावर्त के अलौकिक विद्वान ज्योतिषाचार्य मय, सत्याचार्य, वराहमिहिर, आर्य भट्ट, केशव, दैवज्ञ, गणेश दैवज्ञ, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति शर्मा, विष्णुदत्त, कल्याण वर्मा, माणिक्य आदि ग्रंथकारों ने अपने अपने ग्रन्थों में ज्योतिष शास्त्र समान जागृत शास्त्र पर जगत के कल्याणार्थ सूक्ष्म विवेचन किया। उसी देश के लोगों का इस सर्वश्रेष्ठ शास्त्रों के प्रति उदासीनता का भाव दीखना अपने अपने पूर्वजों के प्रति अपने अभिमान शून्यत्व का जगत साक्षि देना है। गणित शास्त्र के आधार पर वार्षिक पञ्चांगों में दिये हुये सर्वोदयास्त ग्रहान्तर, राश्यान्तर, ग्रहणादि के शुभाशुभ परिणामों का प्रत्यक्ष अनुभव लोगों को नित्य मिलता है किन्तु इसी शास्त्र के आधार पर निर्मीत किये हुये फलित शास्त्र के सिद्धान्तों पर यदि लोगों का विश्वास अज्ञानता के कारण न होता हो तो इसका दोष शास्त्र पर नहीं परन्तु लोगों पर है। ऐसा दुःख से कहना पड़ता है। तथापि वर्त्तमान युग में—पाश्चात्य देश के संशोधकों ने (आकाशस्थ ग्रहों की स्थिति व गति का ज्ञान) गणित शास्त्र के आधार पर अनेक यंत्रों द्वारा पुनः जगत को जो दिया है इससे भारतवासियों को अवश्य लाभ होगा इसमें सन्देह नहीं। ज्योतिष शास्त्र यह अत्यंत प्राचीन शास्त्र है और इसके इतिहास से आधुनिक विश्व विद्यालय के पंडित यदि परिचित हो जायँ तो उनका स्वाभिमान अवश्य जागृत होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

ज्योतिष शास्त्र का प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास

पृथ्वी के प्राचीन राष्ट्रों में से जिन्हें ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान था ऐसे केवल दो राष्ट्र हैं। एक भारतीय आर्य और दूसरे ग्रीक लोग।

परन्तु क्रमशः इसका ज्ञान एशिया खंड के भारतीय आर्य, पारसीक, खाल्दिया प्रान्त के लोग, चीनी लोग तथा पश्चिम के ग्रीक व इजिप्ट के लोगों को हुआ और कुछ काल के बाद वहाँ के लोग इस शास्त्र में कितने निपुण हुये यह नीचे लिखे हुये ऐतिहासिक उदाहरणों से सहज सिद्ध होगा।

१—इजिप्ट तथा बाबिलोनिया के प्राचीन देवालयों के दिवालों पर ५२२६ वर्ष पूर्व लिखे हुये बारह राशि के चित्रलेख पिछले १०० वर्ष के अन्दर वहाँ के लोगों को मिले।

२—खाल्दियन लोगों को ४७०० वर्ष पूर्व राशि, ग्रह, नक्षत्रादि का ज्ञान था।

३—चीनियों को ४४५५ वर्ष पूर्व सूर्य ग्रहणादि का पूर्ण ज्ञान था।

४—पारसीन लोगों को २५०० वर्ष चन्द्र और सौर मास तथा वर्ष का ज्ञान था।

ईस्वी सन् के कई वर्ष बाद इस देश में केशव दैवज्ञ व गणेश दैवज्ञ ये दो पिता पुत्र जैसे महान विद्वान ज्योतिषज्ञों

का जन्म हुआ। इसके पूर्व इस देश में इस शास्त्र का वट-वृक्ष इतना पुराना व ऊँचा हो गया था कि उसकी घनी छाया में अनेक जाति के लोग आश्रय लिया करते थे। वर्त्तमान समय पाश्चात्य लोगों ने इस शास्त्र को पूर्णावस्था में लाने के लिये जो भरसक प्रयत्न किया है यह उसी प्राचीन अति भव्य वट वृक्ष की एक डाल है जो जमीन से मिलकर पुनः एक स्वतन्त्र वट वृक्ष के रूप में दिखाई देती है और आधुनिक सुशिक्षित लोग इसे पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्र कहते हैं। जिसका इतिहास संक्षिप्त में नीचे लिखे अनुसार है।

ईस्वी सन् के पूर्व ग्रीक देशों में पिथ्यागोरास नाम के ज्योतिषी का जन्म हुआ व इसके पश्चात् हियार्कस नामक ज्योतिषी का जन्म हुआ। किन्तु ग्रीक ज्योतिष पद्धति के उत्पादकत्व का बहुमान वहाँ के ज्योतिषी हियार्कस को देते हैं। इसने सूर्य चन्द्र के गति व स्थिति नियम पर एक ग्रंथ निर्माण किया। ई० सं० १५० में टालमी नामक राजा ने अलेकजेन्ड्रिया में वेधशाला स्थापन की और इसने ग्रहों के परिक्रमा काल अपने गति, ग्रहण आदि पर सिंटाक्स नाम का ग्रंथ लिखा जो आल्माजस्ट के नाम से प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ अरब और पश्चात्य लोगोंमें १४०० वर्ष तक ईश्वर प्रणित ग्रंथ माना जाता था।

टालमी के पश्चात् ई० सं० ७०० के लगभग मुसलमानों ने अलेकजेन्ड्रिया के प्रख्यात वाचनालय को जलाकर विद्यापीठ की स्थापना इस शहर के बदले बगदाद में की। ई० सं०

*८३३ में खलीफा के दरबार में एक हिन्दू ज्योतिषी था। ई० सं० ८०० में मुसलमानों ने हिन्दुओं के ज्योतिष-शास्त्र, अङ्क-गणित, बीज-गणित ग्रंथों का अरबी भाषा में भाषान्तर किया। इसके पश्चात् ई० स० ८२७ में टालमी के आलमाजेष्ट ग्रंथ का अरबी में भाषान्तर किया। अन्त में मुसलमान लोग इस शास्त्र में इतने निपुण हुये कि उन्होंने वेध यंत्र निर्माण कर सूक्ष्म-गणित द्वारा इस शास्त्र का अधिक प्रचार किया। तैमुरलंग का नाती उलुगवेग (संस्कृति नामक गाना) ने समरकन्द में एक उत्कृष्ट वेधशाला स्थापित की व टालमी के अपूर्ण नक्षत्र स्थिति पत्रक को ई० सं० १४३७ में अपने गणित द्वारा पूर्ण स्वरूप दे एक नवीन तारा स्थिति पत्रक ग्रंथ निर्माण किया।

ई० सं० ९०० के लगभग फ्रांस वगैरह देश के लोगों ने स्पेन के मुसलमानों से ज्योतिष विद्या का अध्ययन किया और विदेशियों ने ई० सं० १३०० में आलमाजेष्ट के अरबी भाषान्तर ग्रंथ का अनुवाद लाटिन भाषा में किया। इस समय कास्टिल का राजा आलफाजो ने ज्योतिष शास्त्र पर एक नवीन ग्रंथ निर्माण किया।

विश्व रचना पद्धति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिये पश्चात्य ज्योतिषी पिथ्यागोरास, टालमी व न्यूटन ने और इस देश के प्रसिद्ध ज्योतिषी आर्य भट्ट ने अघोर प्रयत्न कये परन्तु उन्हें पूर्ण यश न मिला।

अन्त में एशिया के कोपर्निकस नाम के ज्योतिषी को ई० सं० १५०७ में विश्व रचना पद्धति के सच्चे स्वरूप की कल्पना हुई।

दीर्घकाल के शोध वेद व गणित से सत्यता का पूर्ण अनुभव मिलने पर उसने ई० सं० १५४३ में एक ग्रंथ को प्रकाशित किया जिसकी छपी हुई एक प्रति अत्यंत कष्ट से उसके मरने [illegible] पूर्व देखने को मिली और उसका प्राणोत्क्रमण हुआ। परन्तु मरते समय उसने विश्व रचना पद्धति का ज्ञान जगत् को दिया इसका उसे कितना आनन्द हुआ होगा इसकी कल्पना यथार्थ में वही कर सकता है। ई० सं० १५७६ में डेन्मार्क के राजा ने टायको ब्रोह् ज्योतिष के इच्छानुसार वहाँ एक वेधशाला स्थापित की।

दूर्बीन यन्त्र का प्रथम उपयोग करने का बहुमान हालैंड देश के ज्योतिषी गलिलीयो को मिली। इस दूर्बीन की सहायता से २६ लाख मील दूर को वस्तु ४० मील दूर अन्तर पर दिखने लगी।

ई० सं० १६१९ में कलेपर ने प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा किस मार्ग से कितनी गति व अन्तर से करते हैं इसपर एक ग्रंथ निर्माण किया जिससे दूर्बीन के द्वारा वेध की सूक्ष्म कल्पना लोगों को होने लगी।

ई० सं० १६८७ में अलौकिक विद्वान जैसे न्यूटन ने प्रिंसिपिया नाम का ग्रंथ प्रसिद्ध किया जिसमें जड़ और द्रव्य

पदार्थ के प्रत्येक प्रमाण में आकर्षण शक्ति है और वे परस्पर को आकर्षित करते हैं, यह सिद्ध किया। इसी नियम से विश्व बद्ध है जिसके कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य की सदैव परिक्रमा किया करते हैं। इसके पश्चात् ई० सं० १८३० में प्रकाश लेखन कला यन्त्र अर्थात् सूर्य चन्द्रादि का चित्र उतारने का दूर्बीन निर्माण हुआ व ई० स० १८६० में वर्ण लेखक दुर्बीन यंत्र निर्मित हुआ जिससे ग्रहों के रूप रंग आदि का चित्र लिया जाता है।

हर्शल, नेपच्यून ग्रहों के सोध का इतिहास

इंगलैंड के राजा तीसरे जार्ज के राज्य में विलियम हर्शल नाम का एक प्रख्यात ज्योतिषी, दूर्बीन निर्माणकर्त्ता तथा संशोधक था—और इसे राजा साहब का पूर्ण आश्रय था। अनेकत्व वर्ष से आकाश के भिन्न २ भाग में कितने तारे हैं इस का सोध करते हुये हर्शल को ता० १३-३-१७८१ में मिथुन राशि में एक अत्यन्त बड़ा तारा दिखाई पड़ा। परन्तु वह स्थिर न होने के कारण उसने उसकी गति निकाल कर यह सिद्ध किया कि यह एक ग्रह है और इसीलिये इस ग्रह का नाम हर्शल रखा गया है।

अन्य ग्रहों के पाश्चात्य नाम ग्रीक व रोमन देवताओं के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह ग्रह (देवता) जूपिटर याने सेटर्न (गुरु व शनि) से भी अत्यन्त दूर होने के कारण इसका

दूसरा नाम यूरेनस रक्खा गया जो कि सब देवताओं में श्रेष्ठ देवता माना जाता है।

ई० सं० १८२० में फ्रांस देश के प्रख्यात् ज्योतिषी ने गुरु, शनि, हर्शल इन तीन ग्रहों की गति स्थिति जानने का एक कोष्टक तैयार करना प्रारम्भ किया परन्तु यूरेनस की गति स्थिति का मेल वेध से न मिलने अर्थात् १८३० में २० विकला का अन्तर, १८४० में ९० विकला का अन्तर व १८४७ में २ विकला का अन्तर गणित में लाने के कारण उसे यह शंका हुई कि इस ग्रह पर अन्य किसी ग्रह के आकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ता है। अतएव ज्योतिषियों की जिज्ञासा बढ़ती गयी। ई० सं० १८४५ अक्टुबर में इंगलैंड के तरुण गणितज्ञ जान आंडम ने ग्रिनीच के मुख्याधिकारी प्रोफेसर एरी को इत्तला की कि यूरेनस का उपाधि करने वाला एक ग्रह सूर्य के किसी विशेष अन्तर पर है। इस पर से फ्रांस के ज्योतिषी लहुलोयर ने भी जून १८४६ में इस ग्रह का ग्रहमान प्रसिद्ध किया और उसने बर्लिन वेधशाला के अधिकारी को इस ग्रह का वेध लेने के लिये लिखा।

अन्त में बर्लिन के ज्योतिषी ने यह ग्रह ता० २३-९-१८४६ को देखा जिसका नाम नेपच्यून रखा गया। इस तरह इस ग्रह का शोध जान आंडम लहुलियर और बर्लिन वेधशाला के अधिकारी ने किया। अनेक वर्षों के अविश्राम परिश्रम से पाश्चात्य ज्योतिषियों ने इन दोनों ग्रहों का शोध किया व इन ग्रहों के गति व स्थिति का ज्ञान गणित द्वारा किस तरह

प्राप्त हो सकता है और वर्त्तमान युग में गणित शास्त्र पूर्णावस्था के शिखर पर पहुँचा है यह स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिखाया है। ऐसा मानना होगा।

हजारों वर्ष से आजतक एशिया पर, यूरोप व अमेरिका खंड के लोगों ने इस क्रम से सूर्य, ग्रह व पृथ्वी की भ्रमण गति व मार्ग, आकार व क्षेत्र, फल, रूप व रंग, परस्पर अंतर व आकर्षण शक्ति आदि का हजारों यंत्रों द्वारा अपूर्व व अचूक शोध किया और इन खंडों के अनेक तत्ववेत्ता, संशोधक व ज्योतिषज्ञ पिथ्यागोरास, हिपार्कस, टालमी (ग्रीक) कोपर्निकस (एशिया), टायको ब्रोह, क्लेपर (डेनमार्क), गैलिलीयो (हालैंड), लार्ड रास (आयरलैंड), फोलनर न्यूकोम (अमेरिका), न्यूटन हर्शल, जान ऑडम, प्राक्टर, लाकलियर (इंगलैंड), बॉवर्ड, लापलास, लालंडि, लहलीयर- (फ्रांस), फडकोल, पीअर्स रफीले कैरो, एलेनलियो (यूरोप), आलफासो (कास्टिल), हेरद्देस (जर्मनी), उलुगबेग (समरकन्द) आदि धुरंधर विद्वानो ने इस विषय पर अपनी अपनी मातृभाषाओं में अनेक ग्रंथ लिखकर अपने देश निवासियों को इस विद्या में इतना निपुण बनाया कि आज वे लोग इस शास्त्र का सच्चा रहस्य और मर्म जानने का दावा करने लगे।

इस अलौकिक व धुरंध विद्वानों ने अपना सारा आयुष्य धन व बुद्धि खर्च कर जगत को इस शास्त्र की सत्यता पुनः सिद्ध करने के लिये जो कष्ट उठाया वह अत्यंत स्तुत्य है और

के विद्वान् रत्न, तत्वज्ञ, संशोधक और ज्योतिषज्ञ भी धन्यवाद के पात्र हैं। शास्त्र—

पश्चात्य लोगों ने इस त्रिकालदर्शी को इस तरह अपनाया और अनेक ज्योतिषियों ने अपने भविष्य वाणी से यूरप देश के महान् श्रेष्ठ राजे व प्रेसिडेन्ट जैसे सम्राट एडवर्ड, सर आस्टिन चेम्बरलेन, लार्ड किचनर, किंग हम्बर्ट इटली, अप्रुस एडवर्ड, (आज ड्यूक आफ विंडसर), हिटलर, गोरिंग, रीबेन-ट्राप, मिकेडो आदि अनेकों को मुग्ध कर इस शास्त्र का पूर्ण परिचय दिया। यह होते हुये भी इस देश के अधिकांश सुशिक्षित सज्जन आज भी निद्रित अवस्था में दिखाई देते हैं। यह अत्यन्त खेद से कहना पड़ता है। तीन हजार वर्ष के पूर्व हिंदू लोग ज्योतिष शास्त्र में ही नहीं, किन्तु वैदिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, व्याकरण-शास्त्र, ध्वनि-शास्त्र, विमान-शास्त्र, धनुर्विद्या-शास्त्र, गायन-शास्त्र, नाट्यकला-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, वेदांत-शास्त्र, आग्नेय-शास्त्र तथा गणित-शास्त्र आदि में इतने निपुण थे कि उनके लिखे हुये प्राचीन ग्रंथ आज भी सर्वमान्य ग्रंथ समझे जाते हैं और इसे प्राचीन यवन लोगों ने भी मान्य किया है। तात्पर्य हमारे पूर्वज प्रत्येक शास्त्रों में निपुण थे ऐसा हम अभिमानपूर्वक कह सकते हैं। परन्तु काल की महिमा और लीला इतनी विचित्र है कि सैकड़ों नहीं हजारों वर्ष पूर्व जो जगह या स्थान निर्जन व श्मशानवत् दिखाई देते थे वहां आज बड़े-बड़े भव्य व सुन्दर इमारतों का दृश्य दिखाई दे

रहा है और जिस जगह या स्थान पर बड़े बड़े राजमहल थे वे गिरकर अथवा गिराकर उन स्थानों पर कालान्तर से आज मैदान, रास्ते या निर्जन वन दिखाई दे रहे हैं। यह उसी समय की विचित्र लीला है। अर्थात् जो हिन्दू राष्ट्र हजारों वर्ष पूर्व जगत् के ज्ञान, कला, सभ्यता का मूल स्थान था वही राष्ट्र आजकल के विचित्र फेरे में पड़कर अज्ञानवश हो इस हीन स्थिति को प्राप्त हुआ वह भी उसी समय का महात्म्य है।

प्रतिदिन का यह अनुभव है कि जो सूर्यनारायण भगवान जगत् को प्रकाश दे अपने प्रखर किरणों से मध्यान्ह समय जगत् को थककर छोड़ता है वही सूर्यनारायण देवता समय के प्रभाव से सायंकाल समय जगत् को अस्त हुआ दिखाई पड़ता है। परन्तु क्या वह यथार्थ में अस्त होता है? अर्थात् नहीं। उसी तरह वर्त्तमान समय काल के चक्र में पड़कर हिन्दुस्तान राष्ट्र जगत् के लोगों को अस्त हुआ दिखाई देता है। इस सम्बन्ध से महाभारत में कहा है कि—

"क्षयान्तर निश्चयाः सर्वे पतनान्तः समुछ्रयाः"

अर्थात् संसार में जो वस्तु एक समय शिखर पर पहुँचती है उसका पतन होना यह तत्त्व अबाधित है। परन्तु सृष्टि के नियमानुसार उसका पुनः उत्थान होना यह तत्त्व भी निश्चित है इसका विस्मरण हमारे देश बान्धवों को न होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

ज्योतिष शास्त्र के फलादेशानुसार जिस तरह सूर्य व चन्द्र इन दो ग्रहों के होनेवाले शुभाशुभ परिणामों का प्रत्यक्ष अनुभव मनुष्यमात्र को अनादिकाल से प्रत्येक क्षण मिल रहा है उसी तरह अन्य ग्रहों के शुभाशुभ परिणामों का प्रभाव भी मनुष्य प्राणी पर पड़ता है इसमें सन्देह नहीं। किन्तु साधारण मनुष्य को विश्व रचना पद्धति के ज्ञान के सिवाय उनके परिणामों का ज्ञान होना तथा उनके शंका का समाधान होना अशक्य है इसलिये विश्व रचना पद्धति के सम्बन्ध से संक्षिप्त में यहां लिखना आवश्यक है।

विश्व रचना पद्धति

जगत् के अनेक संशोधकों ने हजारों वर्ष अविश्राम परिश्रम से यह सिद्ध कर दिखाया है कि सूर्य, ग्रह और पृथ्वी इनकी विश्व में एक कुटुम्बमाला है। इस कुटुम्ब का मुख्यकर्त्ता सूर्य है और चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, हर्शल, नेपच्यून, व पृथ्वी ये नवग्रह इस कुटुम्ब के सदस्य हैं। सूर्य में उत्पादक, संरक्षक, नाशक तथा आकर्षण-शक्ति विद्यमान है और उसमें प्रकाश, उष्णता, वर्षा व अनेक रंगादि शक्तियाँ भी केन्द्रित हैं।

वह अपनी सारी शक्तियाँ अपने कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्यों को योग्य प्रमाण से नित्य प्रदान करता है। वैदिक धर्मी लोगों की दृष्टि से सूर्य ईश्वर की विभूति है। क्योंकि जगत् में सूर्य देवता की आराधना करनेवाली अनेक राष्ट्रें हो गयीं और शास्त्रीय शोध जैसा बढ़ता जाता है वैसा इसका प्रभाव प्रतिदिन

अधिक दिखता जाता है। क्योंकि इसके जगत् परमेश्वर के विभूतियत्व का प्रत्यय शोधकों को अधिक दिखने लगा है। सूर्य यह आकर्षण शक्ति का केन्द्र स्थान है और यही आकर्षण शक्ति ग्रह और पृथ्वी में होने के कारण वे परस्पर को आकर्षित कर पृथ्वी सहित प्रत्येक ग्रह सूर्य की नित्य परिक्रमा किया करते हैं।

उनके इस क्रिया व प्रक्रिया का प्रयोग सदैव चालू रहता है। जिसका ज्ञान साधारण मनुष्य को होना असम्भव है। परन्तु न्यूटन जैसे अलौकिक विद्वान् संशोधक ने ई० सं १६८७ में यह सिद्ध कर दिखाया कि पृथ्वी के प्रत्येक प्रमाण में आकर्षण शक्ति है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि पृथ्वी के समान सूर्य की नित्य परिक्रमा करनेवाले अन्य ग्रहों में भी आकर्षण शक्ति विद्यमान है। पृथ्वी के क्षेत्रफल या आकार की अपेक्षा ग्रहों का क्षेत्रफल कई गुना अधिक है और इसलिये ग्रहों में पृथ्वी से अधिक आकर्षण शक्ति विद्यमान होना स्वाभाविक है? पृथ्वी व ग्रहों का परस्पर एक जातियता तथा आकर्षण शक्ति का सम्बन्ध और इनके क्रिया व प्रतिक्रिया का परस्पर प्रभाव यदि मानवी प्राणी पर आजन्म पड़ता हो तो इसपर शंका करना वृथा है। अर्थात् आकाशस्थ ग्रहों में पृथ्वी के चराचर वस्तु और प्राणियों पर अपने शुभाशुभ शक्ति का प्रभाव दिखाने की क्षमता है--और वे इस जगत् में अपने शुभाशुभ स्थिति के अनुसार सुख दुःख की अनन्त लहरें

नित्य निर्माण किया करते हैं जिसके कारण मनुष्य को सुख दुःख भोगने का अनेक प्रसंग आता है। सारांश विद्वान संशोधकों के निश्चित किये हुये सिद्धान्तों पर किसी भी समंजस मनुष्य ने अविश्वास व्यक्त करना याने जगत् को अपने अज्ञानता का परिचय देना है। अस्तु! जगत् के कई विद्वान संशोधकों ने हजारों यन्त्र द्वारा यह भी सिद्ध कर दिखाया है कि आकाशस्थ ग्रहों का रूप, रंग, गुण, धर्म, स्वभाव, लक्षण व प्रभाव एक दूसरे से भिन्न है और प्रत्येक ग्रह अपने-अपने गुण-धर्म के अनुसार माता के गर्भ में शिशुपिंड पर अपना प्रभाव दिखाते हैं—

प्रथम मास मे	शुक्र	पंचम मास मे	चन्द्र
द्वितीय मास मे	मंगल	षष्ठ मास मे	शनि
तृतीय मास में	गुरु	सप्तम मास मे	बुध
चतुर्थ मास में	सूर्य	अष्टम मास मे	लग्नेश

और नवम मास में चन्द्र का प्रभाव पड़ने के पश्चात् पृथ्वी पर बालक का जन्म होता है। जिसके कारण प्राणिमात्र में भिन्न-भिन्न रूप, रंग, गुण, धर्म, स्वभाव व लक्षण दिखाई देते हैं। सारांश जिन ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति का प्रभाव माता के गर्भ में शिशु पिंड पर पड़कर वह वृद्धि गत हो बालक का जन्म होना है और उन्हीं ग्रहों का परिणाम जन्म होने के पश्चात् बालक या मनुष्य पर नहीं पड़ता ऐसा कहने का साहस करना कितना सयुक्तिक है इसका विचार सूज्ञ पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

फलित शास्त्र की श्रेष्ठता

इस शास्त्र की श्रेष्ठता, उपयुक्तता तथा विशेषता के संबंध में कल्याण वर्मा जैसे महान विद्वान ज्योतिषज्ञ ने अपने सारावली ग्रंथ में कहा है कि—

अर्थार्जने सहाय: पुरुषाणां मापदर्णं वे पोत:
यात्रा समये मन्त्री जातक मपहाय नास्त्यपर: ॥

अर्थात्—मनुष्य को द्रव्य सम्पादन करने में सहायता, आपत्ति रूपी समुद्र पार करने को नौका और प्रवास (यात्रा) समय योग्य सलाह देनेवाला मंत्री जातक शास्त्र के सिवाय इस जगत में अन्य कोई शास्त्र नहीं है।

फलित शास्त्र संकट काल का सच्चा मित्र और नेक सलाह देनेवाला मंत्री होने के कारण हमें यहाँ इसके सम्बन्ध में अधिक न लिखते। इस शास्त्र पर कई आधुनिक पण्डितों का जो आक्षेप है उसका प्रथम विचार करना आवश्यक है। उनका मुख्य आक्षेप यह है कि यदि फलित-शास्त्र सत्य मान लिया जाय तो उसका यह अर्थ होता है कि मनुष्य-प्राणी का जन्म होने के पूर्व ही ईश्वर ने उसके आयुष्य का कार्य-क्रम निश्चित कर रखा है अर्थात् वह पूर्ण स्वतन्त्र प्राणी है और यदि मनुष्य परतन्त्र है तो उसे प्रयत्न करने से क्या लाभ होगा ? परन्तु व्यवहार में नित्य यह दिखता है कि मनुष्य अपने उद्योगबल से अपना सब कार्य साध्य कर लेता है। इस से यह सिद्ध होता

है कि मनुष्य स्वतन्त्र है और उसके पीछे ज्योतिष शास्त्र का भूत यह मिथ्या है। क्षण भर के लिये यदि यह भी मान लिया जाय कि मनुष्य स्वतन्त्र है, तो क्या इसका यह अर्थ हो सकता है कि वह सर्वथैव स्वतन्त्र है? हमारे मत में मनुष्य सर्वथैव स्वतन्त्र है ऐसा समझना या कहना केवल भ्रम में डूबकर ईश्वर के सामर्थ्य के प्रति अपनी अज्ञानता प्रगट करना है।

क्योंकि मनुष्य यदि पूर्ण स्वतन्त्र होता तो अनेक विद्वान व वीरों को—

"हानि लाभ और जनम मरण ये सब विधि के हाथ"

"मनसा चिंतितं कार्यं दैव मन्यत्र चिन्तयेत्"

आदि कहने का दुर्धर प्रसंग क्योंकर आता? वास्तविक में मनुष्य यह कर्म और भोग योनि होने के कारण यह कर्म करने के लिये कुछ अंश से स्वतन्त्र है इसमें सन्देह नहीं। किन्तु भोग योनि होने के कारण यह कर्म का फल भोगने के लिये सर्वस्व परतन्त्र है—यह भी निर्विवाद है। मनुष्य को शुभाशुभ कर्मों के फल का ज्ञान ईश्वर ने दिया है अतः वह श्रेष्ठ व स्वतन्त्र कहलाता है—और यही उसकी श्रेष्ठता स्वतन्त्रता का मुख्य कारण है तथापि अनेक प्रसंगों का विचार करने से यह सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य सर्वथैव स्वतन्त्र है जैसे—

१—किसी कुटुम्ब का कर्त्ता पुरुष अपनी सांसारिक जवाबदारियाँ पूर्ण करने के पूर्व ही अपने आश्रितों को शोकसागर में डालकर वह अपनी इहलोक की यात्रा समाप्त कर देता है।

क्या यह उसके स्वतन्त्र होने का लक्षण है।

२—संतती, सम्पत्ति तथा शरीर सुख प्राप्त करने में मनुष्य के भरसक प्रयत्न निष्फल हो जब वह अत्यन्त कष्ट से अपना आयुष्यक्रमण करता है तो क्यों यह उसके स्वतन्त्र होने का द्योतक है।

३—स्वतन्त्र और परतन्त्र दो भिन्न देश के दो व्यक्तियों की आकाशस्थ ग्रहस्थिति एक समान रहते हुए देशकाल परिस्थिति के कारण उन्हें जब भिन्न-भिन्न फल मिलता है तो क्या यह उसके स्वतन्त्र कहलाने का चिन्ह है।

ऊपर लिखे हुए उदाहरणों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि प्रत्येक मनुष्य इस जगत में आकाशस्थ ग्रहस्थिति और सांसारिक परिस्थिति से परतन्त्र हैं। और जब उसके परतन्त्रता का हाल इस जगत में अन्य किसी मार्ग से उसे मालूम होना अशक्य हो जाता है तब वह केवल फलित शास्त्र के आधार पर अपने दुःख सुख, यश अपयश का हाल मालूम करता है। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि ज्योतिष-शास्त्र इस जगत के शास्त्रों में श्रेष्ठ व सत्य है और मनुष्य सर्वज्ञ व स्वतन्त्र नहीं है। संसार में नित्य यह दिखाई देता है कि प्रत्येक मनुष्य इस जगत में स्वास्थ्य, मन, जल, धन, स्त्री व परिस्थिति के बन्धनों से ग्रसित है। यह देखते हुए मनुष्य स्वतन्त्र है ऐसा कहना केवल मिथ्या प्रलाप करना है। परन्तु जो मनुष्य, लोभ मोह, मद मत्सर, के परे हों, पूर्व जन्म कर्मके फलों को सहर्ष भोगता हो,

विषयादि इन्द्रिय जिसके वश हों, जिसे जन्म मरण का रहस्य मालूम हो, जिसने सांसारिक परिस्थितियों पर विजय प्राप्त किया है और जिसका ईश्वर पर पूर्ण भरोसा हो वही मनुष्य यथार्थ में स्वतन्त्र कहला सकता है अन्यथा बाकी के लोग केवल वाचा से स्वतन्त्र परन्तु कृति से परतन्त्र हैं ऐसा कहना पड़ेगा। इस जगत में मनुष्य जब अपने स्वत्ता का जन्म मरण सुख दुःख यशापयश, हानि लाभ आदि जानने के लिये असमर्थ है तो उसे किस तरह स्वतन्त्र कह सकता है?

ईश्वरी योजना व मानवी जन्म से ज्योतिशास्त्र का सम्बन्ध।

मनुष्य को एक जन्म से दूसरी जन्म देते समय ईश्वर की एक अद्भूत योजना दिखाई देती है कि वह उसके पिछले जन्म का दरवाजा इतने शीघ्र गति से बंद करता है कि उसे उसके पिछले जन्म का कुछ भी स्मरण न रह सके। तथापि उसकी यह इच्छा दीखती है कि मनुष्य को उसके पिछले जन्म में किये हुए कर्मों के फल का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के आधार पर जन्म ग्रहस्थिति द्वारा हो सके।

अर्थात् पूर्व जन्म श्रेष्ठ कर्मों का फल वर्त्तमान उच्च ग्रहस्थिति द्वारा और अशुभ कर्मों का फल नीच ग्रहस्थिति द्वारा स्पष्ट व्यक्त होता है। अन्यथा एक व्यक्ति को अत्यन्त सुख व दूसरे को दुःख यह दृश्य हो जगत में न दिखाई देता। इस

जगत में ऐसे कई उदाहरण है कि सम्पन्न सांसारिक परिस्थिति में जन्म लेनेवाले मनुष्यविपन्न आकाशस्थ ग्रह स्थिति के कारण दुःख और विपन्न सांसारिक परिस्थिति में जन्म लेनेवाले मनुष्य सम्पन्न आकाशस्थ ग्रहस्थिति के कारण सुख भोगते हुये दिखाई देते हैं। क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि सांसारिक परिस्थिति के अपेक्षा आकाशस्थ ग्रहस्थिति अत्यन्त शक्तिशाली है और यह ईश्वरीय योजना अत्यन्त विश्वसनीय व सत्य है? मनुष्य का जन्म राजकुल अथवा दरिद्र नारायण कुल में क्यों न हुआ हो किन्तु आकाशस्थ जन्म ग्रहस्थिति के अनुसार उसे सुख या दुःख मिलना निर्विवाद है। इसके अतिरिक्त इन आकाशस्थ ग्रहस्थिति में प्रत्येक समंजस मनुष्य ने यह बोध लेना चाहिये कि:—

यदि जन्म समय आकाशस्थ ग्रहस्थिति विपन्न और सांसारिक परिस्थिति सम्पन्न हो तो उसे यह समझना चाहिये कि उसका पूर्व शुभ कर्म फल समाप्त होने पर आया है इसलिये उसे वर्त्तमान जन्म में अधिक शुभ कर्म व पुण्य करना चाहिये ताकि उसे आगे जन्म में इस से भी उच्च ग्रहस्थिति प्राप्त हो और यदि जन्म समय आकाशस्थ ग्रहस्थिति सम्पन्न हो और सांसारिक परिस्थिति विपन्न हो तो उसे ध्यान में रखना चाहिये कि पूर्व जन्म पाप कर्मों का कारण भोग भोगने के लिये यह सांसारिक विपन्न परिस्थिति उसे प्राप्त हुई और इस जन्म में पुण्य कर्म द्वारा पूर्व शुभ संचित की वृद्धि की जाय तो

अगले जन्म में आकाशस्थ ग्रहस्थिति और सांसारिक परिस्थिति दोनों भी श्रेष्ठ व समान प्राप्त होगी इसमें संदेह नहीं।

अर्थात् पूर्व जन्म संचित कर्मानुसार मनुष्य को इस जन्म में योग्य फल मिलता इसे ही ईश्वरी संकेत या उस सृष्टि कर्त्ता कि एक विचित्र लीला व योजना कहते हैं। इस ईश्वरी योजना का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्राप्त करने के पश्चात् मनुष्य को चाहिये कि वह अपने सत्कर्मों से पूर्व संचित को नीचे से ऊँचा और ऊँचे को अधिक ऊँचाकर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करे। इससे यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि ज्योतिष शास्त्र का जन्म-मानवी प्राणी के उत्थान के लिये हुआ है परन्तु इन विचारों को कार्य रूप में लाना अथवा न लाना यह प्रत्येक मनुष्य के स्वाधीन है क्योंकि वह कुछ अंश से स्वतन्त्र-प्राणी कहलाता है। इस शास्त्र के द्वारा यदि मनुष्य को अपने पूर्व जन्म तथा वर्त्तमान जन्म के शुभाशुभ कर्मों का ज्ञान हो जाय और अशुभ फलों की तीव्रता घटाने या हटाने के लिये यह अपने कार्य में सलंग्न हो जाय तो उसे इस शास्त्र के ज्ञान से सच्चा लाभ हुआ और इस शास्त्र का कार्य भी पूरा हो गया ऐसा समझना चाहिये।

सारांश मनुष्य को यह ध्यान में रखना चाहिये कि इस शास्त्र का उपयोग आकस्मिक धन लाभ मालूम करने के लिये नहीं किन्तु प्रतिकूल समय दुःख का प्रतिकार करने के लिये है। संसार मे सुख के अपेक्षा दुःख अधिक होने के कारण प्रत्येक

मनुष्य को चाहिये कि यह शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर प्रथम दुःखों का प्रतिकार करने का प्रयत्न करे।

सारांश—जातक पद्ध (फलित) शास्त्र का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सुविचारी और उद्योगी बनाने का है न कि अविचारी और आलसी जैसा कि आधुनिक विद्वानों का आक्षेप और भ्रम है।

वर्ष

वर्ष के कई नाम हैं। जैसे—सम्वत् सर वर्ष, शाके वर्ष, ईस्वी, सन और हिजरी सन आदि। परन्तु चालू हिन्दु वर्ष के मुख्य २ नाम हैं (१) विक्रम सम्वत् (२) शालि-वाहन शाके।

सौर और चान्द्र वर्ष

पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा करने के लिये ३६५ दिन १५ घंटे २८ पल का जो समय लगता है उसे एक सौर वर्षीय-सायन दिन कहते है। चन्द्र को पृथ्वी को बारा १२ परिक्रमा करने के लिए ३५४ दिन का जो समय लगता है उसे चान्द्र वर्ष कहते हैं। इन दोनों वर्षों में जो अन्तर आता है उसे मेल न करने के हेतु गणितज्ञों ने प्रत्येक ३२ माह १६ दिन के बाद अधिक मास (मलमास) के नाम से एक मास माना है और इस मास के जन्म का यही मुख्य कारण है।

अयन

हिन्दू वर्ष में उत्तरायण और दक्षिणायण यह दो अयन होते हैं। सूर्य को मकर राशि से मिथुन राशि तक भ्रमण करने के लिये छः महिने का जो समय लगता है उसे उत्तरायण कहते हैं। यह समय बहुधा प्रति वर्ष १३ जनवरी में प्रारम्भ होकर १५ जुलाई तक समाप्त होता है और सूर्य को कर्क राशि से धन राशि तक मार्ग क्रमण करने के लिए छ मास का जो समय लगता है उसे दक्षिणायण कहते हैं। यह समय बहुधा १६ जुलाई से आरम्भ होकर १२ जनवरी तक समाप्त होता है। इस तरह १२ बारह संक्रातियों में मकरादि छः और कर्कादि छः राशियों के क्रमण काल को क्रमशः उत्तरायण और दक्षिणायण कहते हैं।

संक्रांति

प्रत्येक राशि में सूर्य एक मास स्थित रहने के पश्चात् जब दूसरी राशि में प्रवेश करता उसी समय को संक्रांति कहते हैं। जिस राशि में सूर्य स्थित हो उसी राशि को उस नापका सौर मास कहते हैं। जैसे मकर कर्क आदि। सूर्य का बोध अर्क नाम से होता है अतः पञ्चांग के कोष्टक में मेषेऽर्कः वृष में ऽर्कः मिथुनऽर्कः आदि जिस दिन के समक्ष लिखा हो उसी दिन संक्रांति होती है।

ऋतु

हिन्दू वर्ष मे छः ऋतु होती है जैसे—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतु से मास और संक्रांति आदि का ज्ञान नीचे कोष्टक से हो सकता है।

ऋतु,	हिन्दी मास,	संक्रांति
१—वसन्त	चैत्र, वैशाख	मीन, मेषा
२—ग्रीष्म	जेष्ठ, आषाढ़	बृप, मिथुन
३—वर्षा	श्रावण, भाद्रपद	कर्क, सिंह
४—शरद	आश्विन, कार्तिक	कन्या तुला
५—हेमन्त	मार्गशीर्ष, पौष	बृश्चिक धन
६—शिशिर	माघ, फाल्गुन	मकर कुम्भ

हिन्दू मास

हिन्दी मासो का नाम बारह नक्षत्रो के नाम पर से पड़ा है जैसे—

नक्षत्र	हिन्दू मास
चित्रा	चैत्र
विशापा	वैशाख
ज्येष्ठा	ज्येष्ठ
पूर्वाषाढ़	आषाढ़
श्रवण	श्रावण
पूर्वाभाद्रपदा	भाद्रपद

अश्विनी	आश्विन
कृतिका	कार्तिक
मृगशिरा	मार्गशीर्ष
पुष्प	पौष
मघा	माघ
पूर्वा फाल्गुनी	फाल्गुन

पक्ष

प्रत्येक हिन्दु मास में दो पक्ष होते हैं शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के १५ दिन को शुक्ल पक्ष कहते हैं और प्रतिपदा से अमावस्या तक के १५ दिन को कृष्ण पक्ष कहते हैं।

हिन्दू धर्म पद्धति के अनुसार वार का आरम्भ सूर्योदय से माना जाता है किन्तु मुसलमान धर्म पद्धति के अनुसार इसका आरम्भ सूर्यास्त से माना जाता है और अङ्गरेजी पद्धति के अनुसार दिन का आरम्भ मध्य रात्रि १२ बजे बाद से होता है। सूर्य सब ग्रहों में सर्व शक्तिमान ग्रह माना गया है और इसके ग्रहमाला का मुख्य कर्त्ता होने के कारण हिन्दू लोगों का वर्ष, मास, दिन आदि सूर्य से गिना जाता है। अतः हिन्दू धर्मावलम्बी सौर वर्ष सौर मास और सौर दिन का आरम्भ सूर्योदय से ही शास्त्र शुद्ध समझते हैं। किन्तु अन्य धर्मावलम्बी लोग सूर्यास्त तथा मध्याह्न रात्रि से दिन का आरम्भ जो मानते

हैं वह कहाँ तक शास्त्र सिद्ध है इसका विचार स्वयं कर सकते हैं। हिन्दू वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, वार, तिथि, नक्षत्र आदि का सम्बन्ध आकाश के अंगों से तथा सूर्य की गति के अनुसार गणित द्वारा निश्चित किया जाता है अतः सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक के समय को (दिन) वार कहते हैं और यह शास्त्र सिद्ध है इसमें संदेह नहीं। मकर संक्रांति का आरम्भ प्रति वर्ष १२ से १४ जनवरी तक होना और वर्षारम्भ मृग नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश होते ही याने ६-७ जून को होना यह सिद्ध करता है कि हिन्दू गणित-शास्त्र अचूक तथा श्रेष्ठ है और हिन्दुओं का पंचांग शास्त्र, संगत, आधार, युक्त तथा नैसर्गिक है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक को दिनमान और सूर्यास्त से सूर्योदय काल को रात्रिमान कहते हैं।

वार दिन (६०)

वार के क्रम के सम्बन्ध में सूर्य सिद्धान्त में लिखा है कि (मन्दाधः क्रमेण स्युश्च तुर्थी दिवसा द्विपाः) सबसे उच्चस्थ शनि से चौथी कक्षा सूर्य की है इसलिए सर्व प्रथम दिन का नाम रविवार पड़ा। फिर रवि से नीचा चौथी कक्षा चन्द्र की है अतः दूसरा नाम चन्द्रमा पड़ा। इसके बाद चन्द्रमा से ऊपर की चौथी कक्षा मंगल की है इसलिए तृतीयवार का नाम मंगल वार का पड़ा। और इसी तरह अन्यवारों का नाम पड़ा है।

तिथि

चन्द्र को रवि से बारह अंश दूर प्रवास करने के लिए

जो समय लगता है उसे तिथि कहते है। प्रत्येक महीने के शुक्ल पक्ष में १५ और कृष्ण पक्ष में १५ ऐसी ३० तिथियां होती हैं और उनका क्रम से नाम जानना प्रतिपदादि तिथियां हैं।

नक्षत्र

आकाश के बारह भागों को राशि और सत्ताइस विभागों को नक्षत्र कहते हैं। चन्द्रमा को १३ अंश २० कला का मार्ग क्रमण करने के लिए जो समय लगता है उसे नक्षत्र कहते हैं। इस गति से चन्द्रमा ३६० अंश में २७ नक्षत्रों का भ्रमण पूरा करता है। जिस तरह मनुष्य के इस पृथ्वी पर पूर्व (कलकत्ता) से पश्चिम (बम्बई) तक अनेक छोटे बड़े स्टेशन निश्चित अन्तर पर निर्माण का इन दोनों दिशा के प्रमुख शहरों का अन्तर मालूम किया है। उसी तरह सृष्टिकर्त्ता ने आकाश में राशि और नक्षत्र रूपी छोटे बड़े स्टेशन निश्चित अंतर पर तारों के रूप में निर्माण किये हैं और ये सृष्टि के आरम्भ से आज तक उसी स्थान में स्थित हैं अतः इन्हें स्थिर, निश्चल नक्षत्र अर्थात् "नक्षरतितत् नक्षत्र"। ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है। नक्षत्रों के नाम तथा उनका क्रम नीचे लिखे अनुसार है।

(१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृत्तिका (४) रोहिणी (५) मृगशिरा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य (९) आश्लेषा (१०) मघा (११) पूर्वा फा० (१२) उत्तरा फा० (१३) हस्ता (१४) चित्रा (१५) स्वाती (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्ठा (१९) मूला (२०) पूर्वाषाढ़ा (२१) उत्तराषाढ़ा (२२) श्रवण (२३)

धनिष्ठा (२४) शततारका (२५) पूर्वाभाद्रपदा (२६) उत्तराभाद्रपदा (२७) रेवती। इन सत्ताईस नक्षत्रों के स्वामी २७ देवता और द्वादश राशियों की स्वामी ग्रह हैं। जब सूर्य रोहिणी से स्वाती नक्षत्रों में प्रवेश करता है तब वर्षा आरम्भ होती है जो प्रायः ७ जून से शुरू होकर नवम्बर में समाप्त होती है। सूर्य एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में प्रवेश करते समय पंचांग के कोष्ठक में रोहिण्यार्कः मृगार्कः इत्यादि लिखा जाता है। काल का सूक्ष्म अंग होने के कारण नक्षत्र भविष्य फल निर्णय का एक मुख्य अंग माना जाता है। अतः इस अंग के शुभाशुभ आदि का ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना आवश्यक है। इन नक्षत्रों में से ज्येष्ठा, आर्द्रा, शततारका, भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, धनिष्ठा, मघा, और मूला ये ९ नक्षत्र अशुभ हैं और बाकी के १८ नक्षत्र शुभ हैं ऊपर दिये ९ नक्षत्रों में से मूल नक्षत्र अत्यन्त अशुभ है।

मूल नक्षत्र फल

बालक का जन्म इस नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हो तो वह पिता, द्वितीय चरण में माता, और तृतीय चरण में धन के घातक होता है परंतु यदि चतुर्थ चरण में हो तो शुभफलदायी समझा जाता है। बालक के जन्म समय यदि मूल नक्षत्र कृष्णपक्ष तृतीय मंगलवार, कृष्णपक्ष दशमी शनिवार और शुक्लपक्ष तृतीया शुक्रवार हो तो ऐसा बालक कुल का नाश करता है।

मूल नक्षत्र में यदि किसी बालक का जन्म दिन में हुआ हो तो पिता को सायंकाल को हो तो--मामा को रात्रि में--पशुओं को और प्रातःकाल मित्रों के लिये अनिष्ट कारक समझना चाहिये। ज्येष्ठा नक्षत्र की अंत की एक घड़ी और मूल नक्षत्र की दो घड़ी को गडांत कहते हैं। ऐसे समय में यदि बालक का जन्म हुआ हो तो पिता को चाहिये कि उसका मुँह न देखे यदि धोखे से उसकी दृष्टि पड़ गई हो तो उसे चाहिये कि वह दान, धर्म, जप, तप के द्वारा इस कुपरिणाम से बचने का प्रयत्न करे अन्यथा मृत्यु का होना संभव है। किन्तु इन नक्षत्र में जन्म लिया हुआ बालक प्रायः दीर्घायुः पराक्रमी, बलवान शत्रु का नाश करनेवाला तथा विद्या, धन, व ऐश्वर्य से संपन्न रहता है। जन्म नक्षत्र का स्वभाव मनुष्य के स्वभावादि पर इतने जोरों से पड़ता है कि बहुधा लोग "इस मनुष्य का जन्म किस नक्षत्र पर हुआ" यह इसके जन्म नक्षत्र का दोष है आदि कुछ प्रसंगों पर कहा करते हैं इसका मुख्य कारण यही है।

नक्षत्र चरण और राशि

प्रत्येक नक्षत्र के चार विभाग या चरण होते हैं अर्थात २७ नक्षत्रों के १०८ चरण और ९ चरणों की १ राशि। इस तरह द्वादशराशि २७ नक्षत्र तथा १०८ चरण के स्वामी कहलाते हैं। हिन्दुओं के नामों का आद्याक्षर नीचे दिये हुये प्रथम शब्दों से ही आरम्भ होता है। जैसे--

(१)	चू चे चो ला	अश्विनी	मेष
(२)	ली लू ले लो	भरणी	
(३)	आ इ उ ए	कृत्तिका	
(४)	ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष
(५)	वे वो का की	मृग	
(६)	कू घ ङ छ	आर्द्रा	
(७)	के को हा हि	पुनर्वसु	मिथुन
(८)	हू हे हो डा	पुष्य	
(९)	डी डू डे डो	अश्लेषा	कर्क
(१०)	मा मी मू मे	मघा	
(११)	मो टा टी टू	पूर्वा	सिंह
(१२)	टे टा पा पी	उत्तरा	
(१३)	पू पा णा ठा	हस्ता	कन्या
(१४)	पे पो रा री	चित्रा	तुला
(१५)	रू रे रो ता	स्वाती	
(१६)	ती तू ते तो	विशाखा	वृश्चिक
(१७)	ना नी नू ने	अनुराधा	
(१८)	नो या यी यू	ज्येष्ठा	धनु
(१९)	ये यो भा भी	मूला	

(२०)	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढ़	मकर
(२१)	भे जो जा जी	उत्तराषाढ़	
(२२)	खा खु खे खो	श्रवण	
(२३)	गा गी गू गे	धनिष्ठा	कुम्भ
(२४)	गो सा सी सू	शतभिषा	
(२५)	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा	
(२६)	दू थ झ ञ	उत्तरा	मीन
(२७)	दे दो चा ची	रेवती	

इस मृत्युलोक में मनुष्य का आगमन जिस चरण नक्षत्र-राशि और दिन में होता है उसी चरण के आद्य अक्षर के अनुसार इस देश में बालक का जन्म तथा नाम रखने की प्रथा वैदिक काल से चली आ रही है। इस पद्धति का अनुकरण करने से हमारे पूर्वजों का उद्देश्य यह है कि मनुष्य के जन्म या व्यवहारिक नाम पर से बालक के जन्म समय के नक्षत्र, चरण, राशिग्रह दशा आदि का ज्ञान सहज हो तथा भूत, वर्त्तमान और भविष्य में होनेवाली अनेक शुभाशुभ घटनाओं का हाल, इस शास्त्र के ज्ञाता को, बिना कुण्डली देखे हो सके। नक्षत्र, चक्र या अवक हड़ाचक्र वार्षिक पंचांगों में लिखा रहता है और यह ०००० वर्ष पूर्व से इस देश में प्रचार में है।

×× – ××

नक्षत्र और पृथ्वी का परस्पर सम्बन्ध

हम पहले कह चुके हैं कि नक्षत्र तारे हैं और तारों का स्वामी चन्द्र है अतः चन्द्र को नक्षत्र राज, तारानाथ इत्यादि कहते हैं। नक्षत्र और चन्द्र इन दोनों का वस्ती स्थान एक ही है और पृथ्वी के समीप होने के कारण इनका प्रभाव पृथ्वी पर की समस्त वस्तुओं और प्राणियों पर पड़ना स्वाभाविक है। जैसे स्वाती नक्षत्र में सूर्य के रहते यदि वर्षा हुई और उसकी एक बूंद भी सीप के अन्दर प्रविष्ट हुई तो मोती का रूप धारण करती है। चित्रा या हस्ता नक्षत्र के सूर्य की किरणों में मूल्यवान ऊनी वस्त्रों के कृमि कीटाणुओं को नाश करने की शक्ति है। जब नक्षत्रों की उत्पादक संरक्षक और नाशक शक्तियों का परिचय मनुष्य को प्रत्यक्ष रूप से मिल सकता है तो उनका प्रभुत्व पृथ्वी पर नहीं पड़ता ऐसा कहना कहाँ तक उचित है यह विज्ञ पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं। इस महत्व द्योतक नक्षत्रों के स्वरान्तगर्त अक्षरात्मक चरणों के अनुसार बालक का जन्म होते ही नाम रखने की जो प्रथा हमारे महर्षियों ने निर्माण की है वह कितनी उपयोगी, महत्वपूर्ण और भविष्य ज्ञान द्योतक है यह लिखने की आवश्यकता नहीं। किन्तु आजकल इस देश के लोगों पर पाश्चात्य सभ्यता का अधिक प्रभाव पड़ने के कारण स्वेच्छाचारी युवक इस सर्वोपयोगी प्रथा का अनुकरण करना अघोर पाप समझने लगे हैं। हमारी समझ में उनके ऐसा करने

का यही उद्देश्य हो सकता है कि बालक बालिकाओं का विवाह निश्चित करने समय उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े। परन्तु प्राचीन शास्त्रोक्त पद्धति के आधार पर विवाह निश्चित करने के क्षणिक कष्टों को टालने के हेतु उनका ऐसा करना भावी पीढ़ी का आयुष्य आजीवन दुःखमय बनाना तथा इस शास्त्रोक्त प्रथा को तृणवत् समझना अर्थात् देश के नवयुवकों को आर्य्य धर्म संस्कृति से विमुखकर धर्म का नाश करना है। इसके साथ ही ज्योतिष शास्त्र जैसी त्रिकालदर्शी विद्या के प्रति राष्ट्र के भावी रक्षकों को मूर्ख बनाने की चेष्टा करना है।

जन्म नक्षत्र और ग्रहदशा-वर्षकाल

जन्म समय के नक्षत्र पर से ग्रह दशा का ज्ञान नीचे दिये हुए कोष्टक से हो सकता है। जैसे —

	नक्षत्र	ग्रह दशा	वर्षकाल
१	कृतिका, उत्तरा, उत्तराषाढ़,	सूर्य	६ वर्ष
२	रोहिणी, हस्ता, श्रवण,	चन्द्र	१० वर्ष
३	मृग, चित्रा, धनिष्ठा,	मंगल	७ वर्ष
४	आर्द्रा, स्वाती, शततारका,	राहु	१८ वर्ष
५	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भा०	गुरु	१६ वर्ष
६	पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भा०	शनि	१९ वर्ष
७	अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती,	बुध	१७ वर्ष
८	मघा, मूला, अश्विनी,	केतु	७ वर्ष
९	पूर्वा, पूर्वाषाढ़ा, भरणी,	शुक्र	२० वर्ष

जन्मग्रह दशा के काल से आज दिन किसी ग्रह की दशा है और जन्म कुण्डली में ग्रहों के शुभाशुभ स्थिति के अनुसार उस ग्रह के शुभाशुभ फल का ज्ञान मनुष्य को सहज हो सकता है। यदि जन्म या व्यवहारिक नाम शास्त्रोक्त रीति से रक्खा गया हो तो दशा का सूक्ष्म ज्ञान नक्षत्र के चरणों पर से होना कठिन नहीं किन्तु बिना गणित किये निश्चित समय का ज्ञान होना कठिन है जिसका सम्पूर्ण वर्णन हमने महादशा भाग में किया है।

योग

योगकाल का मुख्य अंश है। ये २७ हैं जैसे—

१ विष्कुम्भ २ प्रीति ३ आयुष्यमान ४ सौभाग्य ५ शोभन ६ अतिगंड ७ सुकर्मा ८ धृति ९ शूल १० गंड ११ वृद्धि १२ ध्रुव १३ व्याघात १४ हर्षण १५ वज्र १६ सिद्धि १७ व्यतिपात १८ वरीयान् १९ परिघ २० शिव २१ सिद्धि २२ साध्य २३ शुभ २४ शुक्ल २५ ब्रह्मा २६ ऐन्द्र २७ वैधृति।

इन योगों में से व्यतिपात तथा वैधृति योग अशुभ और सर्वथ्य त्याज्य हैं। शेष २५ योग आरंभ की कुछ घटी को छोड़कर दोष से मुक्त है। इन ग्रहों का फल इनके नाम से स्पष्ट मालूम हो सकता है और इनका प्रभाव कार्य आरम्भ करते समय तथा जन्म समय के अनुसार मनुष्य पर अवश्य पड़ता है।

करण

तिथि के अर्ध भाग को करण कहते हैं। करण ११ हैं।

१ बव २ बालव ३ कौलव ४ तैतिल ५ गरज ६ वाणिज ७ विष्टी ८ शकुनी ९ चतुष्पाद १० नाग ११ किंस्तुघ्न। इनमें से विष्टी अशुभ है बाकी के १० शुभ हैं।

राशि विचार

भूमंडल के ३६० अंश हैं। उसके बारह भाग करने से ३० अंश के प्रत्येक समूह को द्वादश राशि कहते हैं। चन्द्र कोश नक्षत्र भ्रमण करने के लिए जो समय लगता है उसे भी राशि कहते हैं इसका संपूर्ण वर्णन राशि चक्र में किया है। परन्तु कुण्डलियों में राशि का बोध केवल अंकों से हुआ करता है। १ मेष २ वृष ३ मिथुन आदि। जन्म के समय चन्द्र जिस राशि में स्थित हो वही उस मनुष्य की जन्म राशि कहलाती है। चन्द्र प्रत्येक राशि में कितने दिन घटी और पल रहता है यह वार्षिक पंचांग के आखरी कोष्टक मे प्रत्येक तिथि के सामने लिखा रहता है।

राशि चक्र

द्वादश राशि के गुण, धर्म, स्वभाव, रूप रंगादि पर से उनके शुभाशुभ फल का सम्पूर्ण ज्ञान पाठकों को सहज में हो सके इस हेतु राशि चक्र में उनका पूर्ण विवेचन किया है परन्तु

इस चक्र से फलित वर्त्तते समय राशि का विचार किस तरह करना चाहिये यह उदाहरणार्थ नीचे लिखा है। मान लो किसी मनुष्य की मेष राशि है और यह राशि लग्न से सप्तम स्थान में है तो फलितवर्त्ते समय किन-किन बातों पर विचार करना चाहिये।

जन्म कुण्डली
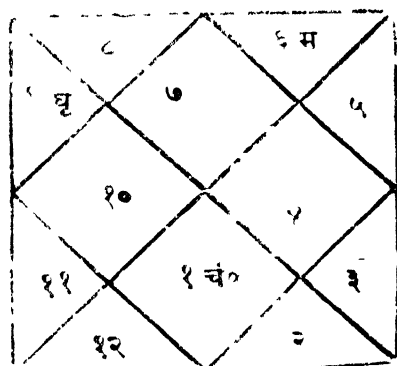
जन्म कुण्डली में चन्द्र मेष राशि मे स्थित है अतः मनुष्य की मेष राशि हुई। राशि के शरीर भाग के अनुसार मेष शरीर का मस्तक भाग है। इस राशि का स्वामी मंगल है और यह द्वादश स्थान में स्थित होने के कारण इसकी अष्टम दृष्टि अपनी राशि पर पूर्ण पड़ती है। मंगल ग्रह अशुभ है तथा क्रूर स्वभाव का है अतः मनुष्य का स्वभाव क्रोधी होना निश्चित है। किन्तु गुरु की पंचम दृष्टि पूर्ण रीति से मेष पर पड़ती है और गुरु ब्राह्मण जाति का सौम्यग्रह है। इसलिए इस मनुष्य का क्रोध शीघ्र ही शान्त होना चाहिए यह भी स्पष्ट है।

मेष राशि का स्थान मंगल और रक्तवर्ण लाल है अतः रक्तदोष से फोड़े-फुन्सी चीरफाड़ आदि का दाग मस्तक पर अवश्य होना चाहिये। यह राशि आर्याभाव में है। और गुरु इस पर और मंगल दोनों की पंचम तथा अष्टम दृष्टि है। अतः इसकी स्त्री का स्वभाव भी इसीके स्वभावानुसार होना निश्चित है। यह भाव (स्थान) भार्या का है और चन्द्र स्थित है इसलिये स्त्री का रंग और वर्ण का होना चाहिये। चन्द्र यह सुस्वरूप गौर वर्ण का ग्रह है और इसकी सप्तम दृष्टि लग्न पर है अतः स्त्री-पुरुष दोनों का सुन्दर होना निश्चित है। इसी तरह राशि और ग्रह दोनों के गुण धर्म स्वभावादि का विचार कर फलित वर्त्तते से भविष्य के फलादि का ज्ञान किया जाता है। राशि से मनुष्य की इच्छा प्रकृति और स्वभावादि का तथा उसके स्वामी से गुण धर्मादि का विचार किया जाता है। यही फल युति तथा दृष्टि का भी मिलता है। राशि के तत्व दिशा और स्थान पर से चोरी गई हुई वस्तु का विचार किया जाता है। परन्तु फलित वर्त्तते समय प्रत्येक का (१) भाव (२) राशि (३) स्वामी (४) स्थितग्रह (५) शुभाशुभ दृष्टि (६) उच्च-नीच राशि (७) अन्य ग्रहों की युति आदि का विचार कर लेना आवश्यक है।

द्वादश राशि के गुणधर्म स्वभाव

जन्म समय यदि पूर्ण चन्द्र बलवान हो तो प्रत्येक राशि के मनुष्य को नीचे लिखे अनुसार फल मिलना चाहिये जैसे—

मेष—समाज में स्थान, मजबूत शरीर, अस्थिर-निद्रा. धन, मित्र तथा जीवन-साधन असमाधान कारक प्रवासी–१

वृष—दयालु, क्षमाशील, स्थिर-निवास, मित्र व सम्पत्ति सुख अशक्त शरीर–२

मिथुन—उदार, कृतज्ञ, उत्साही, वैराग्य वृत्ति, रक्तदोष पीड़ा, परन्तु नीरोगी–३

कर्क—नीरोगी, नाजुक-शरीर, मंदाग्नि, मित्र और धन-साधारण मतलबी, मधुरभाषी लोगों के सिर पर हाथ फेरने वाला–४

सिंह सशक्त, दयावान, स्पष्ट तथा जोरदार बात करने वाला प्रभावशाली, भाषण, स्थिरधन, मित्र, सुख किन्तु रक्त-दोष–५

कन्या उदार, दानी, नीरोग, आँखदोष, आंतड़ियों की बिमारी–६

तुला—समाज में स्थान, वाणिज्य, वृत्ति, नेत्र दोष, पीठ और कमर में दर्द किन्तु नीरोगी–७

वृश्चिक—दृढ़ शरीर, दयालु, स्थिरधन, गुप्तरोग, स्वतंत्र धंधा–८

धन—उत्साही, नीरोगी, उदार, धार्मिक वृत्ति, बुद्धि, रक्त और त्वचा दोष, फेफड़े की बिमारी–९

मकर—रोगी, चंचल मन, असमाधान कारक, जीवन-साधन, अपचनत्वचा रोग, वातदोष–१०

—

कुम्भ—उत्तम, स्वास्थ्य, अस्थिर निवास, नेत्रदोष, रक्त की कमी रोग दूर करने का सामर्थ्य चाकर-११

मीन—संसर्ग जन्म रोग की संभावना, उदार वृत्ति, उत्साही, पैरकी बिमारी-१२

ऊपर दिए हुए फल का संपूर्ण रीति मे मिलता अथवा न मिलता यह ग्रहों की युति-दृष्टि और योग पर भी निर्भर है। शुभाशुभ ग्रहों की युति और दृष्टि के अनुसार लिखे हुए फलों में कमी बेशी होना सभव है।

तारक-मारक राशि

मेष, सिंह, धन ये परस्पर सहायक राशि हैं। इन राशियों में यदि ग्रह बलवान हों तो मनुष्य सत्ताधिकारी होता है ये राशि उत्कर्षदायक, महत्वदर्शक, उच्च-नीच स्थिति निर्माण करनेवाली हैं।

वृष, कन्या, मकर ये सामान्य राशि हैं इस राशि के मनुष्य स्वार्थी वृत्ति के होते हैं, इस राशि के मनुष्य से ऊंचे दर्जे के सार्वजनिक कार्य होना बहुधा असम्भव है।

मिथुन, तुला, कुम्भ से राशि प्रगति के दृष्टि से सामान्यतः स्थिर परन्तु चिकित्सक वादविवाद करने के दृष्टि से उत्तम और बौद्धिक राशि हैं।

कर्क, वृश्चिक, मीन, इस राशि के लोग सार्वजनिक आन्दोलन में भाग लेनेवाले समाज पर छाप रखनेवाले नेता, उत्साही, मार्ग दर्शक, सलाहगार, चतुर लोगों की अनुकूलता प्राप्त करनेवाले स्वतंत्र वृत्तिवाले और मार्मिक ग्रन्थ कर्त्ता होते हैं। ऊपर लिखे हुए फल यदि राशि में केवल चन्द्र स्थित हो और अन्य ग्रहों की युति व दृष्टि न हो तो तभी मिलना सम्भव है अन्यथा कुछ अन्तर पड़ता है।

"राशि घातक चक्र"

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घातक चक्र में दिये अनुसार प्रत्येक तिथि, नक्षत्र, वार, प्रहर, चन्द्र, मास घातक है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय या मुहूर्त पर आरम्भ न करें अन्यथा उन्हे पश्चात्ताप करने के प्रसंग अवश्य आवेगा।

"ग्रह विचार"

आकाश में स्थिर तेज गोल को तारा कहते हैं और अस्थिर अर्थात् सूर्य की परिक्रमा करनेवाले तेज गोल को ग्रह कहते हैं। इस नियम के अनुसार आठ ग्रह और दो पात (उप) ग्रह है जैसे—सूर्य, चन्द्र, बुध, पृथ्वी, शुक्र, मंगल, शनि, गुरू, राहु, केतु।

इन ग्रहों के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के संशोधकों ने ई० स० १७८१ और १८४६ में क्रम से हर्शल और नेपच्यून इन दो ग्रहों का शोध किया है। परन्तु हिन्दी पंचांगों में इनका कोई उल्लेख न होने के कारण यह सिद्ध होता है कि इस देश के ज्योतिषी इन दो ग्रहों से पूर्णतया परिचित न हुए. अतः इन दो ग्रहों के नये सम्बन्ध में यहाँ अधिक लिखना अनावश्यक है। प्रत्येक मनुष्य का फलित निश्चित करते समय प्रथम आकाशस्थ ग्रहों का विचार करना है और इसके पश्चात् पृथ्वी की परिस्थिति और इसी कारण मुख्यतः सातग्रह और दो उपग्रह ऐसे नवग्रह का विचार अधिक किया जाता है। पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चन्द्र अपना मार्ग सूर्य और पृथ्वी इन दोनों के मध्य रेखा पर से क्रमण करता है। उस रेखा के दोनों बाजू के बिन्दुओं को राहु और केतु कहते हैं। और इसी कारण ये दोनों उपग्रह कुण्डली में परस्पर सप्तम स्थान में रहते हैं। राहु चन्द्रमा को और केतु सूर्य को ग्रासता है इसलिए ये रवि और चन्द्र के शत्रु कहलाते हैं। ग्रहों का राश्यांतर पंचांग के कोष्टक में लिखा जाता है जैसे—धनेगुरुः सिंहे राहुः, मेषे शनिः, धनुष्यर्कः, (अर्क रवि) कर्केजः (ज्ञ बुध) आदि।

"ग्रह और राशि का स्वामीत्व सम्बन्ध"

सप्त ग्रहों को द्वादश राशि के स्वामीत्व का अधिकार प्राप्त होने का कारण जानने के पूर्व उनके आकाशस्थ स्थिति और गति का ज्ञान होना आवश्यक है जो मार्जिन में दिया है। प्रत्येक

ग्रह नीचे लिखे क्रम से एक दूसरे से दूर है उदाहरणार्थ सूर्य से बुध, बुध से शुक्र, शुक्र से मंगल, मंगल से गुरु, गुरु से शनि, शनि से हर्शल और हर्शल से नेपच्यून। परन्तु इन ग्रहों की गणना मंगल से प्रारम्भ की गई इस क्रम की गिनती में मंगल को यह बहुमान क्यों दिया गया यह लिखना कठिन है।
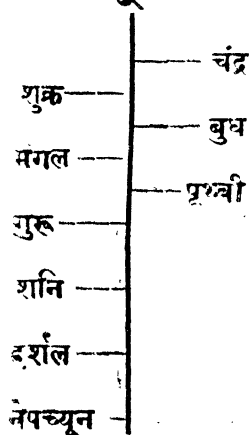
तथापि हमारा व्यक्तिगत यह मत है कि अन्य ग्रहों से मंगल पृथ्वी के समीप होने के कारण और ग्रहों का परिणाम पृथ्वी पर जिस क्रम से पड़ता हो उस क्रम का मनुष्य को पूर्ण ज्ञान रहे इसी हेतु से विद्वानों ने यह क्रम निश्चित किया हो यह संभव है। और इसी क्रम से अङ्क गिनने से सप्त ग्रहों को द्वादश राशियों का स्वामीत्व किस प्रकार प्राप्त हुआ यह प्रत्येक मनुष्य के ध्यान में सहज आ सकता है। ग्रह—मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि, शनि, गुरू राशि १-२-३-४-५-६-७-८-९-१०-११-१२।

सूर्य, बुध, चन्द्र, मंगल और शुक्र अत्यन्त समीप होने के कारण उसकी उष्णता के प्रभाव से ये ४ ग्रह प्रचुर गति से

अपना मार्ग क्रमण करते हैं अतः ये शीघ्र गति ग्रह कहलाते हैं। परन्तु गुरू और शनि ये दोनों ग्रह सूर्य से अत्यन्त दूर होने के कारण अपना मार्गमंद गति से क्रमण करते हैं अतः ये मंदगति ग्रह कहलाते हैं। इसी कारण से भ्रमण करनेवाले ग्रहों की गति में कम या अधिक समय का शास्त्र में लिखा है। आकाश के बारह भाग अर्थात् राशि का भ्रमण करने के लिए जो समय लगता है वह उनके शीघ्र या मंद गति पर अवलम्बित है।

ग्रहों का भ्रमण गति काल

प्रत्येक ग्रह को एक राशि क्रमण पर दूसरी राशि में प्रवेश करने के लिये नीचे लिखे अनुसार समय लगता है। (सूर्य १ मास, चन्द्र २ दिन, मंगल १॥ मास, बुध १ मास, गुरू १३ मास, शुक्र १ मास, शनि २॥ वर्ष, राहु १८ मास, केतु १६ मास)

साधारण नियमों के विरूद्ध कभी-कभी ग्रह किसी राशि में नियोजित समय से कम या अधिक समय तक रहते हैं। इसलिए पंचांगों में स्तम्भी वक्री और मार्गी आदि लिखा जाता है।

ग्रहों का चक्र

सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर बाकी के पांच प्रत्येक ग्रह दो राशि के स्वामी है। (कारण) सूर्य और चन्द्रमा ग्रहों में

प्रधान होकर भी एक-एक राशि के स्वामी और अन्य ग्रह अप्रधान होने पर भी दो-दो राशियों के स्वामी क्यों हुए। क्योंकि कहा भी है। सूर्य और चन्द्रमा राजा है इसलिए चक्रार्ध (६ राशियों) का स्वामी सूर्य और ६ राशियों का स्वामी चन्द्रमा हैं। और कुजादि ग्रह मन्त्रित्व आदि अधिकार से इन दोनों के ग्रह में रहते हैं।

स्पष्टार्थ राश्याधिप जानने का चक्र

सिंह		कर्क
सूर्य		चन्द्र
कन्या	बुध	मिथुन
तुला	शुक्र	वृष
वृश्चिक	मंगल	मेष
धनु	गुरु	मीन
मकर	शनि	कुम्भ

सिंह आदि क्रम से ६ राशियों सूर्य के अधिकार में और कर्क से विलोम क्रम से ६ राशियों चन्द्रमा के अधिकार में हैं। उनमें पराक्रमशील समझ कर सिंह में सूर्य ने अपना अधिकार स्थान बनाया। और मित्रता के कारण उनके समीप कर्क राशि में चन्द्रमा ने अपना स्थान बनाया। और अन्य ग्रहों को दोनों ने अपने अपने अधिकार की राशियों में एक-एक राशियाँ दी, इसलिए मंगलादि ग्रह दो दो राशियों के स्वामी हुए, अर्थात् बुध युवराज (राजपुत्र हैं) इसलिए अपने समीप की सूर्य ने कन्या राशि और चन्द्रमा ने अपने समीप की मिथुन राशि दिया। बाद उसके मंत्री शुक्र (प्रथम सुरगुरु) को सूर्य ने तुला और चन्द्रमा ने वृष में स्थान दिया। उसके बाद मंगल सेनापति को सूर्य ने वृश्चिक और चन्द्रमा ने मेष दिया। फिर मंत्री बृहस्पति को सूर्य ने धनुषि और चन्द्रमा ने मीन में स्थान दिया। सबसे अन्त में मृत्यु शनि को सूर्य ने मकर और चन्द्रमा ने कुम्भ में स्थान दिया। अतः सूर्य चन्द्रमा को एक-एक राशि बची और अन्य ग्रहों को दो-दो स्थान हुए। स्पष्टार्थ चक्र

५ ४ १८ ३६ ६१२ २७ ११ १०

देखो। अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ग्रहों के गुण धर्म-स्वभावादि का वर्णन कोष्टक में किया है किन्तु उनके अनेक अवस्थाओं का संक्षिप्त में यहाँ वर्णन कर देना आवश्यक है।

स्वगृह—कोई भी ग्रह यदि अपनी राशि में स्थित हो तो उसे स्वराशि या स्वगृह कहते हैं।

मूलत्रिकोण—पंच ग्रहों में से प्रत्येक ग्रह को दो राशि में से जो राशि उसे अधिक प्रिय हो उसे मूलत्रिकोण राशि कहते हैं और दूसरे राशि को स्वराशि या स्वगृह कहते हैं।

उच्चराशि—स्वगृह और मूलत्रिकोण ग्रह के अपेक्षा उच्चराशि के ग्रह अधिक बलवान् होते हैं। और वे अधिक ऊँचा फल देने के लिए समर्थ रहते हैं।

नीच राशि—उच्च राशि से ग्रह जब सातवीं राशि में हो तो उसे नीच राशि का ग्रह कहते हैं।

उच्चांश—जन्म समय यदि ग्रह ३० अंश में से उच्चांश में हो तो उसे उच्चांश ग्रह कहते हैं।

नीचांश—नीचांश ग्रह कहते हैं।

ग्रहों की स्थिति के अनुसार वे स्वगृह, मूलत्रिकोण, उच्च व नीच राशि, उच्च या नीच अंश इस क्रम से शुभाशुभ फल देते हैं। ऐसे जन्म ग्रहों से गोचर के ग्रह जब उसी स्थान में युक्त हो उतने ही अंश पर आने के पश्चात् वे अपना शुभाशुभ फल देते हैं। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

ग्रहों का स्थूल फल विचार

ग्रहों का फलित वर्त्तते समय पहले उनके भाव, राशि-अंश, युति और दृष्टि आदि का फल ध्यान में लाना चाहिये। मानलो कि किसी मनुष्य की कुण्डली में चन्द्र, वृश्चिक राशि

में अष्टम स्थान पर है अर्थात् वह वृश्चिक राशिवाला मनुष्य है तो उसका फल किस तरह कथन करना चाहिये।

कोष्टक में दिये अनुसार चन्द्र ग्रह मन का द्योतक है। वृष राशि का चन्द्र उच्च राशि का और वृश्चिक राशि का नीच का है। वृष राशि से वृश्चिक सातवीं राशि होने के कारण वह नीच राशि हुई। इस राशि का स्वामी मंगल ग्रह अशुभ ग्रह है। इसलिये इस मनुष्य की मानसिक स्थिति सदैव पीड़ित रहेगी। अर्थात् उसका मन सदा सर्वदा चिंतित-असंतुष्ट और अस्थिर रहेगा। यदि इस पर शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा अशुभग्रह की दृष्टि हो तो उसी प्रमाण से उसका फल और यशो-पयश का निर्णय निर्भर है। इसे भी देख लेना चाहिये। इसी तरह ग्रहों के विचार से मनुष्य का मन-प्रकृति दिन या रात्रि में कार्य करने की प्रवृत्ति-बलाबल-किस दिशा से हानि या लाभ होगा आदि बातों का पता प्रश्नानुसार विचार पूर्वक फलित बत्तते से मनुष्य को फल मिलेगा इसमें सन्देह नहीं।

जन्म कुण्डली में जो ग्रह ऊँचा या नीचा हो और जिस २ स्थान पर उसकी शुभ या अशुभ दृष्टि हो उसी के अनुसार उसे आजन्म शुभाशुभ फल मिलना निश्चित है।

ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह जिस स्थान में स्थित हो उस स्थान से वे ७ वें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

५ और ९ वें स्थान को ³⁄₄ दृष्टि से देखते हैं।

४	८ वें	,,	³⁄₄	,,
३	१० वें	,,	¹⁄₄	,,

परन्तु नीचे लिखे ग्रहों की सम्पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान के सिवाय अन्य स्थानों पर भी पड़ती है जैसे-

मंगल की ४ और ८ वें स्थान में दृष्टि
गुरू की ५ ,, ९ वें ,,
शनि की ३ ,, १० वें ,,

दृष्टि का फल ग्रहों के गुण धर्म स्वभावानुसार बहुधा मिला करता है। किन्तु शनि जिस स्थान में स्थित हो उस स्थान का रक्षण करता है। और गुरू जिस स्थान पर हो उस स्थान का अशुभ फल देगा। अतः गुरू की दृष्टि अत्यन्त शुभ किन्तु स्थान महात्म्य अशुभ स्थान महात्म्य सुरक्षित समझना चाहिये।

ग्रहों के नैसर्गिक शत्रु मित्र ग्रह

कोई भी ग्रह किसी दूसरे ग्रह में २-३-४ और १२-११-१० भाव में स्थित हो तो वह उसका तात्कालिक मित्र और ५-६-७-८-९ भाव में हो तो तात्कालिक शत्रु होता है। इस प्रकार यदि कुण्डली में नैसर्गिक और तात्कालिक रीति से ग्रह परस्पर मित्र होते हैं तो वे अादि मित्र कहलाते हैं जिसका फल श्रेष्ठ होता है। और यदि वे शत्रु हों तो आदि शत्रु कहलाते

है। जिनका फल अशुभ होता है। ग्रहों के नैसर्गिक शत्रु मित्रत्व का सम्बन्ध ग्रह चक्र में दिया है।

तारक मारक ग्रह

रवि का मारक ग्रह—		श, रा है बाकी के तारक है।	
चन्द्र का ,,	,,	बु. श. रा. के.	,,
मंगल का ,,	,,	बु. श. रा. के.	,,
बुध का ,,	,,	चं. म. गु.	,,
गुरु का ,,	,,	बु. शु. श.	,,
शुक्र का ,,	,,	सू. म. गु. श.	,,
शनि का ,,	,,	सू. चं. मं.	,,

उदित ग्रह

कोई भी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हुए उसके पीछे जाने के पश्चात् जब मार्गाक्रमण कर पृथ्वी के लोगों को दिखाई देता है तो उसे उदित ग्रह कहते हैं।

अस्तंगत ग्रह

कोई भी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हुए सूर्य के पीछे जाने के कारण जब वह पृथ्वी पर नहीं दिखाई देता तब उसे अस्तंगत ग्रह कहते है।

वक्री ग्रह

कोई भी ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में जाने के

पश्चात् जब फिर से अपनी पूर्व राशि में वापस आता है तब उसे वक्री ग्रह कहते हैं।

मार्गि ग्रह

वक्री होने के पश्चात् जब ग्रह पुनः अपने आगे की राशि में जाता है तब उसे मार्गी ग्रह कहते हैं।

स्तंभी ग्रह

कोई ग्रह किसी भी राशि में नियोजित समय से अधिक समय तक यदि स्थित रहता है तो उसे स्तंभी ग्रह कहलाते हैं।

ग्रह कर्त्तरी

शुभ ग्रह के द्वितीय और द्वादश भाव में जब अशुभ ग्रह स्थित हो तो उसे अशुभ कर्त्तरी योग ग्रह कहते हैं जिसका फल अनिष्ट माना गया है।

ग्रहों का भाग्योदय काल

ग्रह जन्म कुण्डली में यदि उच्च फलदायी हो तो वे अपने महादशा काल में उच्च फल देते हैं इसमें संदेह नहीं। किन्तु भाग्योदय करने का उनका समय भी नियोजित है और वह ग्रह चक्र में दिया है।

ग्रहों का शरीर अंग से सम्बन्ध

शास्त्रकारों ने अनुभव के पश्चात् मानव शरीर के सात

भाग किये हैं और इन सात भागों पर सात गृहों का स्वामीत्व नीचे लिखे अनुसार है जैसे—

१ सिर से मुख तक का स्वामी सूर्य है।
२ गले से हृदय तक का स्वामी चन्द्रमा है।
३ पेट से पीठ तक का स्वामी मंगल है।
४ हाथ और पांव तक का स्वामी बुध है।
५ कमर से जंघा तक का स्वामी गुरू है।
६ शिश्न से वृषण तक का स्वामी शुक्र है।
७ घुठना से पेंडूली तक का स्वामी शनि है।

इन गृहों के शुभाशुभ स्थिति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के नियोजित अंग पर उनका परिणाम होना निश्चित है किन्तु इसका पूर्ण अनुभव मिलना अथवा न मिलना यह अन्य शुभाशुभ गृहों के युति, दृष्टि, उच्च या नीच राशि और अंश के फल पर भी निर्भर है।

गृहों का बलाबल समय

प्रत्येक गृहों का फल देने का पक्ष निश्चित है और वह नीचे लिखे अनुसार है जैसे—

शुभग्रह शुक्ल पक्ष में बलवान हो अपना फल देते हैं और पाप ग्रह कृष्ण पक्ष में।

चन्द्रमा का शुभाशुभ फल समय

जन्म चन्द्र अथवा राशि से अन्य गोचर ग्रहों का शुभा-

शुभ फल विचार करने के पूर्व यह ध्यान में लाना चाहिये कि जन्म समय चन्द्रमा अथवा राशि की क्या स्थिति है। लग्न से यदि चन्द्र बली हो तो जन्म राशि के अनुसार अन्य ग्रहों का फल मिलेगा। अन्यथा लग्न से। किन्तु लग्न और राशि में जो बली हो उसके अनुसार ही अन्य शुभाशुभ ग्रहों का फल मिलना निश्चित है। इसलिये चन्द्र का प्रथम विचार करना आवश्यक है जैसे—

१ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से दशमी तक चन्द्र मध्यबली समझा जाता है।

२ शुक्ल पक्ष एकादशी से कृष्ण पक्ष पंचमी तक चन्द्र पूर्णबली समझा जाता है।

३ कृष्ण पक्ष षष्ठी से अमावस्या तक चन्द्र निर्बल समझा जाता है।

मध्यबली चन्द्र का फल साधारण माना गया है।

पूर्णबली चन्द्र का फल श्रेष्ठ माना गया है।

निर्बली चन्द्र का फल अनिष्ट माना गया है।

चन्द्र शुभ ग्रह होते हुए यदि वह निर्बल हो तो उसे अशुभ फलदायी समझना चाहिये। मनुष्य का जन्म यदि उत्तरायण में हुआ हो तो रवि और चन्द्र इस अयन में अधिक बली रहते हैं और वे श्रेष्ठ फल देने को समर्थ होते हैं। यदि जन्म दक्षिणायन में हुआ हो तो वे निर्बल होने के कारण अनिष्ट फल देते हैं।

ग्रहों का वल

जन्म कुण्डली में कोई भी ग्रह केन्द्र व त्रिकोण भावों में अपने उच्चांश, उच्च-राशि, मूल त्रिकोण, स्वगृह, मित्र राशि, शुभ ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो वह इस क्रम से बली कहलाता है अन्यथा उसे अनिष्ट फलदायी समझना चाहिए। बुध शुक्र और गुरु यदि ये ग्रह कुण्डली के केन्द्र भाव में हों तो वे सौ, हजार व लाख इस क्रम से अनेक दोषों का क्षालन करते हैं। गुरु यदि केन्द्र भाव म हो तो शास्त्रकारों ने कहा है कि--

"किं कुर्वन्ति ग्रहा सर्वे यस्य केन्द्रे वृहस्पति।
मत्त मातंग यूथनांभिनत्येकोऽपि केसरी ॥"

अर्थात्--जिसके कुण्डली के केन्द्र में यदि गुरु हो तो अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं जैसे कि एक ही सिंह मस्त हाथियों के समूह को छिन्न-भिन्न कर सकता है। भाव यह है कि जिस प्रकार कुटुम्ब के मुखिया पर अन्य सदस्यों का सुख दुःख निर्भर है उसी तरह कुण्डली के मुख्य ग्रह पर अन्य ग्रहों का शुभाशुभ फल देना निर्भर है।

ग्रहों की अवस्था

ग्रहों के शुभाशुभ जानने के हेतु शास्त्रकारों ने इनकी अवस्था या परिस्थिति का स्थान भी प्राप्त कर रक्खा है और वह नीचे लिखे अनुसार हैं।

उच्च राशि का ग्रह दीप्त अवस्था का ग्रह कहलाता है।
स्वराशि का ग्रह स्वस्थ अवस्था का ग्रह कहलाता है।
मित्र राशि का ग्रह हर्षित अवस्था का ग्रह कहलाता है।
शुभराशि का ग्रह शान्त अवस्था का ग्रह कहलाता है।
नीचराशि का ग्रह दीन अवस्था का ग्रह कहलाता है।
शत्रु या पाप का ग्रह पीड़ित अवस्था का ग्रह कहलाता है।
उदय राशि का ग्रह शक्त अवस्था का ग्रह कहलाता है।
अस्तंगत का ग्रह लुप्त अवस्था का ग्रह कहलाता है।

ग्रहावस्था फल

१ दीप्त अवस्था—सुस्वरूप, कांतिमान, बुद्धिमान, तीर्थों में जानेवाला और शत्रु को नाश करनेवाला होता है।

२ स्वस्थ्य अवस्था—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदाप्रसन्न, मिलमियल कमानेवाला और ज्योतिष जाननेवाला होता है।

३ हर्षित अवस्था—धर्मात्मा, सदाचारी।

४ शांत अवस्था—तेजस्वी, शांत व धन युक्त।

५ दीन अवस्था—बुद्धिहीन परस्त्री आसक्त।

६ पीड़ित अवस्था—चिन्ता युक्त, मानसिक दुःख,

७ शक्त अवस्था—निरोगी, सुन्दर, मधुरभाषी, प्रशंसनीय।

८ लुप्त अवस्था—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक

मनुष्य को आजन्म सुख और दुख मिलता है यह अनुभव सिद्ध बात है और इस पर अविश्वास करना वृथा है।

ग्रहों की परस्पर शक्ति

प्रत्येक ग्रह एक दूसरे से नीचे लिखे क्रम से बलवान् होते हैं जैसे

(१) शनि से मंगल (२) मंगल से बुध (३) बुध से गुरू (४) गुरू से शुक्र (५) शुक्र से चन्द्र (६) और चन्द्र से सूर्य। अर्थात् शनि सब ग्रहों से निर्बल और सूर्य बली है। जन्म समय या गोचर समय जब दो या अधिक ग्रह एक ही स्थान में स्थित हों तो उनमें से कौन अधिक बली है और उनमें से उनकी राशि आंका, दृष्टि के अनुसार किस ग्रह का अधिक फल मिलेगा। यह जानने के लिये इस क्रम को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

ग्रहों के मारक ग्रह

सूर्य से शनि, शनि से मंगल, मंगल से गुरू, गुरू से चंद्र, चन्द्र से शुक्र, शुक्र से बुध, बुध से चन्द्र, इस तरह सर्व ग्रह एक दूसरे के फल को नष्ट करते है फलित निर्णय करते समय यदि शनि अशुभ फलदायी हो और सूर्य शुभ फलदायी हो तो शनि का दोष मिट सकता है। इसीलिये मारक ग्रह का विचार कर फलित निर्णय करने से ठीक फल मिलेगा।

दोष शामक ग्रह

राहु का दोष बुध, राहु बुध का शनि, राहु बुध शनि का मंगल रा० बु० श० मं० का शुक्र, रा० बु० श० मं० शु० का गुरु, रा० बु० श० मं० शु० गुरु का चन्द्र इन सातों ग्रह के दोष को विशेष कर उत्तरायण का रवि नाश करता है।

ग्रहों का फल काल

प्रत्येक ग्रह जिस राशि में स्थिति हो उसका फल आयुष्य में कितने समय तक मिलेगा। यह नीचे लिखा है और इसका उपयोग भविष्य कथन करते समय अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

उच्च राशि का ग्रह—आजन्म उत्तम फल।

स्वराशि का ग्रह—कुछ कम प्रमाण से आजन्म उत्तम फल।

मित्र राशि का ग्रह—इससे किंचित कम प्रमाण से।

सम राशि का ग्रह—इससे भी कम प्रमाण से।

शत्रु राशि का ग्रह—आजन्म निष्फल।

नीच राशि का ग्रह—आजन्म अशुभ फल।

ग्रहों का भ्रमण पद्धति

प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते समय मेष राशि से वृष वृष से मिथुन, कुम्भ से मीन इस क्रम से अपना मार्ग क्रमण

करते हैं किन्तु राहु और केतु ये दोनों उपग्रह उलटे मार्ग में भ्रमण करते हैं जैसे--मीन से कुम्भ, कुम्भ से मकर, वृष में मेष। हम पहले लिख चुके है कि सूर्य से बुध का स्थान आकाशस्थ ग्रहों में पहला और शुक्र का दूसरा है अतः ये दोनों ग्रह-कुण्डली में सूर्य से एक या दो भाव आगे अथवा पीछे स्थित रहते हैं। जन्म-कुण्डली में बुध या शुक्र सूर्य से एक या दूसरे भाव से अधिक अन्तर पर हों तो कुण्डली गलत है यह समझना चाहिये।

सुख दुख का कारक ग्रह

मानव जीवन प्रायः दुखमय होने के कारण प्रत्येक मनुष्य के मन में सुख की अभिलाषा होना अत्यन्त स्वाभाविक है. जगत् में प्रत्येक मनुष्य की सुख की परिभाषा भिन्न-भिन्न है अतः किस ग्रह से किस प्रकार के सुख का विचार करना चाहिये यह लिखना आवश्यक है जैसे--

गु० शु० से-सांपत्तिक स्थिति व द्रव्य लाभ का विचार-

शु० से- स्त्री व प्रांपचिक सुरक।

र० चं० से-शारीरिक व मानसिक सुख।

गु० से- बुद्धि व संतति।

र० गु० श० से-नौकरी, अधिकार राजसम्मान।

बु० शु० से-व्यापार व देन लेन के धन्धे का।

मंगल से-साहस, पराक्रम व यश का।

ऊपर लिखे किसी भी प्रकार के सुख विचार करने के पहले कुण्डली देखते ही इन ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का विचार करना चाहिये और इनके शुभाशुभ स्थिति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को हानि या लाभ होना निश्चित है। इन ग्रहों के फल का प्रमाण जन्म कुण्डली में उनके उच्च या नीच राशि और अंश, युति और दृष्टि आदि पर निर्भर है। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये अन्यथा मनुष्य को निराश होना पड़ेगा।

कारक ग्रह

प्राणी मात्र का सुख दुःख जिन ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर है उस कार्य के कर्ता ग्रहों को कारक ग्रह कहते हैं। प्रत्येक ग्रह का कार्य भिन्न-भिन्न है और वह प्रत्येक घटनाओं पर अपना अधिकार रखते हैं अतः वे किस कार्य के अधिकारी या कारक ग्रह हैं इसका प्रथम विचार करना चाहिये। जैसे—

रवि—पिता सुख, शरीर सुख, पूर्व पुण्याई, मन की रुचि, राज कार्य, बड़े भाई का सुख, वैद्यक शास्त्र विद्या, नजदीक का प्रयास, श्रीमान और अधिकारी लोगों की मित्रता, राज विद्या, राजा से मान सम्मान, श्रेष्ठ अधिकार, नौकरी, सत्ताधारी लोग राज्याधिकारी वर्ग लोकमान्यता प्रसिद्ध नेता, राष्ट्र के कर्णधार, बड़ी संस्थाओं के कर्णधार, अत्यन्त श्रीमान्, जागीरदार दीवान आदि का कारक ग्रह है।

चन्द्र—मातृ सुख, सौन्दर्य सुख, यश प्राप्ति, ज्योतिष विद्या की रुचि, दूरका प्रवास, जल प्रवास, मन, बुद्धि, स्वास्थ्य, राजैश्वर्य संपत्ति, सुगन्धी वस्तुओं का शौक, बाह्य सुख, द्रव्य संचय, धन्धे में उन्नति (प्रजा पक्ष, जनता, सामान्य लोग, जनता की वृत्ति, प्रजा पक्षीय नेताओं के मनः स्थिति तथा स्त्री) आदि का कारक ग्रह है।

मंगल—साहस, लघुभ्राता सुख, पराक्रम, धैर्य, साहस, शौर्य अभिमान, शत्रु, कीर्ति, बुद्धि के आचार कार्य, युद्ध नेतृत्व, धनुर्विद्या, रोग, औदार्य, धातु विद्या, रक्त, विकार, ऑपरेशन, शस्त्रक्रिया, (सेनापति, स्वाभिमानी, कर्तव्यगार, युद्ध, लड़ाई, अग्नि प्रलय, शारीरिक सामर्थ्य का घमण्ड, दावेदार) आदि का कारक ग्रह है।

बुध—बन्धु सौख्य, बुद्धि, विद्या, वक्तृत्व शक्ति प्रवीणता, मित्र सुख, मन शान्ति, सम्पत्ति, स्वतंत्र धन्धा, वाणी, लेखन कला, वेदान्त विषय की रुचि, कला कौशल्य, ज्योतिष विद्या की रुचि तथा ज्ञान, गणित शास्त्र, लोकानुकूलता, (विद्वता, लेखक, ग्रन्थकार, वक्ता, संपादक, मुद्रक और प्रकाशक, पर राष्ट्रीय मंत्री कार भारी, व्यापारी, सराफी का धन्धा, ज्योतिषी, वकीली) आदि का कारक ग्रह है।

गुरू—संतति, सम्पत्ति, ज्ञान, अधिकार, ऐश्वर्य, राज सम्मान, लोक संग्रह, वेदान्त ज्ञान, धंधा, उपजीविका, मंत्रविद्या,

तीव्र बुद्धि, ग्रहण शक्ति, धर्माभिमानी, ग्रन्थ कर्त्ता, स्थिर-वृत्ति, राजकरण, परोपकारी, धार्मिक कृत्य, वाहनादि सुख, धर्म गुरू, संस्कृत विद्या, व्याकरण, शास्त्रज्ञ, अधिकारी, (न्यायाधीश, वकील, श्रीमान व्यापारी, बड़े परिवार का मालिक, जागीरदार, दीवान, संस्थापिका सभा, सोने की व्यापारी, लेन देन का धंधा, व्यवस्थाप्रिय, शान्तिप्रिय) आदि का कारक ग्रह है।

शुक्र—स्त्री व प्रापंचिक सुख, कवित्व, गायनवाद नकला में निपुण, प्राचीन संस्कृति का अभिमानी, सौंदर्य के प्रतिनिधि, विषय सुख लुप्त, सुगन्धी पदार्थ का शौकीन, सम्पत्ति का मानव रक्षण, कला-कौशल्य प्रिय, द्रव्य लाभ: स्वतन्त्र धन्धा, राजाश्रय, राज्य का भार का ज्ञान, अलंकार, तांत्रिक विद्या, अष्ट-सिद्धि साहित्य शास्त्र, व्यापार, वाहनादि सुख, (हीरे, मोती शेअर, कपास लेन देन का व्यापारी ऐशआरामी, साहा शर्पत करनेवाला, देश की सम्पत्ति) आदि कारक ग्रह हैं।

शनि—आयुष्य, दुष्ट, बुद्धि, लोभ, मोह, आतकर्म, रोगी सरकारी आरोप, राजदण्ड, कैद, उद्योग, हानि, दास्पत्व, कायदा प्रिय व प्रवीण, नीच विद्या, लोगों के उत्कर्ष से अस्वस्था (मजदूर वर्ग, खेती, खनिज-पदार्थ, कष्ट, गुप्त बातें, नौकर वर्ग, पराधीनता, कारखानी, विश्वास घात कामगार, छापाखाने का मालिक, अशिक्षित) आदि कारक ग्रह हैं।

राहु—आजाक, सुख, गारूड़ी विद्या, आकस्मिक

घटनाएँ, भूतबाधा, अरूचि, राजछत्र, सम्मान, आदि का कारक ग्रह है।

केतु—तंत्र, मंत्र, गुप्त विद्या, आजीका सुख, एक तन्त्री विचार सारणी, मंत्र सिद्धि के प्रयत्न आदि का कारका ग्रह हैं।

ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार यदि अधिकार के सम्बन्ध से विचार करना हो तो जन्म-कुण्डली में रवि को स्थिति का विचार प्रथम करना आवश्यक होगा। क्योंकि इसकी शुभाशुभ स्थिति पर दशमेश और लोभ का फल निर्भर है। स्त्री और प्रपंचिक सुख का निर्णय करते समय केवल सप्तम स्थान के ग्रह तथा सप्तमेश के स्थिति से ही नहीं किन्तु शुक्र जो इस सुख का दाता है। उसका प्रथम विचार करना चाहिये। विद्या, संतत्ती, का निर्णय करते समय केवल लग्नेश, धनेश, पंचमेश, नवमेश और लाभेश की ही स्थिति नहीं किन्तु प्रथम गुरू के शुभाशुभ स्थिति और इन स्थानों पर उस की दृष्टि का विचार करने से योग्य फल मिलेगा। आर्थिक सुख का विचार करते समय धनेश और लाभेश के साथ शु० चं० का विचार करना अत्यावश्यक है। दुःख, संकट, रोग आयुष्यादि का ग्रह शनि हैं किन्तु इन विषयों का विचार करते समय शनि के उच्च नीच और अंश शुभग्रहों की दृष्टि और युति योग का विचार करना आवश्यक है। अन्यथा इच्छित फल का मिलना असम्भव होगा। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रश्न का विचार करते समय केवल उस भाव के ग्रह तथा स्वामी का विचार करने

से ही नहीं किन्तु उस विषय के कारक ग्रह, शुभाशुभ ग्रहों की युति तथा दृष्टि और स्थिति आदि के विचार पर इच्छित फल निर्भर है। अतः बिना कारक ग्रह के ज्ञान के सिवाय किसी बालके फलित निश्चित करना याने एक पैर पर मार्ग क्रमण करता है।

ग्रहों के अनुभवसिद्ध गुण धर्म स्वभाव

प्रत्येक ग्रह के गुण धर्म-स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं इसलिए फलित निर्णय तथा भविष्य कथन करते समय उनके गुणधर्मादि पर विचार कर लेना आवश्यक है।

रवि—स्पष्ट वक्ता, धीरोदात्त, गहरे दिल का, वैद्यक विद्या की रुचि, गंभीर चेहरा, लोगों पर छाप रखनेवाला, यशस्वी, समाज अनुकूल, स्वार्थ के अपेक्षा परोपकारी, बुद्धि का विकाश, शत्रु और विरोधी को परास्त करना, द्रव्य तृष्णा कम, उदात्त विचार, दातृत्व शक्ति विशेष, कठोर बचन, परन्तु परिणामी हितकर, स्वार्थ त्यागी, मर्मज्ञ, स्थिर स्वभाव, दूरदर्शी, साफ व्यवहार, कठोर किन्तु सत्यभाषी, शुद्धचित्त, सुधारणा प्रिय।

चन्द्र—चैनी, चंचल, उत्तावला, ऐश आरामी, संसार में निमग्न, द्रव्याभिलाषी, शेखीखोर, स्त्रीलोलुप, कर्त्तव्यहीन, धंधा के विषय में, बेफिकर, फालतू आत्म-विश्वास, स्वार्थी, अस्थिर-मन, व्यवहार में गोलमाल, मृदुभाषी, सौम्यवर्त्तन, उच्छृंखल, दिलदार, परन्तु अविश्वासी, अनियमित।

मंगल—क्रूर और तेज स्वभाव, हठी, सनकी, हिम्मतवान, मौके पर हार न माननेवाला, दीर्घरोगी, युक्ति से दूसरों को लड़ाकर अपना कार्य साध्य करनेवाला, बेफिकर, खुला और सच्चा व्यवहार, धर्म पर श्रद्धा, सत्य भाषण प्रिय, भविष्य की अपेक्षा वर्त्तमान काल का अधिक महत्व देनेवाला कभी कभी उद्योग में रत रहनेवाला, निष्कपटी, मित्रतायोग्य, मतवादी परन्तु आचारभ्रष्ट।

बुध—सुस्वरूप, सुहास्यवदन, विनोदी प्रफूल्लित, वाक्यपटु, स्पष्ट व्यवहार, उत्साही, सदाआनन्दी, धूर्त, बाह्य का शौकीन, नौकर-चाकर सुख, धोकेबाज, अविश्वासी, सौम्य-स्वभाव, शान्त परन्तु अहंभावयुक्त, पैसे के सम्बन्ध से विचित्र व्यवहार, कुटुम्ब के विषय में बेफिकिर, धंधे में नवीन कल्पना प्रत्येक धंधे का ज्ञान, परन्तु किसी धंधे में प्रवीण न होना, कारबारी, आध्यात्म-विषय-प्रेमी, शास्त्रीय विषयों में निमग्न, परन्तु अपना हृदय छुपाकर रखनेवाला, कष्टसाध्य और धोके का कार्य करनेवाला।

गुरु—वेदान्त शास्त्र निपुण, शान्त स्वभाव, गुण सम्पन्न-विद्वान्, सत्कर्माचारी, समाज कार्य में प्रवीण, परोपकार प्रिय, सत्याभिमानी, बुद्धिमान्, संकटग्रस्त, दूसरे को मदद करनेवाला राज दरबार में मान-प्रतिष्ठा पानेवाला, कोमल दिल, मृदुभाषी, सब को प्रिय, सत्य के लिए कष्ट सहनकर विजय प्राप्त करने वाला, द्रव्य सम्बन्ध से उदार बुद्धि, प्रापंचिक सुख, ईश्वर-

भक्ति में निमग्न, धर्मशील, नेक सलाह देनेवाला, अनीति के मार्ग से दूर रहनेवाला, गरीबों का सहायक।

शुक्र—संगीत, काव्य, गायन-वादन, कला-कौशल, प्रिय, चीनी के पदार्थों को संग्रह करनेवाला, वस्त्र स्वच्छता-प्रिय, अस्थिर और संकुचित मन, स्वार्थ बुद्धि, स्त्री विषय में अशक्त, गुप्त कर्म, प्रापंचित बातों में दिलचस्पी, धर्म पर श्रद्धा, व्यसनी लोगों की मित्रता, पर स्त्रीरत, स्त्रियों का प्रिय, अविचार, फजूल खर्ची, स्वतंत्र व्यापार, यश।

शनि—धूर्त, दुष्ट बुद्धि, आलसी, अव्यवस्थित, दुर्बलमन, मनमाना कारबार, मंदबुद्धि, आत्म प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्रिय, उद्योग रहित, नीच काम, विश्वासघात में आनन्द माननेवाला, कलह प्रिय, विरोधी, विरोधात्मक आंदोलन का पुरस्कर्त्ता, मर्म भेदी बात करनेवाला, असंतुष्ट, उद्योग शत्रु, उद्योग में अपयश, व्यसनी, स्त्रीलोलुप, पाप पुण्य के विषय में निडर, दुराचारी, समाज के कार्य में बाधक, स्वार्थ प्रिय, परदोष देखने में निपुण, अविचारी पर द्रव्य हरण में प्रवीण, द्रव्य तृष्णा अधिक।

रा० के०—होशियार, कार्य साधक, अल्पभाषी, प्रचंड कल्पना शक्ति, उच्च महत्वकांक्षा, राजकार्य और व्यवसाय में निमग्न, उद्योगरत, एक मार्गी, साधक-बाधक उपायों को सोचने वाला, क्लिष्ट और गूढ़ विद्या प्राप्त करने की रुचि, शान्त और स्थिर स्वभाव, संयुक्तिक भाषण, स्पष्टवक्ता, निर्भीक, स्वार्थी,

पराये दुःख में उदासीन, परोपकार की इच्छा, प्राचीन धर्माभिमानी, वाद विवाद में कुशल, मित्रता के योग्य, उत्साही, समाज के कार्य में रत, निडर।

ऊपर लिखे ग्रहों के गुण-धर्म स्वभाव में "स्वार्थी-परोपकार की इच्छा" इस तरह के विरोधी भाव युक्त गुणों का वर्णन है इससे पाठकों का मन चकित होना स्वभाविक है। परन्तु यह विरोध भाव फल किसी भी ग्रह के उच्च नीच या शुभाशुभ स्थिति पर अवलम्बित है यह ध्यान में रखना चाहिये। शुभ ग्रहों के नीच स्थिति का अशुभ फल मिलना जिस तरह संभव है उसी तरह अशुभ ग्रहों के उच्च स्थिति का शुभ और नीच स्थिति का अशुभ फल मिलना भी निर्विवाद है। अतः कुछ ग्रहों के गुण धर्म में परस्पर विरोधी फल का वर्णन शास्त्रकारों ने किया है।

ग्रहों से रोग निदान ज्ञान

सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने प्रथम ग्रहों को निर्माण किया और इसके पश्चात् इस सृष्टि की उत्पत्ति की। ग्रहों का परिणाम इस पृथ्वी पर पड़ता है यह सिद्ध हो चूका है और किन ग्रहों से कौन से रोग उत्पन्न होते हैं इसका वर्णन भी इस शास्त्र के ज्ञाताओं ने किया है। अतः उसका संक्षिप्त में यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हैं।

शारीरिक रोगों की उत्पत्ति का मुख्य कारण वैद्यक

शास्त्र में कफ-वात-पित्त इन तीन विकारों के कम या अधिक प्रमाण पर होना लिखा है और प्रवीण वैद्य नाड़ी परीक्षा कर इनके आधार पर निदान निश्चित करते हैं। उसी तरह ज्योतिषी शास्त्र में इन त्रिविकारों की उत्पत्ति का मूल कारण ग्रह हैं यह मालूम हो सकता है और इन्हीं ग्रहों के आधार पर प्रवीण ज्योतिषी इन त्रिविकारों का निर्णय कर बिना नाड़ी परीक्षा के निदान निश्चित कर सकते हैं। वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रवीण वैद्य रोगों का निदान जिस तरह रोगी के जिह्वा-नेत्र, त्वचा मल मूत्र और नाड़ी आदि अष्ट विधि के आधार पर करते हैं। उसी तरह ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रवीण ज्योतिषी किसी भी रोग की परीक्षा और वर्णन जन्म कुण्डली के भाव-राशि-ग्रह, रोग राशि और ग्रहों के शारीरिक भाव शुभाशुभ दृष्टि तथा युति आदि अष्ट विधि के बल पर कर सकता है। जैसे—

कफ—शु. चं. वातकफात्मक शु. चं।

वात—श. रा. के. त्रिदोषात्मक बु.।

पित्त—सू. मं. द्वन्द्वज दोष ग्रहानुरूप।

कुण्डली के द्वादश भाव से शरीर के किस भाग में पीड़ा या रोग होना निश्चित है यह नीचे लिखा है। जैसे—

प्रथम भाव से—मुख, दांत, जाड़, गला, जीभ, मस्तक में।

द्वितीया भाव से—दाहिने नेत्र में।

तृतीया भाव से—नेत्र, कान, गर्दन, हाथ में।

चतुर्थ भाव से—पेट, स्कंध, पीठ, पसली।

पंचम भाव से—कमर के ऊपर का भाग, जांघ, गंडस्थल।

षष्ठ भाव से—गुदा, लिंग, योनि, दाहिना पैर।

सप्तम भाव से—पेट का भाग, नाभी, पेड़ू।

अष्टम भाव से—गुंभा स्थान, बांया पैर।

नवम भाव से—कमर के उपर का भाग, बायां पैर।

दशम भाव से—पेट स्कंध बांया।

एकादश भाव से—बांया हाथ, कान, गर्दन।

व्यय भाव से—बांई आँख पैर का तलवा।

ऊपर लिखे द्वादश भावों में यदि पाप ग्रह स्थित हों या ग्रहों की युति, प्रतियुति, योग, दृष्टि हो तो शरीर के उन्हीं भागों में पीड़ा या रोग का होना निश्चित है। इसी तरह कुण्डली के प्रथम ग्रह से वैद्य, चतुर्थ भाव से औषधि, षष्ठ भाव से रोग और दशम भाव से रोग का साध्या-साध्य ज्ञान भी हो सकता है। जन्म कुण्डली में चन्द्र यदि ४-७-१२ या ४-८-१२ स्थान में हो तो यह योग रोगी और वैद्य दोनों के लिये यश प्रद नहीं ऐसा कहा गया है।

लग्नधिपति शुभ ग्रह हो तो वैद्य के लिये यश प्रद समझा जाता है। परन्तु उसकी औषधि से लाभ होने के लिये रोगी चतुर्थ स्थान का स्वामी शुभ ग्रह या शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होना आवश्यक है। और गोचर पाप ग्रह यदि २-६-८-१२ स्थानों पर से भ्रमण करते हों अथवा इन ग्रहों की इन स्थानों पर युति, प्रतियुति तथा दृष्टि योग होता हो या इन्हीं ग्रहों की महादशा

और अन्तर दशा हो तो अशुभ फल मिलना निश्चित है। प्रवीण वैद्य भी बिना नाड़ी परीक्षा के रोग का कारण नहीं बता सकता परन्तु प्रवीण ज्योतिषी बिना नाड़ी परीक्षा के शारीरिक रोगों का हाल और स्थान बता सकता है यह स्पष्ट सिद्ध है।

जन्म कुण्डली में जो ग्रह अनिष्ट फलदायी हो और वह जितने अंश का हो उतने अंश में गोचर के पाप ग्रह या अशुभ ग्रह उसी ग्रह से जब युक्त तथा दृष्ट हो ऐसे समय पर अशुभ फल मिलना तथा रोग का होना संभव है। किन्तु किस ग्रह से कौन से रोग उत्पन्न होकर उसका शरीर पर क्या परिणाम होगा यह प्रथमा जानना आवश्यक है। जैसे—

रवि—शरीर के हृदय का भाग, मस्तक या मुख के पास दुःख खून का बहाव, नेत्र कष्ट, दृष्टि दोष, जीवन शक्ति की स्थिति हृदय रोग, उष्णावात, बुखार, पित्त, मूर्छा, चक्कर, पीठ या पैरों में दर्द व व्यंग इत्यादि।

चन्द्र—पेट का विकार, छाती का विकार, जलोदार, सर्दी का बुखार, स्त्रियों के प्रदर, आर्तवदोष, अपस्मार, मिर्गी, सहन-शक्ति।

मंगल—रक्त नाश, माता की बीमारी, खाँज, सूजन, प्लेक, बुखार, नाक का रोग, गुप्त रोग, आपरेशन, चीरफाड़, घाव।

बुध—गेंदू सम्बन्धी विकार, गर्दन या गला का रोग, गंडमाला मज्जा तंतु की दुर्व्यवस्था, वाणी में दोष, सिर का घूमना, मानसिक व्यथा, जीभ, दांत, तालू का रोग।

गुरू—लिभर की विमारी, शरीर में रक्त संचय, दन्त रोग, प्रतिषेधक रोग, फोड़े इत्यादि।

शुक्र—गुह्य भाग की बिमारी, गर्मी, बाघी, वीर्य दोष, मूत्राशय रोग, मधुमेह, थाईसिस, मलेरिया बुखार।

शनि—अर्धांग वायु, खाँसी, सन्धिवात, क्षयरोग, शीत पीड़ा, बद्धकोष्ठ, दम्मा, जाड़ का दर्द, अपचन्ड, बात विकार, दीर्घकाल के रोग, रक्त का नाश इत्यादि।

अन्य—लग्न का स्वामी यदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होकर पीड़ित हो तो गुह्या विकार का होना सम्भव है।

जन्म राशि में श. मं. रा. के. स्थित हो तो शरीर में पीड़ा हृदय-रोग, स्त्री को कष्ट, बन्धु सुख में विघ्न अवश्य होगा—

सारांश—किसी भी प्रश्न का विचार करते समय भाव, राशि, अंश, ग्रह, दृष्टि व युति के शुभाशुभ स्थिति का विचार करने के पश्चात् ग्रहों के फल का विचार करने में यथार्थ फल का अनुभव मिलना सम्भव है। जैसे—तृतीय भाव से गल्ला, कान आदि का बोध होना है। इस भाव से यदि नीच का

गुरु क्रमण करता हो तो फल व कर्णशूल की व्यथा होगी और नीच का शनि क्रमण करता हो तो दाहिने तरफ छाती, गला, कान में वात पीड़ा से दुःख मिलना निश्चित है। परन्तु दुःख का प्रमाण कम या अधिक होना अथवा न होना यह जन्म स्थग्रह राशि गोचर ग्रह व उनके शुभाशुभ युति वह दृष्टि पर अवलम्बित है यह भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

सुत्त मांस देखना सरल रीति

ग्रह स्पष्ट करते समय गुणा भागकार अधिक न करना पड़े इस हेतु जन्म दिन कौन-सा है प्रथम यह ध्यान में लाना चाहिये। यदि जन्म पौर्णिमा (शुक्ल पक्ष) ७ मी ८ मी का हो तो अमवस्या के स्पष्ट ग्रहों में जन्म ग्रहों के गति को जोड़ने से अधिक गणित न करते हुए उत्तर आ सकता है। किन्तु जन्म यदि ९ मी १० मी का हो तो पुर्णिमा के स्पष्ट ग्रहों के राशि, अंश कला-विकला में से प्रतिपदा से जन्म दिन याने १० मी तक के ग्रहों के गति को घटाने से जन्म दिन के ग्रह स्पष्ट हो सकते हैं। इसी तरह अमावस्या ८ मी का जन्म हो तो पूर्णिमा के स्पष्ट ग्रहों में जोड़ना और १० मी जन्म हो तो अमावस्या के स्पष्ट ग्रहों से घटाने से ही योग्य उत्तर मिलेगा। परन्तु यदि ग्रहवक्री हो अथवा राहु, केतु इन दो वक्री ग्रहों के जन्म दिन तक के गति को पिछले पक्ष के अमावस्या या पूर्णिमा जो पक्ष हो स्पष्ट ग्रहों के राशि अंश कला-विकाल से घटाना ही चाहिये क्योंकि वे पिछले राशि के कितने समीप पहुंच चुके यह जानना

हैं। ग्रह स्पष्ट करते समय जन्म दिन के पंचांग पर से जन्म पक्ष और पिछले पक्ष के ग्रह स्पष्टों का सूर्य के राश्यान्तर का वक्री ग्रह आदि का ज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा जन्म दिन तक के ग्रहों का स्पष्ट करना कठिन होगा, ग्रह स्पष्ट गणित भाग में दिया है।

ग्रहांश से सूक्ष्म फलित ज्ञान

आकाशस्थ ग्रह अपने मार्ग व गति से एक क्षण भी विश्राम न लेते नित्य भ्रमण करते हैं यह सर्वमान्य व सर्वश्रुत है और नियोजित समय पर प्रत्येक नक्षत्र व राशि से भ्रमण करते हुए दूसरे नक्षत्र और राशि में प्रवेश किया करते हैं। ग्रहों को एक राशि भ्रमण करने के लिये ३० अंश का समय लगता है यह हम पहले कह चुके हैं। और इसी आधार पर जन्म समय से जितने अंश पर अपना मार्ग क्रमण करते हुए वे गणित शास्त्र द्वारा सिद्ध होता है उसे ग्रह का अंश या ग्रहांश कहते हैं। अर्थात् मनुष्य के जन्म समय वे जिस अंश पर उदित होते हैं उसी राशि और अंश पर जब गोचर का ग्रह परिभ्रमण करते हुए पहुंचता है तभी वह अपना शुभाशुभ फल देने के लिये समर्थ होता है। बहुतेक लोगों का यह समझ हो बैठा है कि ग्रहों का राश्यांतर होते ही वे उस राशि का शुभाशुभ फल देने के लिये समर्थ होते हैं किन्तु स्थूल सूक्ष्म पद्धति के अनुसार यह अशुद्ध पाया जाता है। क्योंकि कोई भी ग्रह किसी भी राशि में प्रवेश

करते ही वह अपना फल जन्म होने के पिछले अंशों का किस तरह दे सकता है जब कि उन अंशों पर मनुष्य के जन्म का पता ही न था। मान लो कि किसकी जन्म राशि मेष है और जन्म समय गुरू २० अंश का है। तो क्या राशि से पांचवा अर्थात सिंह राशि में गोचर का गुरू प्रवेश होती हो वह शुभ फल देने के लिये समर्थ होगा—अर्थात् नहीं। क्योंकि ग्रहों का पहिला या दूसरा होना यह केवल उनके राश्यांतर पर नहीं किंतु जन्म समय के अंशों से राशियों के ३० अंश पूर्ण भ्रमण करने पर निर्भर है। स्थूल मान से सिंह राशि का गुरू पांचवा समझा जाता हो किन्तु सूक्ष्म दृष्टि से वह चौथा ही होता है। जैसे— २० अंश मेष राशि १९ अंश वृष राशि तक पहिला गुरू २० अंश वृष से, १९ अंश मिथुन, दुसरा गुरू २० अंश मिथुन से, १९ अंश कर्क तक, तीसरा गुरू और २० अंश कर्क से १९ अंश सिंह तक चौथा गुरू हुआ।

अतः वह शुभ फल देने के लिये समर्थ है किन्तु २० अंश सिंह राशि में आने पर १९ अंश कन्या राशि तक पांचवा होने के कारण शुभ फल देने को समर्थ होगा इसमें सन्देह नहीं। स्थूल और सूक्ष्म दृष्टि में यह भयंकर अन्तर पड़ने के कारण तथा लोगों को इसका ज्ञान न होने के कारण वे बहुधा भविष्य कला और ज्योतिष शास्त्र दोनों के प्रति यदि अपना अविश्वास व्यक्त करते हैं कि जन्म ग्रह गोचर में उसी राशि और अंश पर पहुंचते ही वे अपना शुभाशुभ फल देते है अन्यथा नहीं। इसके

अतिरिक्त दूसरे दृष्टि से विचार किया जाय तो भी यही सिद्ध होता है। जैसे—क्षण भर के लिये मान लिया जाय कि ग्रह मनुष्य है। भाव शहर है। नक्षत्र मोहल्ला है। राशि नौकर है और अंश यह निवास स्थान है तो क्या एक शहर से दूसरे शहर की सीमा पर पहुंचते ही मनुष्य अपने घर पहुंच गया ऐसा कह सकते हैं अर्थात् नहीं। इसी तरह ग्रहों के भ्रमण का भी विचार करना योग्य होगा। ग्रहों के शुभाशुभ फल निश्चय करने के मार्ग दो हैं। एक जन्म राशि अर्थात् चन्द्र से और दूसरा जन्म लग्न से। किन्तु ग्रहों का राश्यान्तर होने पर लग्न या राशि के अंशानुसार वे कितने समय के पश्चात् फल देने के लिये समर्थ होते हैं। तात्पर्य सूक्ष्म फलित वर्त्तने के लिये ग्रहांश का ज्ञान होना कितना आवश्यक है इसका विचार पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

ग्रहांश से ग्रहों के अवस्था का ज्ञान

ग्रहांश का ज्ञान होने पर मनुष्य को उनके अवस्था का तथा उनके शुभाशुभ स्थिति व फल का ज्ञान हो सकता है। अतः ग्रहांश का जानना आवश्यक है जिस पर उनका शुभाशुभ फल निर्भर है। जैसे—

१—ग्रह यदि सम राशि अर्थात् २-४-६-८-१०-१२ में हो तो।

१ से ६ अंश तक वह बाल्यावस्था का ग्रह है।

७ से १२ अंश तक वह कुमारावस्था का ग्रह है।
१३ से १८ ,, ,, युवावस्था का ग्रह है।
१९ से २४ ,, ,, वृद्धावस्था का ,,
२५ से ३० ,, ,, मृतावस्था का ,,

२—ग्रह यदि विषम राशि अर्थात् १-३-५-७-९-११ में हो तो।

१ से ६ तक वह मृतावस्था का ग्रह कहलाता है।
७ से १२ तक वह वृद्धावस्था का ,,
१३ से १८ तक वह युवावस्था का ,,
१९ से २४ तक वह कुमारावस्था का ,,
२५ से ३० तक वह बाल्यावस्था का ,,

जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली यह मनुष्य के जन्म समय के आकाशस्थ ग्रह, राशि, नक्षत्रादि का तथा उसके पूर्व जन्म शुभाशुभ कर्मों के सुख दुःखादि का एक अंधुक फ़ोटो है। जिसे इस शास्त्र द्वारा उज्वल फोटो करने से प्रत्येक अंग सत्ताईस विभाग, नक्षत्र बारह, राशि नवग्रह, तीस तिथि सातवार दो पक्ष सत्ताईस योग, ग्यारह करण, बारह मास, छः ऋतु, दो अयन और वर्षादि का तथा सुख दुःखादि फल ने निश्चित् स्वरूप व समय का मनुष्य को सूक्ष्म ज्ञान हो सकता है।

कुण्डली मुख्यतः चार प्रकार की है। (१) लग्न कुण्डली, (२) राशि कुण्डली, (३) वर्ष कुण्डली, (४) प्रश्न कुण्डली। जन्म कुण्डली के अन्तर्गत अनेक सूक्ष्म कुण्डलियाँ। जैसे—होरा, द्रेष्काण, तृतीयांश, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, भाव चलित आदि और किसी भी प्रश्न का विचार करने के लिये इन कुण्डलियों का अत्यन्त उपयोगी भी हैं परन्तु वर्षों के अनुभव के बाद जन्म कुण्डली का सूक्ष्म निरीक्षण और परीक्षण कर अनेक प्रश्नों का विचार करना आवश्यक नहीं हैं। इसलिये पाठकों का ध्यान हम मुख्यतः इन्हीं चार कुण्डलियों की ओर आकर्षित करना अत्यन्त आवश्यक समझते हैं।

१—मनुष्य के जन्म समय आकाशस्थ ग्रहों की गति व स्थिति दर्शाने वाले कुण्डली को लग्न कुण्डली कहते हैं।

२—मनुष्य के जन्म समय जिस राशि में चन्द्र स्थित हो उसे लग्न को लिखकर दूसरे ग्रह क्रम से अन्य भावों में जिस कुण्डली में लिखे जाते हैं उसे राशि कुण्डली कहते हैं।

३—जन्म वर्षारम्भ के दिन से एक वर्ष की ग्रह स्थिति दर्शानेवाले कुण्डली को वर्ष कुण्डली कहते हैं।

४—किसी भी समय किसी प्रश्न का उत्तर उक्त समय के ग्रह स्थिति द्वारा बतानेवाले कुण्डली को प्रश्न कुण्डली कहते हैं।

जन्म लग्न कुण्डली से मनुष्य का रूप, रंग, गुण-धर्म, स्वभाव, मानसिक स्थिति, सुख, दुःख व हानि लाभ आदि का

सम्पूर्ण ज्ञान हो सकता है। और राशि कुण्डली से मन की स्थिति व गोचर गहों के शुभाशुभ फल का ज्ञान होता है। लग्न कुण्डली में यदि लग्न प्रवल हो तो गोचर गहों का फल लग्न से मिलता है। और यदि लग्न से चन्द्र (राशि) प्रवल हो तो गोचर गहों का फल राशि से मिलता है। अतः जन्म कुण्डली में ये दोनों कुण्डलियाँ लिखी जाती है। कुण्डली का विशेषत्व याने वह किस प्रकार की है। अर्थात् अत्यन्त उच्च है या नीच यह जानना है। सांपत्तिक दृष्टि से लक्षाधीश होने का योग जैसा विशेष है वैसा ही दारिद्री रहने का है क्योंकि जैसा एक सामान्य मनुष्य का संस्थापनाधिपति होना वैसा ही किसी लक्षाधीश का एकाएक दरिद्री होना ये दोनों विशेष योग है और ये जन्म-कुण्डली के द्वार ही मालूम हो सकते हैं। परन्तु अनेक कुण्डलियों के निरीक्षण परीक्षण व मनन से ही यह ध्यान में आ सकता है और यही जानना याने कुण्डली जानना है। जैसे —

जन्म लग्न कुण्डली
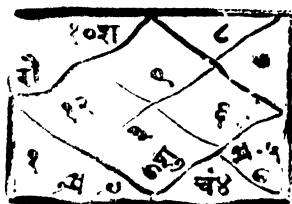
जन्म राशि कुण्डली
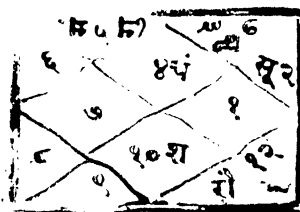
मेषादि द्वादश लग्न फल या लग्न लक्षण

कुण्डली के प्रथम स्थान या लग्न में यदि केवल राशि हो तो नीचे लिखे अनुसार फल मिलना निश्चित है।

मेषलग्न—जैसे—मेष लग्न-कृश शरीर, नाटा, पुराण मताभिमानी परन्तु धर्म आचरण, कमी, भूरी आँखें, बहुत बाल, गोल चेहरा, नाकपुट, सुन्दर, उष्ण प्रकृति, बात-विकार, कौटुम्बिक सुख कम, कठोर भाषण, वृथाभिमानी सांपतिक नुकसान के प्रसंग, मन की अनिश्चित स्थिति, दीर्घोद्योगी परन्तु अनेक समय प्रयत्न में अपयश, धंधा बदलने को अधिक वृत्ति, क्रोधी, लोक प्रतिकूल।

बृषलग्न—गौर वर्ण, स्थूल शरीर, कालेनेत्र, निष्कपटी, चैनी, सांसारिक बातों में निमग्न, शांत-स्वभाव, विचारी, कम बोलनेवाला, गंभीर चेहरा, शीत-प्रकृति, लम्बा चेहरा, आत्म-संतोषी, राजाश्रित, अनिश्चित उत्कर्ष, परिस्थिति में सदैव बदल, स्वतंत्र धन्धे की इच्छा, द्रव्य लाभ व संचय के लिये अनुकूल, वेदान्त प्रिय, ईश्वर भक्त, सत्याभिमानी।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, अशक्त प्रकृति, नाटा, भूरेनेत्र, अल्प बाल, लंबा चेहरा, विद्वान, तीक्ष्ण विचार, आचार कल्पना, गूढ़ तत्वों के खोज में चातुर, वस्त्र प्रिय, सबों पर छाप रखने वाला, शूर, अभिमानी, वाद-विवाद में यश मिलने वाला,

शास्त्रीय विचार, स्वतन्त्र धंधे में निपुण, उद्योगी, द्रव्यवान्, खर्चिला परन्तु आर्थिक संकटों में युक्त।

कर्क लग्न—भव्य चेहरा, स्थूल शरीर, स्नायु व अवयव मजबूत, गोलमुख, गौर वर्ण, बहुत बाल, तैरने में प्रवीण, दूरदर्शी, निःस्वार्थी, सत्य के लिये कष्ट भोगने वाला, वाक्पटु, लेखक, कर्त्तव्य बुद्धि जागृत, परिश्रमी, कृति व भाषण में समान, लोकनायक, बहितवादी, अनुकरणीय, संकटों को न माननेवाला श्रेष्ठ अधिकार, सम्पन्न, हितकर्त्ता, लोगों का मित्र, गंभीर दिल, स्वार्थ साधु।

सिंह लग्न—भव्य शरीर, रक्तवर्ण दीर्घ अवयव, गोल व लाल नेत्र, कम बाल, चौड़ा चेहरा, मत्सरी, अविचारी, अस्थिर मन, किसी को न माननेवाला, कृति से बातें अधिक, राजवैभव, राज सभा के लोगों से मित्रता, चमत्कारिक मन की स्थिति, कठोर, परन्तु परिणाम में हित का बोलने वाला।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्यदेह, ऊँचा, गौर वर्ण, गोल चेहरा, चंचल वृत्ति, भय के वाज, पोषाक, सुन्दर चेहरा, थोड़े बाल, दूसरों की सेवा करनेवाला, स्वार्थी, पाप बुद्धि, दुष्ट लोगों की संगति, परावलम्बी, हृदय के सम्बन्ध से अत्यन्त स्वार्थी, स्त्री प्रिय।

तुला लग्न—साधारण प्रकृति, गौर वर्ण, भव्य मस्तक, लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ा नाक, थोड़े बाल, तीक्ष्ण बुद्धि,

रोगी, स्त्री अभिलाषी, स्वार्थ लोलुप, परन्तु परहित के लिये कष्ट उठाने वाला, व्यापार में निपुण, प्रत्येक बातों को तौलकर बोलने वाला, द्रव्य सम्पन्न, वाहनों का परीक्षक।

वृश्चिक लग्न—ऊँचा कृश शरीर परन्तु मजबूत, भूरेनेत्र, कंडेवाल, मोटी गर्दन, धूर्त, आप मतलबी, कपटी, विद्या अल्प, परन्तु मायावी (उस्तवाल) स्वार्थ के लिये दूसरे का नुकसान चाहनेवाले, मायावी उपदेश, दिखने में सीधा, कार्य साधु, व्यवहार कुशल, लोकमत अनुकूल करने में चतुर, महत्वाकांक्षी सत्या-सत्य की परवाह न करनेवाला, किसी पर भरोसा न करनेवाला, स्वतंत्र विचार, गरम प्रकृति।

धन लग्न—स्थूल व भव्य शरीर, चेहरा गोल, भव्य मस्तक, लम्बा नाक, साधारण ऊँचा, लाल गौर वर्ण, स्थिर व शांत स्वभाव, द्रव्य अभाव का दुःख, धन्धा व उद्योग में कमजोर, विद्वान्, वेदान्त विषय प्रिय, आलसी, अल्प संतोषी, स्थिर बुद्धि, डरपोक, अव्यवस्थित, झगड़ों से दूर, प्रापंचिक सुख कमी,।

मकर लग्न—कृश शरीर, काले नेत्र, लम्बा मुँह, द्वेषी, आलसी, मूर्ख, महत्वाकांक्षी परन्तु थोड़ा प्रबल, लोभी, गहरे दिल का, व्यसनी, विचारहीन, वातविकार, अस्थिर, कमजोर दिल, सामान्य द्रव्य दृष्टि।

कुम्भ लग्न—साधारण कृश शरीर, मध्यम गोरा, चंचल, भूरे नेत्र, थोड़े बाल, बैठा हुआ चेहरा, दिखने में शान्त परन्तु धूर्त, आप मतलबी, मितभाषी, परावलंबी, उदार, कष्ट से बचने वाला, विद्यापूर्ण, शास्त्रीय विषय में पूर्ण, मान सन्मान प्रिय।

मीन लग्न—स्थूल शरीर, गौर वर्ण अशक्त प्रकृति, लंबा चेहरा, परोपकारी व दयालु, उदार धर्म प्रिय, गंभीर, सत्यभिमानी, साधक-बाधक बातों में प्रवीण, आचार-विचार में मेल, लोकहितकर्म, द्रव्यभिलाषी, खर्चिला, कृर्तिमान, लोगों में सन्मान धन्धे में प्रसिद्ध यशस्वी।

द्वादश लग्न—फल हमने संक्षिप्त में वर्णन किया है। परन्तु लग्न में यदि ग्रह स्थिति हो अथवा दृष्टि व युति हो उस ग्रह के शुभाशुभ गुण-धर्म स्वाभावानुसार ऊपर लिखे हुए फल में फेर बदल होना निश्चित है क्योंकि किसी भी भाव में ग्रह के रहते हुए भाव के राशि का फल मिलना संभव नहीं। लग्न से मनुष्य के शरीर, आकार, आँख, नाक, मस्तक, चेहरा, रूप, रंग, बाल, बुद्धि, मानसिक स्थिति आदि का ज्ञान मालूम किया जा सकता है। परन्तु लग्न फल निश्चित करते समय शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि का विचार कर फलित बर्त्तते से ही योग्य फल का मिलना सम्भव है। लग्न के साथ यदि ग्रह स्थित हो तो नीचे लिखे अनुसार लग्न का फल मिलेगा यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। जैसे—

लग्न में रवि—मध्यम ऊँचा शरीर, साधारण गौर वर्ण, कम बोलने वाला, उत्साही, तामसी, पित्त प्रकृति—

लग्न में चन्द्र—सुन्दर, गोरा, रूपवान, मितभाषी, स्त्रियों को प्रिय, तेजस्वी आँखें, चंचल स्वभाव, दुबला-पतला शरीर, सौम्य, कफ पित्त प्रकृति, बोलने में चतुर।

लग्न में भौम—कृश शरीर, लाल वर्ण व आँखें, चेहरे पर माता के दाग, धैर्यवान्, उदार, चंचल वृत्ति, क्रूर दृष्टि, तामसी—

लग्न में बुध—प्रसन्न मुख, कृष्ण वर्ण, विनोदी भाषण, मजबूत शरीर, बुद्धिमान, पिंगल नेत्र, बोलने में प्रवीण, कफ वात, प्रकृति।

लग्न में गुरू—साधारण गोरा, स्थूल शरीर, काले नेत्र, लंबा नाक, ऊँचा मस्तक, सदाचारी, विद्वान्, स्थिर चित्त, शास्त्र में रूची।

लग्न में भृगु—शुभ्र गोरा, कोमल शरीर, सुन्दर व तेजस्वी, पानीदार आँखें, घुंघरवाले बाल, कारभार प्रिय, शौकीन, स्त्री प्रिय।

लग्न में शनि—काला रंग, कृश शरीर, पीले नेत्र, बलहीन, मंदबुद्धि, कृपण, आलसी, मित्तभाषी, कडे बाल, क्रोधी, वात प्रकृति।

लग्न में राशि और ग्रह के स्थित होने से जो निश्चित फल मिलता है, वह ऊपर लिखे अनुसार है। किन्तु फल निश्चित करते समय ग्रहों के शुभाशुभ दृष्टि का भी विचार करने से योग्य फल अनुभव में आ गया यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

जन्म ग्रह और गोचर ग्रह

आकाशस्थ ग्रह अपने मार्ग व गति से नित्य भ्रमण करते हैं। यह सर्वश्रुत है। मनुष्य के जन्म समय जो ग्रह जिस राशि में भ्रमण करते हुए मिलते हैं उन्हें जन्म ग्रह कहते हैं और वर्त्तमान समय वार्षिक पंचांगों में जो ग्रह जिस राशि में भ्रमण करते हुए वर्णित हैं उन्हें गोचर ग्रह कहते हैं। जन्म ग्रह का फल मनुष्य को आजन्म मिलता है किन्तु गोचर ग्रहों के फल वे जिस राशि में जितने समय तक स्थित रहते हैं उतने ही समय तक फल मिलता है। गोचर ग्रहों से वर्त्तमान समय शुभाशुभ फल मिलना संभव है अथवा नहीं यह निश्चित रीति से मालूम हो सकता है इसीलिये इनकी भ्रमण गति व स्थिति का वार्षिक पंचांगों द्वारा ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। जन्म लग्न या राशि से गोचर ग्रह दोनों शुभ स्थान में हो तो श्रेष्ठ फल—एक शुभ और दूसरा अशुभ स्थान में हो तो मध्यम फल और दोनों अशुभ स्थान में हो तो अनिष्ट फल मिलेगा। लग्नेश, धनेश, दशमेश व लाभेश इन ग्रहों पर से जब गोचर ग्रह भ्रमण करते

हैं तभी वे महत्व-पूर्ण शुभाशुभ फल देते हैं। इसी तरह १-५-९-११ भावों से जब गोचर ग्रह भ्रमण करते हैं वे भी अपने शुभाशुभ स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं। परन्तु श. और मं. यदि २-३-६-७-८ इन भावों के स्वामी होकर इन्हीं स्थानों में हों अथवा १-४-५-९-१० इन भावों के स्वामी से अशुभ योग करते हों तो वे अनिष्ट फल अवश्य देंगे इसमें सन्देह नहीं। पंचांग में जो कुण्डलियाँ लिखी जाती है वे पक्ष के आखरी दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा की सूर्योदय कुण्डलियाँ हैं। सूर्योदय कुण्डली का यह अर्थ है कि सूर्य जिस राशि में हो उसी राशि को सूर्य सहित लग्न में लिखकर जो कुण्डली लिखी जाती है उसे सूर्योदय कुण्डली कहते हैं। जन्म राशि से गोचर या जन्मग्रह किस स्थान में स्थित रहने से वे अपना शुभाशुभ फल देते हैं यह नीचे लिखा है। जैसे—

जन्म राशि में गोचर या जन्मग्रह याने सू. मं. श. रा. यदि ३-६-११ स्थान में हों तो पाप ग्रह शुभ फलदायी समझे गये हैं। किन्तु सूर्य २-४-८-१२ भाव में मंगल १-२-४-७-८ भाव में और श. रा. १-२-४-७-१०-१२ भाव में हों तो अशुभफलदायी समझना चाहिये।

जन्म राशि से बुध का २-४-६-८-१०-११ भावों में रहना शुभ और ४-८-१२ स्थान में रहना अशुभ माना गया है।

जन्म राशि से गुरू—२-५-७-९-११ स्थान में रहना

शुभ और ६-८-१२ स्थान में रहना अशुभ माना गया है।

जन्म राशि से शुक्र का १-२-३-४-५-९-१०-११-१२ स्थान में रहना शुभ और ७-१० स्थान में रहना अशुभ माना गया है। इन स्थानों के सिवाय यदि अन्य स्थानों में ये ग्रह यदि स्थित हों तो मिश्रित फल मिलेगा।

ग्रह योग

किसी भी राशि में जब दो या अधिक ग्रह जन्म समय अथवा वर्तमान समय में एकत्रित होते हों उसे ग्रह योग कहते हैं। शुभ ग्रहों के दो अथवा अशुभ ग्रहों के संयोग से शुभ तथा अशुभ फल मिलना स्पष्ट है। किन्तु शुभ और अशुभ ग्रहों के एक ही राशि में स्थित होने से किसी तरह का फल मिलेगा इसका विचार करना यहाँ आवश्यक है। एक ही राशि में भिन्न-भिन्न गुण-धर्म स्वभाव के दो या अधिक ग्रहों का जब संयोग होता है ऐसे समय दोनों में से कौन-सा ग्रह बलवान है यह प्रथम ध्यान में लाना चाहिये और इसमें जो ग्रह अधिक प्रभावशाली हो उसीके अनुसार मनुष्य को फल मिलेगा। यह समझना चाहिये। जैसे सदाचारी मनुष्य के प्रभाव से सदाचारी भी दुराचारी हो सकता है। ग्रहों का बली या निर्बली होना यह इनके उच्च या नीच राशि और अंश पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त अन्य योग भी हैं जिसके लिये ग्रहों की युति या संयोग की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि उनमें आकर्षण शक्ति

होने के कारण वे केवल अपने स्थान में स्थित रहते हुए भी दूसरे स्थान के ग्रहों पर अपना शुभाशुभ प्रभाव दिखा सकते हैं। इन योगों के नाम भिन्न-भिन्न हैं। जैसे—(१) युति-योग (२) द्विर्द्वादश-योग (३) त्रिरेकादश योग (४) केन्द्र-योग (५) सम-सप्तक-योग (६) षडाष्टक-योग (७) नवपंचम-योग।

१—दो ग्रह जब एक ही भाव में हो तो उसे युति-योग कहते हैं।

२—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब द्वितीया या द्वादश स्थान में हो तो उसे द्विर्द्वादश योग कहते हैं।

३—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब तृतीया और एकादश स्थान में हो तो उसे त्रिरेकादश-योग कहते हैं।

४—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो उसे केन्द्र-योग कहते हैं।

५—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब सप्तम भाव में हो तो उसे समसप्तक-योग कहते हैं।

६—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब षष्ठ या अष्टम भाव में हो तो उसे षड़ाष्टक-योग कहते हैं।

७—एक ग्रह से दूसरा ग्रह जब पंचम या नवम भाव में हो तो उसे नवपंचम-योग कहते हैं।

जन्म कुण्डली के विशेष योग याने आरोग्य, संपत्ति, संतति, विद्या-धन-लाभ, स्त्री सौख्य, राजवैभव, श्रेष्ठ अधिकार, व्यापार, नेतृत्व, संकट, शत्रु-पीड़ा, रोग, द्रव्यनाश, गृह-कलह,

अपघात् , मातृ, पितृ, बन्धु, संतति, स्त्रीनाश, अधिकार भ्रष्ट-व्यापार में नुकसान, पराधीनता, लोकोपवाद आदि हैं।

जन्म कुण्डली के आधार पर इनमें से किस प्रकार का फल किस समय पर मिलेगा यह जानना तथा काल निर्णय करना यही इस तरह का वैशिष्ट है। इनका विचार करते समय लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम और लाभ स्थान तथा इनके स्वामी के शुभाशुभ स्थिति का विचार अवश्य करना चाहिये। जन्म ग्रह से गोचर ग्रह संयोग करने पर जब वे अपने अंश पर पहुंचते हैं उसी समय उनके शुभाशुभत्व का फल मनुष्य को मिलना निश्चित है।

ऊपर लिखे हुए योगों में से त्रिरेकादश योग और नव-पंचम योग अत्यन्त शुभ और द्विर्द्वादश योग और युति योग शुभाशुभ केन्द्र योग अशुभ षड़ाष्टक योग अत्यन्त अशुभ और समसप्तक योग ग्रहानुसार शुभ और अशुभ फलदायी है। ग्रहों के युति परस्पर या सयोग से अन्य कई योग प्राप्त हो सकते हैं। जैसे—विद्या योग, ब्रह्मज्ञान योग, बंधन योग, चोर योग, व्यभि-चार योग, वैराग्य योग, दरिद्र योग, धन-लाभ योग, द्रव्य संचय योग, आदि किन्तु इन सब योगों में धन लाभ योग सांसारिरीक मनुष्य के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः इसके विषय में प्रथम ग्रहों को विचार करना हम आवश्यक समझते हैं।

धन-लाभ व द्रव्य संचय योग

धन-लाभ व द्रव्य संचय के विषय यदि मनुष्य जानना

चाहता हो तो जन्म कुण्डली में किन ग्रहों के किस राशि में स्थित रहने से यह फल मिलना संभव है इसका प्रथम विचार करना चाहिये। जैसे—

राशि	ग्रह	राशि	ग्रह
मेष	शु. श.	तुला	सू. मं.
वृषभ	गु. शु.	वृश्चिक	बु. गु.
मिथुन	चं. मं.	धन	शु. श.
कर्क	सू. शु.	मकर	श. मं.
सिंह	बुध	कुम्भ	गुरू
कन्या	चं. शु.	मीन	श. मं.

ऊपर लिखे हुए राशियों में यदि नियोजित दो ग्रह हो तो उत्तम फल—एक हो तो—मध्यम और न हो तो अनिष्ट फल मिलना निश्चित है।

धन लाभ ग्रह और राशि का विचार करते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि ये ग्रह लग्न और जन्म राशि से किस भाव में स्थित है। क्योंकि—

(१) लग्न से शुभ ग्रह ८-६-१२ भाव को छोड़कर किसी भी भाव में हों तभी शुभ फल मिलना संभव है।

(२) जन्म राशि से द्वितीय भाव में शुभ ग्रह अवश्य होना चाहिये।

(३) लग्न या राशि से द्वितीय स्थान में गु. शु. या द्वितीय में शुक्र और चतुर्थ स्थान में गुरू अवश्य होना चाहिये।

(४) लग्न या राशि से पाप ग्रह ३-६-१०-११ भाव में अवश्य होना चाहिये अन्यथा ८-१२ भाव में हो तो विपरीत फल मिलेगा।

सट्टा या लाटरी से धन-लाभ

(१) जन्म कुण्डली में बु. शु. सू. मं. बलवान होना चाहिये।

(२) लग्न या राशि से रवि ३-६-११ भावों में हो तो रेस से फायदा होगा परन्तु इन भावों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होना आवश्यक है।

(३) जन्म लग्न या राशि से रवि २-५-१० भाव में होकर लग्नेश या चन्द्र से युक्त हो और इन पर अशुभग्रहों की दृष्टि न हो तो विशेष लाभ होगा।

(४) सू. मं. बु. शु. ये ग्रह अपने या उच्च राशि में होकर २-४-५-९-१०-११ स्थान में हो तो सट्टा से निरंतर लाभ होगा। और इन भावों में यदि चं. मं., र. चं, र. बु, र. शु, र. मं, र. बु, मं. शु, लग्नेश से युक्त व दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो विशेष लाभ होगा।

दरिद्र योग

(१) शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण को छोड़कर अन्य भाव में हो और पाप ग्रह ३-११ में हों।

(२) ५-९-१०-११ भाव के स्वामी निर्बली हों।

(३) बु. गु. शु. केन्द्र में न हो और मंगल दशम भाव में न हो।

(४) केन्द्र में शुभग्रह न हो अथवा एक भी ग्रह स्वराशि मूल त्रिकोण या उच्च राशि का न हो।

(५) तीन ग्रह नीच का हों।

(६) सब ग्रह चार राशि में हों।

(७) केन्द्र में पाप ग्रह हों।

(८) ७-८-९-१० में सब ग्रह हों।

(९) राहु केतु को छोड़कर सब ग्रह लगातार तीन राशि में हों।

(१०) या दो राशि में हों।

(११) केन्द्र व धन भाव में पापग्रह हों।

(१२) चन्द्र मंगल परस्पर समसप्तक भाव में हों।

(१३) धन भाव में केवल शनि हो तो धन का चोरी से नाश।

बैराग्य योग

(१) चतुर्थ भाव में बुध व दशम भाव में शनि हो तो मनुष्य विरक्त स्वभाव का होगा।

(२) दशमेश शनि से युक्त होकर दशम भाव में ही हो।

(३) दशम भाव में चं. बु. हो व शनि से दृष्ट हो।

(४) १-९-११ राशि का केतु व्यय भाव में हो।

वेदान्त विद्या योग

केन्द्र या त्रिकोण में यदि गुरू स्थित हो तो मनुष्य वेदान्त विषय प्रिय होता है।

ब्रह्मज्ञान योग

स्वगृह या उच्च राशि का गुरू यदि १-६-८-१०-११-१२ भाव में हो तो मनुष्य ब्रह्मज्ञानि होगा।

चोर योग

(१) बु. मं. छठवें भाव में बलवान होकर शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य चोर होगा।

(२) लग्न में मकर का मंगल हो और सप्तम भाव में राशि हो तो राजदंड होगा—

(३) लग्नेश पाप ग्रह से युक्त होकर नीच भाव में और तृतीयेश लाभ भाव में हो तो चोर योग।

(४) लग्नेश पाप ग्रह होकर लग्न में पाप ग्रह स्थित हो व तृतीयेश नीच का हो तो मनुष्य चोरों का गुरू होता है।

(५) लग्नेश व तृतीयेश नीच राशि व भाव में होकर नीच ग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो चोर योग।

बंधन योग

१-२-५-९-१२ भाव में पापग्रह हो या पापग्रह की दृष्टि हो तो बन्धन योग समझना किन्तु इन भावों पर यदि गुरू की दृष्टि हो तो सब दुःखों का नाश होगा।

व्यभिचार योग

(१) सप्तम भाव में मंगल हो और उसपर पापग्रह की दृष्टि हो।

(२) शुक्र मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो।

(३) सप्तम भाव में शुक्र हो और शनि से दृष्ट हो।

(४) सप्तम भाव में श० मं० रा० स्व या उच्च राशि के हो।

(५) १-२-५-६-७ भाव के स्वामी शुक्र या पापग्रह से युक्त हों।

(६) लग्नेश व षष्ठेश शनि मंगल से युक्त हो तो पर स्त्री रत।

(७) २-७-१० भाव के स्वामी चतुर्थ भाव में हो तो पर स्त्री रत।

(८) चन्द्र पापग्रह से सप्तम भाव में युक्त व दृष्ट हो।

(९) सप्तमेश मं० से युक्त व दृष्ट हो।

(१०) सप्तमेश पुरुष ग्रह होकर पापग्रह से युक्त व दृष्ट।

ऊपर लिखे हुए योगों के अतिरिक्त कई योग हैं जिनका यहाँ सविस्तार वर्णन करना अशक्य है।

द्वादश भाव विचार

कुण्डली के द्वादश स्थान जहाँ मेषादि द्वादश राशि अंक रूप में स्थित होते हैं उन्हें भाव कहते हैं। इन भावों से अनेक बातों का बोध होता है परन्तु नित्योपयोगी बातों का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है।

मारक

ऊपर लिखे चक्र में द्वादश भाव है और राशि भी बारह है अतः प्रत्येक भाव में प्रत्येक राशि का स्थित होना स्वाभाविक है परन्तु इन राशियों के स्वामी ग्रह केवल सात हैं इसलिये ग्रहों का प्रत्येक भाव में स्थित होना असंभव है और ऐसी स्थिति में अपने २ भाव (घर) प्रबन्ध नौकरों के जिम्मे किये गये बिना उन्हें अन्य मार्ग नहीं। हम पहले लिख चुके हैं कि सूर्य और चन्द्र को छोड़कर बाकी के पांच ग्रह दो-दो राशि के स्वामी हैं। जैसे—द्वादश राशि और सप्तग्रह का विचार करने के पश्चात् राहु और केतु ये दो उपग्रहों का भी विचार करना आवश्यक है। मिथुन का राहु और धन का केतु उच्चका है और कन्या का राहु मीन का केतु स्वगृह के समझे जाते हैं—

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
५	४	१-८	३-६	८-१२	२-७	१०-११

द्वादश भाव तथा राशि के स्वामी ग्रह यदि अपने भाव में स्थित न रहें और उनकी दृष्टि भी न रही तो उस भाव का फल नौकर (राशि) के मर्जीनुरूप मिलना अत्यन्त स्वाभाविक है। जिसका अनुभव इस देश के लोगों को पिछले २०० वर्ष से मिल रहा है राजा के गैरहाजरी में राशि का फल देना या मिलना यथायोग्य समझना चाहिये। परन्तु जिस तरह अपने राज्य पर राजा का अपने घर पर मालिक की दृष्टि का लाभ प्रजा या कुटुम्बियों को मिलता है। उसी तरह ग्रहों की दृष्टि

का फल उनके गुण-धर्म स्वभावानुसार मनुष्य को मिलना स्वाभाविक है।

जन्म-कुण्डली यह जन्म समय आकाशस्थ ग्रहों की गति वे स्थिति तथा उनके शुभाशुभ स्थिति के अनुसार मानवी जीवन में होनेवाले शुभाशुभ घटनाओं का एक नक्शा है जिसके आधार पर मनुष्य अपने आयुष्य के सुख दुःखादि विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यहाँ पर यह विचार करना आवश्यक होगा कि द्वादश भावों का वर्गीकरण व शुभाशुभत्व की योजना शास्त्रकारों ने शास्त्रीय पद्धति के अनुसार जो की है उसका व्यवहारिक दृष्टि से कितना अधिक महत्व है और इस पर से उनके कुशलता तथा दूरदर्शीता का पाठकों को पूर्ण परिचय मिलेगा इसमें सन्देह नहीं। मानवी जीवन सुखमय होने के लिये संसार में जिन साधनों की अधिक आवश्यकता है उसी क्रम से उन भावों को महत्व दे उन्होंने इन भावों का वर्गीकरण किया है यह सहज ध्यान में आवेगा। जैसे—(१) इस जगत् में सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को शारीरिक सुख, माता पिता व भार्या इन चार साधनों की अत्यन्त आवश्यकता है। इसलिये शास्त्रकारों ने कुण्डली के १-४-७-१० इन चार भावों को श्रेष्ठ व शुभ कहा है इसके साथ ही यथार्थ सुख प्राप्ति के लिए इन चारों का एकत्रित रहना जितना आवश्यक है उतना ही कुण्डली में इन चारों भावों का एकत्रित रहना है अतः इन्हें केन्द्रभाव की संज्ञा दी गई।

(२) शारीरिक व सांसारिक सुख प्राप्त होने के पश्चात् मानसिक सुख की भी उतनी ही आवश्यकता है और यह सुख प्राप्त करने के लिए बुद्धि और अवकाश दोनों की अधिक आवश्यकता है। अतः पंचम व नवम इन दो भावों को द्वितीय श्रेष्ठ व शुभ भावों की संज्ञा दी गई और इन्हें त्रिकोण भाव कहते हैं।

यदि कोई ऐसा प्रश्न करे कि बुद्धि (पंचम) भाव के साथ अवकाश (नवम) भाग्य भाव को समान महत्व देने का क्या कारण। इस पर हमारा यह उत्तर है कि मनुष्य की बुद्धि के विकास के लिए यदि उसे अवकाश ही न मिले या न दिया जाय तो क्या वह उस बुद्धि का यथार्थ उपयोग कर सकेगा। अर्थात् नहीं यही कहना पड़ेगा। इसी तरह अवकाश के होते हुए भी यदि मनुष्य में बुद्धि हो न हो तो क्या उस अवकाश का यथार्थ उपयोग कर सकेगा। अर्थात् नहीं। तात्पर्य इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध इतना निकट है की एक के सिवाय दूसरे का उपयोग मनुष्य को होना असंभव है। अतः शास्त्रकारों ने उन्हें समान महत्व जो दिया वह सर्व स्तुत्व है। केन्द्र और त्रिकोण इन छः भावों को इस तरह श्रेष्ठ माना है और इनके स्वामी इन स्थानों में से किसी भी एक स्थान में हो तो वह अत्यन्त व शुभ फलदायी योग समझा जाता है।

पाराशर ऋषि ने कहा है कि—लक्ष्मी स्थान त्रिकोणं च विष्णु स्थानं च केन्द्रकम्॥ तयो सम्बन्ध मात्रेण राज योगादिकं

भवेत् ।।१।। अर्थात् त्रिकोण यह लक्ष्मी का स्थान और केन्द्र यह विष्णु का स्थान है। और इनके स्वामी का परस्पर सम्बन्ध या योग इन्हीं भावों में से किसी एक भाव में हो जाय तो वह श्रेष्ठ शुभफलदायी व राजकारक योग समझा जाता है। परन्तु केन्द्र के चार स्थान (१-४-७-१०) में से सप्तम स्थान यह मारक स्थान होने के कारण केवल चतुर्थ और दशम (४-१०) स्थान के स्वामी श्रेष्ठ माने गये हैं। यह नीचे लिखे हुए श्लोक (पराशरी) से विदित होगा।

पंचमं नवमं चैव विशेषं धन मुच्यते।
चतुर्थं दशमं चैव विशेषं सुख मुच्यते ॥
चत्वारो राशयो भद्रा केन्द्र कोण शुभावहाः।
तेषां संयोग मात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभोभवेत् ॥१॥

अर्थात ५-९-४-१० इन चार भावों के स्वामी का परस्पर सम्बन्ध व योग होने से ही पहिले लिखे हुए श्लोक का फल मिलेगा।

त्रिकोण भाव (५-९) से पूरा क्रम और लाभ भाव अर्थात् (३-११) निकट होने तथा इनका परस्पर सम्बन्ध होने के कारण इन दो भावों का विचार करना आवश्यक है। ३-५-९-११) इन चार भावों का संबन्ध केन्द्र भाव के सम्बन्ध समान इतना निकट है कि वे परस्पर दूर दिखाई देते हुए भी एक के सिवाय शेष तीन भाव के स्वामी अपना सामर्थ्य दिखाने के लिये असमर्थ हो जाते हैं। जैसे— मानलो कि मनुष्य में

बुद्धि है परन्तु क्या अवकाश मिलने पर पराक्रम किये बिना वह उससे लाभ उठा सकता है। उसी तरह मानलो कि मनुष्य में पराक्रम की शक्ति है परन्तु क्या बुद्धि व अवकाश के सिवाय उससे वह लाभ उठा सकता है। इस तरह किसी भी दृष्टि से विचार किया जाय तो वह स्पष्ट सिद्ध होता है कि बुद्धि अवकाश व पराक्रम के सिवाय किसी भी वस्तु का लाभ यह होना असम्भव है। अर्थात् पराक्रम यह बुद्धि पर और लाभ यह अवकाश (भाग्य) पर निर्भर है यह स्पष्ट सिद्ध होता है। तात्पर्य पराक्रम और लाभ ये दोनों भाव परावलंबी है अतः शास्त्रकारों ने इन्हें सामान्य शुभाशुभ (उपचय) भाव की संज्ञा दी तो वह यथार्थ है।

मनुष्य के सुख के लिये केन्द्र व त्रिकोण ये भाव अत्यन्त आवश्यक है और ३-११ ये भाव अत्यन्त उपयोगी है। अब बाकी रहे हुए ६-८-१२ इन तीन भावों का प्रथम विचार करना चाहिये। षष्ठ स्थान रोग, अष्टम स्थान यह मृत्यु और द्वादश स्थान यह व्यय स्थान है। मानवी सुख के परम शत्रु रोग, खर्च व मृत्यु हैं अतः शास्त्रकारों ने यदि इन तीनों भावों को अत्यन्त अशुभ भाव की संज्ञा दी तो यह भी योग्य है ऐसा समझना चाहिये। रोग भाव से प्रत्येक प्रकार के रोग का बोध जिस तरह होता है। या अष्टम भाव से किसी भी कारण से मृत्यु का बोध होता है। इसी तरह द्वादश भाव से हर प्रकार के खर्च या व्यय का बोध होता है अर्थात् प्रथम भाव में एकादश

भाव के खर्च या व्यय का बोध इस भाव से किया जाता है। इस तरह ग्यारह भावों का विचार करने के पश्चात् द्वितीया धन भाव के सम्बन्ध में विचार करना आवश्यक है क्योंकि इस भाव में धन संचय का बोध होता है। परन्तु धन का संचय होना यह मनुष्य के शरीर सामर्थ्य, माता, पिता, भार्या, बुद्धि, अवकाश, पराक्रम और लाभ पर अवलंबित है। इतना ही नहीं किन्तु रोग व मृत्यु सम पीड़ा आदि के संबंध से खर्च होने के पश्चात् जो शेष रह जाय तभी द्वितीय (धन संचय) भाव का फल मनुष्य को मिलना संभव है अन्यथा अशक्य है। इन सब बातों का कुशलतापूर्वक विचार करने के पश्चात् शास्त्रकारों ने इस भाव को अत्यन्त परावलंबी व अशुभ भाव की संज्ञा दी तो यह सर्वथा योग्य है ऐसा समझना चाहिये।

ऊपर लिखे अनुसार द्वादश भावों की शास्त्रीय योजना व व्यवहारिक उपयुक्तता का विवेचन संपूर्ण करने के पूर्व यह भी अवश्य ध्यान में लाना चाहिये कि शास्त्रकारों ने द्वितीय (धन) और सप्तम (भार्या) इन दोनों भावों को मारक स्थान की संज्ञा दी या उन्हें मारक भाव के नाम से संबोधित किया इसका क्या कारण है।

वास्तव में लग्न से अष्टम स्थान यह आयुमर्यादा का स्थान है और अष्टम स्थान याने तृतीय स्थान यह भी आयुमर्यादा का स्थान है। आयुमर्यादा की समाप्ति निश्चित है अतः अष्टम स्थान को व्यवहारिक दृष्टि से मृत्यु स्थान कहने की प्रथा पड़

गई है परन्तु आयुमर्यादा कायम रखने या बढ़ाने के लिये पराक्रम (३) भाव की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः इन दोनों भावों का परस्पर संबन्ध निकट है और इन भावों के द्वादश भाव याने सप्तम और द्वितीय भाव व्यय भाव अर्थात् आयुमर्यादा का व्यय या कम करने के भाव बन बैठे है। शास्त्रकारों इसी कारण से द्वितीय और सप्तम भाव को यदि मारक भावकी संज्ञा दे अत्यन्त अशुभ समझा तो उनका यह निर्णय यथा योग्य ही है यह निर्विवाद है।

इसके अतिरिक्त दूसरे दृष्टि से विचार करने पर भी यही सिद्ध होता है कि द्वितीय धन और सप्तम भार्या ये दोनों भाव यथार्थ में मारक भाव हैं क्योंकि मनुष्य के उत्कर्ष व सुख के लिये धन और स्त्री ये ही अन्त में मनुष्य के दुःख और मृत्यु के मूल कारण बन बैठते हैं यह भी निर्विवाद है। कनक और कान्ता ने अपने मोह पास से जगत् को इस तरह व्याप रक्खा है कि प्रत्येक मनुष्य इनके जालों में सदैव फँसा रहता है। इन दोनों के माया की जड़ इस संसार में इतनी गहरी है कि विरक्त मनुष्य को भी इन्होंने आकर्षित कर अपने कब्जे में रखा है तो सांसारिक मनुष्य की क्या कथा कहना। इन दोनों बहिनों की लीला अगाध है, अगाध है, अतर्क्य है, अद्भुत है, जिसका वर्णन करने के लिये एक स्वतंत्र ग्रन्थ ही निर्माण करना पड़ेगा। अतः अधिक स्वतंत्र लिखकर यहाँ संक्षिप्त में लिखना ही योग्य होगा। कारण कि धन प्राप्ति के लिये मनुष्य इस

जगत् में ऐसा कौन-सा कर्म है जिसको वह नहीं करता, चाहे वह पाप कर्म हो या पुण्य। धन प्राप्ति के लिये मनुष्य इस जगत् में ऐसा कौन-सा मार्ग है जिसको कि वह नहीं स्वीकार करता चाहे वह भला हो या बुरा। धन प्राप्ति के लिये मनुष्य इस दुनियां में ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ पर वह नहीं जाता, चाहे वह देश हो या परदेश। धन प्राप्ति के लिये मनुष्य इस संसार में ऐसा कौन-सा पात्र है जिसकी मर्जी संपादन करने का प्रयत्न नहीं करता, चाहे व उत्कृष्ट पुरुष हो अथवा निकृष्ट। सारांश मनुष्य धन के लिये चाहे जो कर्म हो, मार्ग हो, स्थान हो या पात्र हो स्वीकार करने के लिये सदैव तत्पर हो जाता है। इसीसे यह सिद्ध होता है कि लक्ष्मी की शक्ति मनुष्य की शक्ति से कई गुना अधिक है जिसके कारण मनुष्य पर उसका प्रभाव पड़ वह उसका एक नम्र दास बन जाता है। इसी तरह स्त्री चरित्र भी अवर्णनीय है। वर्त्तमान युग में इस देश में स्त्री के कारण ही फी सदी नब्बे फांसी के मुकदमे अदालतों में चल रहे हैं, स्त्री के कारण ही सार्वभौम राजाओं ने राज्यपद सुखों को तिलांजलि दी, नौजवानों ने जल समाधि ली, विषयांध लोगों ने फांसी के तख्ते पर चढ़ने की प्रतिज्ञा की स्त्री के कारण ही जन्म देनेवाले माता, पिता दूर कर दिये जाते हैं, दुर्जन लोग आप ही नजदीक किये जाते हैं नेक सलाह देनेवाले सज्जन दुश्मन समझे जाते हैं। ऐसी अनेक दुर्घटनाओं से यह सहज सिद्ध होता है कि कनक के समान कांता में भी अद्भुत् शक्ति है जिसका प्रभाव

मनुष्य पर पूर्ण रूप से पड़कर विद्वान भी मूर्ख कहलाने लगता है। तात्पर्य इन दोनों बहिनों ने मनुष्य पर अपना प्रभाव इतना अधिक जमाया है कि अधिकांश लोगों की नामों निशान मिटा दिया। इतना ही नहीं किन्तु कई राष्ट्रों को कार्य क्षमता से बंचित कर सदैव के लिये परतंत्रता की जंजीर में फंसा रक्खा है इन कारणों से कनक और कान्ता इन दोनों भावों को शास्त्रकारों ने यदि मारक संज्ञा से आभूषित किया तो यह उनके प्रगल्भ विचार व दूरदर्शीपना का द्योतक है यह प्रत्येक समंजस मनुष्य को मान्य करना पड़ेगा। परन्तु इसके साथ ही यहाँ यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि तृतीय (पराक्रम) और अष्टम (आयुमर्यादा) इन दोनों भाव के स्वामी यदि द्वितीय और सप्तम भाव के स्वामी से अधिक बलवान हों तो आयुमर्यादा घटाने में इनका प्रभाव पड़ना असंभव है अर्थात् कनक और कान्ता के प्रभाव से यदि मनुष्य का पराक्रम अधिक हो तो वह उनपर विजय प्राप्त कर अनेक (इहलौकिक व परलौकिक) संकटों से बचते हुए अपनी जीवनयात्रा इस मृत्यु लोक में शांति और सुख से व्यतीत कर सकता है ऐसा अनेक विद्वान् व कर्मयोगियों ने अपने जीवन चरित्र से जगत् को सिद्ध कर दिखाया है और जिनका स्मरण संसार के समंजस लोग नित्य कर रहे हैं।

कुण्डली के द्वादश भावों के शास्त्रोक्त नाम नीचे लिखे अनुसार है। जैसे—

१-४-७-१० केन्द्र स्थान ५-९ त्रिकोण स्थान ३-६-१०-११ उपचय ६-८-१२ त्रिक स्थान २-५-८-११ पणफर ३-६-९-१२ आपोक्लिम् २-७ मारक ४-८ चतुरस्र।

द्वादश भाव से अनेक बातों का ज्ञान

(१) शरीर सुख, आरोग्य, रूप-रंग, गुण, स्वभाव, मानसिक स्थिति, सत्यासत्य आचरण, आयुष्य, शरीर का बांधा, महत्वाकांक्षा, इच्छा, मन की स्थिरता, सुखादि।

(२) मनुष्य की अधिक स्थिति, धन नाश वा संचय, कौटुम्बिक सुख-दुःख, नेत्र, वाणी।

(३) पराक्रम, महतकार्य, भाई-बहिन, नौकर, औषधि, समीप का प्रवास, मित्रता, मन की रूचि, इच्छा।

(४) जायदाद, बाहन सुख, चाकर, मातृ सुख व स्वभाव पूर्वार्जित धन, गांव-घर, भूमिलाभ, उत्कर्ष, कीर्त्ति, परोपकार के कार्य, आयु की आखरी समय, सब प्रकार के सुखों का विचरा।

(५) विद्या-बुद्धि संतति प्राप्ति व सुख-दुःख ग्रन्थ कर्त्तव्य अकस्मात् धन-लाभ, सट्टावाजी, लाटरी गर्भ।

(६) रोग, चोरों का भय, अपमान, कारक प्रसंग मामा, दुष्ट कार्य, व्रण, कुष्ठ, मनस्ताप, शत्रु पीड़ा।

(७) स्त्री का रूप-रंग-गुण-धर्म-स्वभाव, वृत्ति, व्यभिचार, व्यापार से लाभ या हानि, सिर का व्यापार, खोया हुआ धन-लाभ या दीवानी मुकदमे, स्वतंत्र व्यापार, मूत्राशय, धात्वाशय, स्त्री लाभ, एक पत्नीव्रत।

(८) लाटरी, घूसखोरी, जमीन, गांव, नौकरी से लाभ आयुष्यमर्यादा, अपमृत्यु, अपघात, मृत्यु-समपीड़ा।

(९) भाग्योदय काल समुद्रपर्यत्न, ईश्वर-भक्ति, सामर्थ्य, धार्मिक वृत्ति, पुण्यकर्म, मंत्र-सिद्धि तप, दातृत्व।

(१०) पिता का स्वभाव, राजानुकूलता, राज्य, राज-सन्मान, यशापयश, प्रवास, लोगों पर छाप ऐश्वर्य काल, उन्नति व्यापार, उच्चपदवी, सन्मान, तरक्की, सत्ताधिकारी, उद्योग-धंधा, उपजीविका।

(११) मित्र, सुख-लाभ. समाज में श्रेष्ठ, बड़े भाई का सुख राज्य लाभ, वस्त्र, अलंकारादि लाभ, कुटुम्बियों का सुख-मान प्रतिष्ठा।

(१२) शारीरिक आपत्ति, धन का व्यय, शत्रु से हानि, राजदंड, ऋण, भ्रष्टता, कैद, कलह रोग शत्रु।

ऊपर लिखे हुए द्वादश भाव के फलों से यह ज्ञात होगा कि एक ही भाव से कई बातों का विचार किया जा सकता है किन्तु समय पर इनका उपयोग करना या न करना यह प्रत्येक मनुष्य के बुद्धि स्मरण शक्ति व तर्क ज्ञान और फलित निर्णय करने के पद्धति पर सर्वस्व अवलंवित है। तथापि अनुभव के वाद या अनेक कुण्डलियों का सूक्ष्म निरीक्षण और परीक्षण करते हुए यह ज्ञान आप ही आप ध्यान में आ सकता है। द्वादश भाव के सामान्यतः फल उपर लिखे अनुसार है। परन्तु इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्रत्येक मनुष्य को मिलना या न मिलना

यह ग्रहों की स्थिति व दृष्टि युति आदि पर निर्भर है। परन्तु किसी भी प्रश्न का विचार करते समय पाठकों को यह अवश्य ध्यान में लाना चाहिये कि जन्म कुण्डली में उस प्रश्न के भाव की, भाव कारक ग्रह की, कारक ग्रह की और गोचर ग्रह की क्या स्थिति है। इन सब बातों का विचार कर फलित निश्चय करने से भविष्य कथन पर पूर्ण भरोसा होना निश्चित है।

द्वादश भाव विचार के सामान्य नियम

कुण्डली के द्वादश भावों में शुभ और अशुभ ग्रहों के स्थित होने से मनुष्य को किस तरह शुभाशुभ फल मिलता है यह ऊपर लिखे हुए फलों से पाठकों के ध्यान में सहज आ सकता है किन्तु इन भावों में से किन भावों में ग्रह स्थित होने से वे बली मध्यमबली और निर्बली कहलाते हैं यह लिखना यहाँ पर अत्यन्त आवश्यक होगा। जैसे —

बली ग्रह

(१) शुभग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो तो वे बलवान् समझे जाते हैं।

(२) कोई भी ग्रह ३–११ भाव में बलवान समझे जाते हैं परन्तु सौम्य ग्रह से क्रूर ग्रह पराक्रम करने के लिये अधिक योग्य समझे जाने के कारण वे इन स्थानों में अधिक बलवान समझे जाते हैं।

(३) शुभ ग्रह का धन स्थान में रहना अधिक लाभदायक समझा जाता है, क्योंकि वे वहाँ बलवान रहते हैं।

(४) शुभ ग्रह से पाप ग्रह युक्त वा दृष्ट हो तो वे बलवान कहलाते हैं।

मध्यमबली

(१) पाप ग्रह यदि ५-९ त्रिकोण भाव में स्थित हो तो वे मध्यमबली समझे जाते हैं।

निर्बली

(१) शुक्र के सिवाय कोई भी ग्रह यदि ६-८-१२ भाव में स्थित हो तो वे निर्बली कहलाते हैं।

(२) कोई भी ग्रह यदि शत्रु ग्रह से तथा रवि से युक्त हो तो वे निर्बली कहलाते हैं।

इसके अतिरिक्त

(१) किसी भी स्थान के स्वामी (ग्रह) अपने भाव से यदि १-४-७-१०-५-९ भावों में स्थित हो तो उस भाव संबंधी शुभ फल देते हैं।

(२) गुरू जिस भाव में स्थित हो उस भाव का फल अशुभ समझा जाता है किन्तु जिस स्थान पर उसकी दृष्टि है वह स्थान का फल शुभ समझा जाता है।

(३) शनि जिस स्थान में स्थित हो उस भाव को सुरक्षित

रखता है किन्तु जिस स्थान पर उसकी दृष्टि हो उस स्थान के फल का नाश करता है। गुरू और शनि ये दोनों ग्रहों के स्थान की अपेक्षा दृष्टि का अधिक महत्व है।

(४) किसी भी भाव में यदि शुभग्रह पाप या शत्रु से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह अशुभफलदायी समझा जाता है। और अशुभग्रह यदि शुभग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो शुभफल देता है और यदि मित्र ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो उच्च फल देता है चाहे वह शुभ हो या अशुभ।

(५) कोई भी ग्रह यदि अपने राशि या भाव में स्थित हो तो उस भाव का तथा दृष्टि का अधिक उच्च फल मिलता है।

(६) ग्रह यदि परस्पर के राशि में हो तो वे जिस स्थान में स्थित हो उस भाव का पूर्ण फल मिलता है।

(७) किसी भी भाव में ग्रह न हो अथवा ग्रह की दृष्टि न हो तो उस भाव का फल राशि के गुण धर्मानुसार मिलेगा।

(८) राशि के फल के अपेक्षा भाव और दृष्टि का फल अधिक बलवत्तर समझा जाता है।

ऊपर लिखे हुए भावों का विचार करने से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि मनुष्य को ग्रहों के व्यक्तिगत गुणो की अपेक्षा ये जिस भाव में स्थित हो उस भाव के शुभाशुभ स्थिति के अनुसार फल मिलता है। अतः फलित निर्णय करते समय स्थान महात्म्य का प्रथम विचार करना चाहिये यह निर्विवाद है।

द्वादश भाव शुभाशुभ ग्रह के सामान्य फल

कुण्डली के द्वादश भावों में पाप ग्रह और शुभग्रह के स्थित होने से प्रत्येक मनुष्य को इन ग्रहों के भिन्न २ फल किस तरह मिलते हैं इसका यहाँ संक्षिप्त मे वर्णन करना आवश्यक है। जैसे—

१ तनुःस्थान

शुभग्रह—शरीर सुख, आरोग्य, ऐश्वर्य, मानसिक शक्ति, ऊंचाई मितभाषी, रोगों का नाश, भाग्य वृद्धि, तीव्र बुद्धि, शान्त स्वभाव, सुख व वैभव भोगने वाला।

पापग्रह—शारीरिक पीड़ा, रोग युक्त, आलसी, दुर्बुद्धि, दुर्गुणी-गर्विष्ट, दुःखदायी।

२ धन स्थान

शुभग्रह—श्रीमान कुल में जन्म, बड़ा कुटुम्बी, प्राप्त वर्गों पर प्रेम दृष्टि रखनेवाला, वक्ता, भाग्यशाली, द्रव्य संचय करने वाला, धनी-मानी।

पापग्रह—द्रव्य की अड़चन, प्राप्तवर्ग से विरोध, आपत्ति, कपटी, मिथ्याभाषी, दृष्टि विकार, नेत्र पीड़ा, द्रव्यनाश, बोलने में दोष, दरिद्र, दुःखी।

३ सहज स्थान

शुभगृह—पराक्रमी, साहसी कार्य में यश, उद्योग धन्धों में यश, विद्या की रुचि, उत्तम हस्ताक्षर, भाई बहन का सुख, प्रवास में सुख वो लाभ मिष्टान्न प्रिय, धर्म पर श्रद्धा, शत्रु नाश करनेवाला।

पापगृह—कार्य में बाधा, प्रवास में क्लेश, कलह, तामसी मित्र बन्धु से हानि व अनबन, साधारण हस्ताक्षर।

४ सुहृद स्थान

शुभगृह—स्थावर संपत्ति की प्राप्ति, गांव-घर, जमीन, बगीचा, वाहनादि का सुख, ऐश्चर्य, आराम; दिलदार, संतोषी-मन, स्थिति, दयालु, कीर्त्ति, यश, धन व सुख, कुलाभिमानो, सुखभावी, मातृ सुख, नौकर सुख, प्रतिपालक।

पापगृह—सुख हीन, अस्वस्थ्य मन, निरंतर क्लेश, मन का कपटी, स्वार्थी, दूसरों के उत्कर्ष में दुःख, कष्ट से इष्ट कार्य की सिद्धि, वाहन से अपघात, स्थावर संपति लाभ परन्तु कम सुख, आदा विरोध, मातृ सुख हीन, संशयी, चंचल स्वभाव, नौकर सुख नाश व त्रास।

५ सुत स्थान

शुभगृह—बुद्धिमान, चतुर, विद्या में प्रवीण, राजदरबार में तीक्ष्ण बुद्धि व गहन विषयों में सुलभ करने में प्रवीण, श्रेष्ठ

अधिकार, कीर्तिमान, कुलदीपक, संतति से सुख, मानसिक हेतु पूर्ण हो, द्रव्य लाभ।

पापगृह—विद्या में अपयश, विद्याभिमानी, संतति का नाश व दुःख, अविचारी संतति, चिन्ता ग्रस्त, बुद्धिमान, चंचल वृत्ति।

६ रिपु स्थान

शुभगृह—लोगों की प्रतिकूलता, सज्जनों से विरोध, त्रास, अशक्त प्रकृति, शत्रुओं से त्रास व हानि, उदार दिल, परोपकारी, लोकोपयोगी; कार्य की उत्कंठा, कार्य कुशल, मातुल पक्ष का सुख।

पापगृह—शरीर स्वास्थ्य उत्तम, निश्चयी, तामसी, धाड़सी, उग्र स्वभाव, शत्रु का नाश, रोगों का नाश, गुप्त शत्रु से त्रास, कठिन प्रसंग का सामना करनेवाला, लेकिन स्वार्थी, मातृ पक्ष के सुख का नाश।

७ जाया स्थान

शुभगृह—वैवाहिक स्त्री सुख, संसार दक्ष पतिव्रता स्त्री का सुख, गुणवान, रूपवान, सुन्दर व सुस्वरूप, भार्या, उच्च कुल के स्त्री से विवाह, व्यापार में भागीदार से लाभ, दीवानी मामलों में यश, देन लेन के व्यवसाय में लाभ, क्रय, विक्रय, मैं कुशल, वाद-विवाद में प्रवीण, प्रवास में सुख, स्वतंत्र वृत्ति।

पापगृह स्त्री सुख रहित, स्त्री संबंधी कलह, त्रास, स्त्री का स्वभाव उग्र, मानी, संसार सुख के विषय में चिन्ता, प्रवास में कष्ट व्यभिचारी, परस्त्री गमन, अदालती मामले में अपयश द्रव्य-हानि, स्वतंत्र व्यापार में नुकसान, वहुभार्या योग, स्त्री को अरिष्ट, अन्त में पश्चाताप व दुःख, अरिष्ट, मृत्यु।

८ मृत्यु-स्थान

शुभगृह—विवाह के पश्चात् स्त्री के तरफ से स्थावर स्टेट लाभ ट्रस्टी, स्त्री स्टेट पर अधिकारी के नाते द्रव्य लाभ, श्वशुर की संपति स्थिति उत्तम, शरीर प्रकृति साधारण, स्त्री धन-लाभ, आकस्मिक धन लाभ।

पापगृह—बुरे कर्मों से द्रव्य की प्राप्ति, पर द्रव्यापहारी, कौटुम्बिक व राजकीय संकट, दारुण प्रसंग, धन्धे में हानि, गृह कलह, लोगों में वैमनस्य, मान हानि कर्ज बाजारी व्यसनाधीन।

९ धर्म-भाग्य-स्थान

शुभगृह—अनुकूल दैव, भाग्य व ऐश्वर्य की प्राप्ति, दूर का प्रवास व लाभ, नाना प्रकार के सुख, धर्म पर श्रद्धा पुण्य कर्म करनेवाला, कीर्तिमान, कुटुम्ब के लोगों का सुख स्वदेश में भाग्योदय।

पापगृह—प्रदेश में भाग्योदय, सदा अड़चन, परिस्थिति

में बार-बार फेर बदल, भाई से विरोध, मन को संताप ऐश्वर्य प्रतिकूल ।

१० कर्म स्थान

शुभग्रह—सत्कर्मी, नौकरी व उद्योग धन्धे में अधिकार, मान, सन्तान, राजाश्रय, पदवी प्राप्त, महत्त्वपूर्ण कार्य में यश, राजा व समाज में मान्यता, श्रेष्ठ सांपत्तिक स्थिति, समाज कार्य का नेता, ऐश्वर्य, स्वपराक्रम से धन लाभ ।

पापग्रह—पितृ सुख का नाश, कार्य में अपयश, श्रेष्ठ अधिकारी का विरोध, हमेशा व्यवसाय में फेर बदल, अपकीर्ति उपजीविका साधन के सम्बन्ध से हमेशा चिन्ता, नुकसानी के प्रसंग, समाज विरोधी, राजा से दूषण, उच्च स्थिति से नीच स्थिति का प्राप्त होना ।

११ लाभ स्थान

शुभग्रह—श्रेष्ठ अधिकार, उद्योग धंधा व नौकरी से सुख सांपत्तिक योग प्रबल, राजा लोगों से मैत्री व लाभ आप्तवर्ग, बड़े भाई, मित्र, नौकर का सुख, निश्चयी उचित काम में यश प्राप्त करनेवाला अनेक प्रकार से तथा सम्बन्धियों से द्रव्य प्राप्ति ।

पापग्रह—पाप पुण्य की परवाह न कर द्रव्य प्राप्ति करने में प्रवीण, दूसरों पर छाप रखनेवाला, अधिकारी अनुकूल, नौकर का त्रास, बड़े भाई का अनिष्ट, कलह, कौटुम्बिक व मित्र की सुख; कमी, सामान्य भाग्य ।

१२ व्यय स्थान

शुभगृह—शुभ कार्य में द्रव्य का खर्च, ग्रन्थों का वाचन व चिंतन, शत्रु पीड़ा, संकट का निवारण, अधिकार में विघ्न, धन की कमी, मानसिक तथा शारीरिक स्थिति असंतोषजनक परन्तु अन्त में यश प्राप्ति व पूर्ववत् स्थिति की प्राप्ति।

पापगृह—द्रव्य सम्बन्धी चिन्ता, हानि, उद्योग व्यवहार में अपयश, बुरे कामों में धन का नाश, धन का फजूल खर्च, अधिकार व मान्यता में कमीपना, अपमान, अपकीर्ति, ऋण-ग्रस्त स्थिति, शरीर को पीड़ा, बिमारी, श्रेष्ठ अधिकारी प्रति-कूल, अनेक संकट, ग्रह निर्बली हो तो वृथापवाद, शत्रु से हानि, राजदंड, कैद, कार्य में अपयश, आयुष्य को धोखा, अधिकारी स्त्री आदि।

ऊपर लिखे हुए फलों में शुभाशुभ ग्रहों के दृष्टि व युक्ति के अनुसार फेर बदल होना संभव है परन्तु भाव स्वामी व कारक ग्रह के स्थिति पर यह फल अवलंबित है यह भी ध्यान में रखना चाहिए। शुभ ग्रह यदि अशुभ भाव में स्थित हो अथवा अशुभ ग्रह शुभ भाव में स्थित हो तो वे उस भाव के परिस्थिति व प्रभाव के अनुसार फल देने के लिए उद्यत होते हैं। इस पर से स्थान महात्म की महिमा कितनी जबरदस्त है यह पाठकों के ध्यान में सहज आवेगी ऐसी आशा है।

अंशों से फल देखना

जन्म लग्न या जन्म राशि के अंशों पर से ग्रहों का राश्यांतर होने पर कितने समय के पश्चात् फल देंगे यह जानने का कोष्ठक।

अंश	र. बु. शु. दिन	मंगल	गुरु	शनि	राहु, केतु
१	१	१॥	०-०-१३	०-१-०	०-०-१८
२	२	३	०-०-२६	०-२-०	०-१-६
३	३	४॥	०-१-९	०-३-०	०-१-२४
४	४	६	०-१-२२	०-४-०	०-२-१२
५	५	७॥	०-२-५	०-५-०	०-३-०
६	६	९	०-२-१९	०-६-०	०-३-१४
७	७	१०॥	०-३-१	०-७-०	०-४-६
८	८	१२	०-३-१४	०-८-०	०-४-२४
९	९	१३॥	०-३-२७	०-९-०	०-५-१२
१०	१०	१५	०-४-१०	०-१०-०	०-६-०
११	११	१६॥	०-४-२३	०-११-०	०-६-१८
१२	१२	१८	०-५-९	१-०-०	०-७-६
१३	१३	१९॥	०-५-१९	१-१-०	०-७-२४
१४	१४	२१	०-६-२	१-२-०	०-८-१२
१५	१५	२२॥	०-६-१५	१-३-०	०-९-०

अंशों से फल देखना

जन्म लग्न या जन्म राशि के अंशों पर से ग्रहों का राश्यांतर होने पर कितने समय के पश्चात् फल देंगे यह जानने का कोष्ठक।

अंश	र. बु. शु. दिन	मंगल	गुरू	शनि	राहु, केतु
१६	१६	२४	०-६-२८	१-४-०	०-९-१८
१७	१७	२५॥	०-७-११	१-५-०	०-१०-६
१८	१८	२७	०-७-२४	१-६-०	०-१०-२४
१९	१९	२८॥	०-८-७	१-७-०	०-११-१२
२०	२०	३०	०-८-२०	१-८-०	१-०-०
२१	२१	३१॥	०-९-३	१-९-०	१-०-१८
२२	२२	३३	०-९-१६	१-१०-०	१-१-६
२३	२३	३४॥	०-९-२९	१-११-०	१-१-२४
२४	२४	३६	०-१०-१२	२-०-०	१-२-१२
२५	२५	३७॥	०-१०-२५	२-१-०	१-३-०
२६	२६	३९	०-११-८	२-२-०	१-३-१८
२७	२७	४०॥	०-११-२१	२-३-०	१-४-६
२८	२८	४२	१-०-४	२-४-०	१-४-२४
२९	२९	४३॥	१-०-७	२- -०	१-५-१२
३०	३०	४५	१-१-०	२-६-०	१-६-०

श्री गणेशाय नमः

१ तन भाव सम्बन्धी योग

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश बृहस्पति तथा शुक्र तीनों केन्द्रवर्त्ती हो तो वह तथा उसका पुत्र दीर्घायु होता है और राजा तथा गुरुजनों द्वारा प्रतिष्ठा पाता है।

उदाहरण
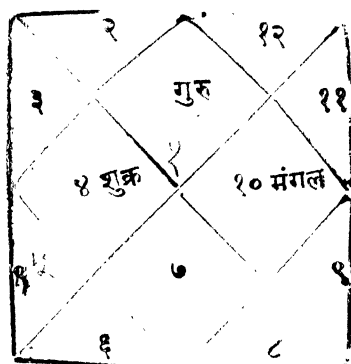
कारण चूंकि बृहस्पति से पुत्र तथा राजा का सम्बन्ध है। और गुरु लग्न में है जो पंचम दृष्टि से पुत्र स्थान को देखता है और लग्नेश मंगल उच्चका होकर राज स्थान में पड़ा है जो लग्न पर चौथी दृष्टि और पुत्र स्थान पर आठवीं दृष्टि डालता है और गुरु एक राशि में १३ मास और सब राशियों में १३ वर्ष रहता है इससे स्वयं जातक और उसके पुत्र की दीर्घायु होती है और उच्च ग्रही बली लग्नेश मंगल का लग्न तथा पंचम स्थान

को विशेष दृष्टि से देखना पुत्र को राज सम्मान प्राप्ति का हेतु है। इन सब युक्तियों से सिद्ध होता है कि स्वयं जातक की आयु तथा पुत्र की आयु बड़ी हो और राज से उसको सम्मान मिले।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश बली और शुभ ग्रह होकर बली चन्द्रमा के साथ युक्त हो तो उस जातक को शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सुख प्राप्त होता है।

उदाहरण
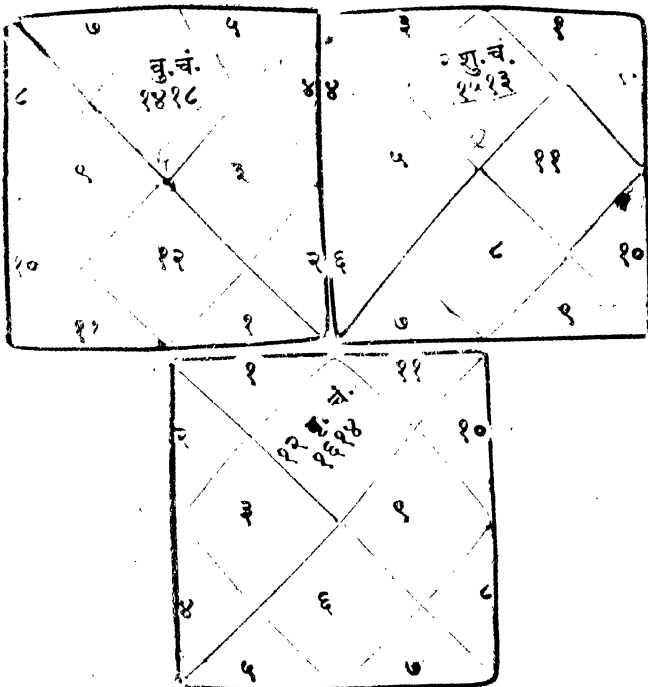
कारण

लग्नेश का शरीर से सम्बन्ध है यदि लग्नेश बली है तो शरीर भी बलवान होता है और यदि लग्नेश शुभ ग्रह है तो जातक का स्वभाव सौम्य तथा शीतल होता है और चन्द्रमा हर पदार्थ में रस डालने वाला और बुद्धि करने वाला है इसलिये लग्नेश से शरीर की आरोग्यता और बली चन्द्रमा से दीर्घायु का होना आवश्यक है इसलिये बली लग्नेश चन्द्रमा के साथ होने से दीर्घायु का कारण होता है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में केन्द्र स्थान, द्वितीय स्थान तथा नवम स्थान में अशुभ ग्रह न हों और लग्नेश बृहस्पति युक्त होकर केन्द्र स्थानों में पड़ा हो तो वह जातक सदा सुखी रहता है और उसकी आयु १०० वर्ष की होती है, वह कभी बीमार नहीं होता, ऐसा जातक प्रायः सुख चिर होता है।

उदाहरण
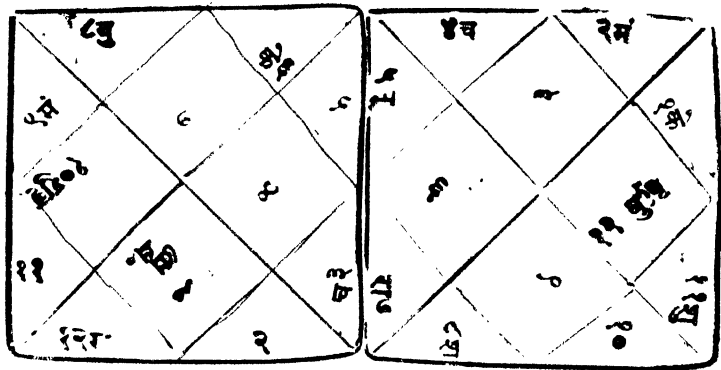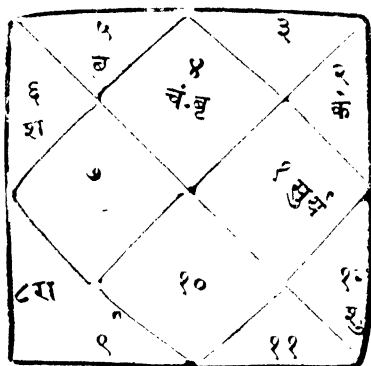
कारण

लग्न से मस्तिष्क, चौथे से मन, दसवें से यकृत और बृहस्पति से आत्मा, उम्र वृद्धावस्था और शारीरिक रक्त तथा शुभ वार्त्ता का सम्बन्ध है इन सब का केन्द्र तथा शुभ ग्रह घरों में स्थिति होना आयु वृद्धि तथा परोपकारी होने का कारण है। और अशुभ ग्रहों का दूसरे, नवें घर में न होना आरोग्यता का लक्षण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश चार राशि में स्थित हो और शुभ ग्रहों से देखा गया हो तो वह जातक प्रसिद्ध तथा बलवान होता है और सब सुख की सामग्री उसके पास उपस्थित रहती है।

उदाहरण
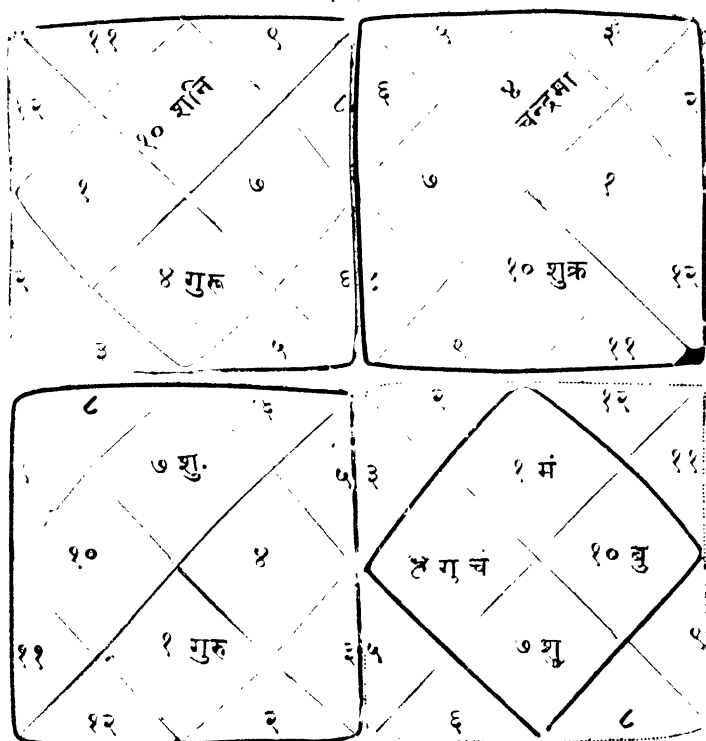
कारण

यदि लग्न में चार लग्न मेष हो तो केन्द्रों में सर्व लग्नें च र ही होंगी और इन चारों लग्नों में चार ग्रह उच्च अधिकार पाते हैं इससे लग्नेश का इन चारों राशियों में से किसी राशि में स्थित होना और उस पर शुभग्रह की दृष्टि पड़ना प्रसिद्धता तथा धन अधिक पाने का लक्षण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में बृहस्पति, शुक्र बुध वा चन्द्रमा इन शुभ ग्रहों का लग्न अथवा चौथे, सातवें, दशवें केन्द्र स्थानों में से किसी एक या दो में स्थित हो तो वह जातक प्रताप की वृद्धि करता है।

उदाहरण
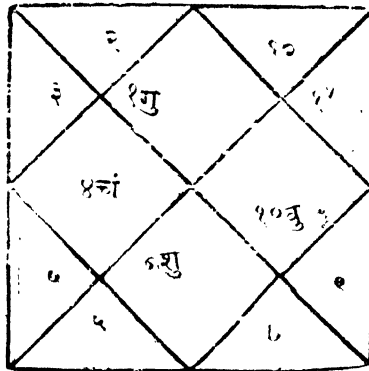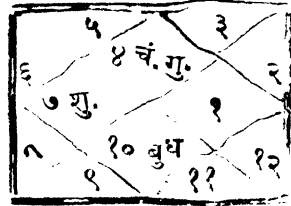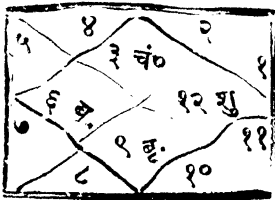
कारण

चार शुभ ग्रहों का चारों केन्द्रों में स्थित होना प्रताप की वृद्धि कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न स्थित शुभ ग्रह चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र को यदि अशुभ ग्रह भी देखते हों तो वह जातक बड़ा धनवान और सन्तान वाला होता है।

उदाहरण

कारण

शुभ ग्रहों का केन्द्र में होना अधिक विद्वानों का यह मत है और एक देशी यह भी मत है कि केन्द्र में अशुभ ग्रह शुभ फल देते हैं तीसरा नीलकंठ का यह मत है कि सब ग्रहों का केन्द्र में होना इकबाल का योग है इस योग में सब ग्रह केन्द्र में भी होते हैं इसलिए यह उत्तम लक्षण वाला होता है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में राहु लग्न में शनि के साथ हो और पाप ग्रह उसको देखते हों साथ ही यह पाप ग्रह चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र इन ग्रहों को भी देखते हैं तो यह योग भी धन सन्तान वृद्धि का कारण है।

उदाहरण
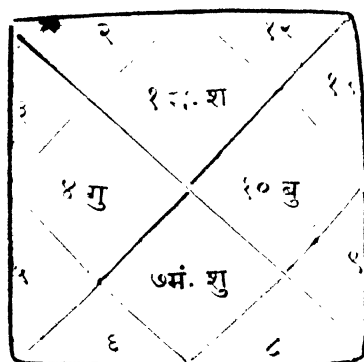
लग्न सम्बन्धी योग का दर्शन।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश अशुभ ग्रहों के साथ छठे, आठवें या बारहवें स्थान में, स्थित हो तो वह रोगी तथा दुखी रहता है।

उदाहरण
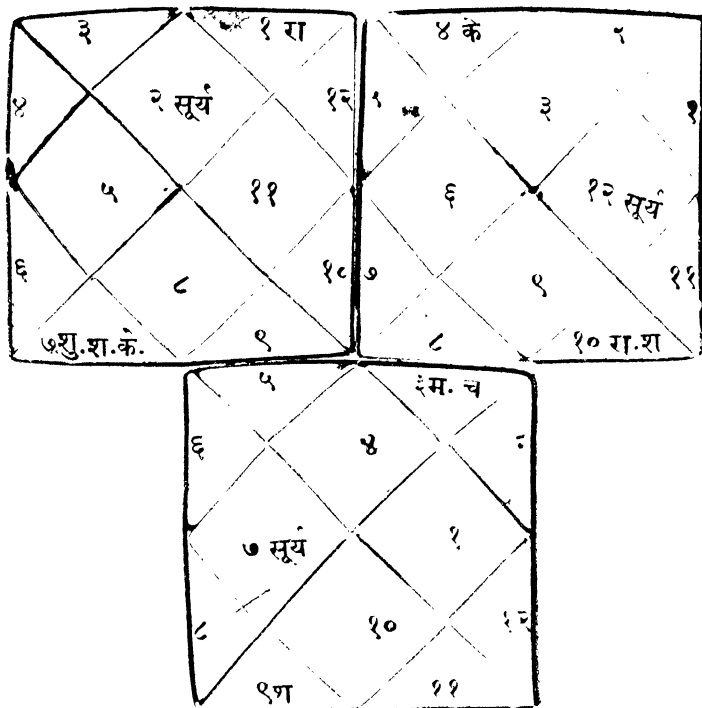
कारण

चूंकि छठे, आठवें तथा बारहवें घर से शत्रु रोग, भय, खर्च का सम्बन्ध है इन घरों में लग्नेश का अशुभ ग्रहों के स्थित होना रोग तथा दुःख का कारण है।

नम्बर २

यदि अशुभ ग्रह लग्नेश चन्द्रमा के साथ लग्न में स्थित हो तो ऐसा प्राणी रोगी होता है।

उदाहरण
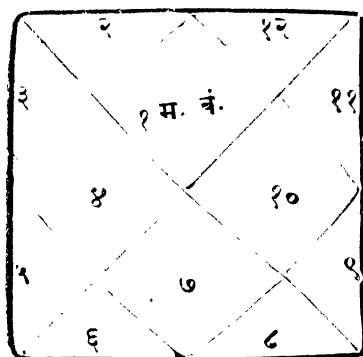
कारण

चूंकि लग्न का शरीर से सम्बन्ध है उसमें अशुभ ग्रह लग्नेश का स्थित होना और फिर उसके साथ चन्द्रमा का स्थित होना शरीर को दुःख देने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश और जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो उस राशि का स्वामी तीसरे, छठे, बारहवें घर में हो तो वह जातक दुर्बलेन्द्रिय तथा क्षीणकाय होता है।

उदाहरण
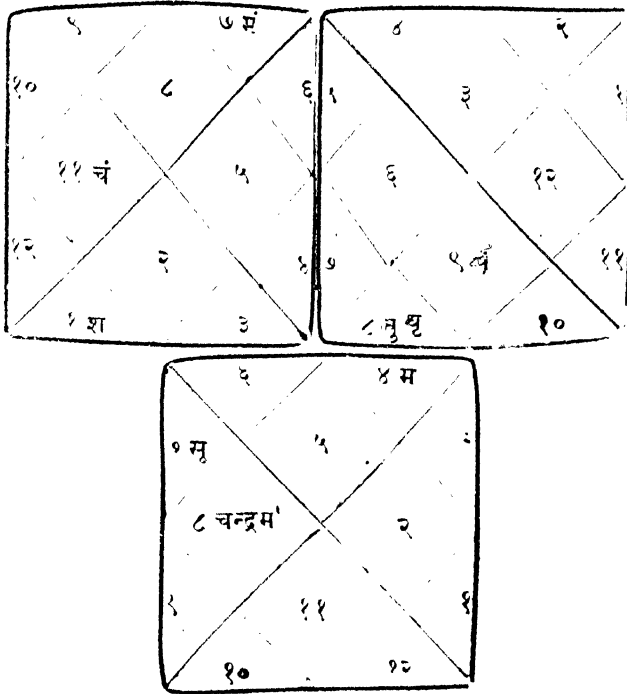
कारण

जिस जातक की कुण्डली में पहली लग्न सूरज की और दूसरी चन्द्र राशि की होती है। इन्हीं दोनों लग्नों से जातक के शरीर और आत्मा का विचार किया जाता है। इन दोनों के स्वामियों का अशुभ घरों में स्थित होना शारीरिक दुर्बलता का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में यदि लग्नेश अस्तंगत या नीच का हो अथवा और किसी प्रकार से निर्बल हो और चन्द्रमा भी क्षीण हो तो ऐसा जातक बहुत दुबला-पतला और श्वास रोग में ग्रसित रहता है।

उदाहरण
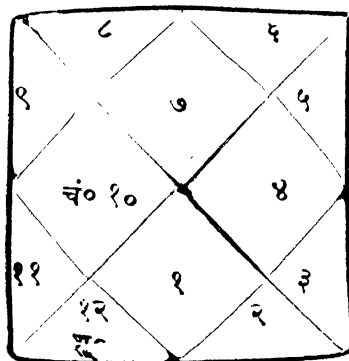
कारण

लग्नेश का सम्बन्ध शरीर और आत्मा से है और चंद्रमा का सम्बन्ध हृदय और फेफड़ा से है अतः इन ग्रहों का नीच और निर्बल होना श्वास आदि रोग का कारण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश दुर्बल होकर केन्द्रों में स्थित हो और किसी शुभ ग्रह की उस पर दृष्टि न हो तो ऐसा जातक अल्पायु होता है।

उदाहरण
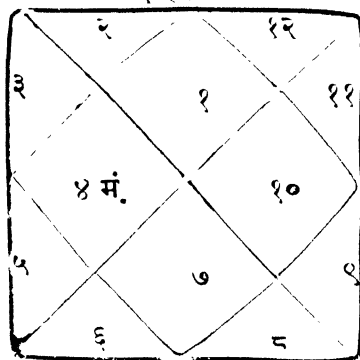
कारण

चूंकि लग्नेश से आयु का सम्बन्ध है और लग्नेश नीच का दुर्बल है अतः उम्र को घटाने वाला है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न में राहु स्थित हो और चन्द्रमा लग्न को देखता हो और लग्न के नवांश में शनि स्थित हो तो उसके जौल्ले लड़के उत्पन्न होते हैं।

उदाहरण
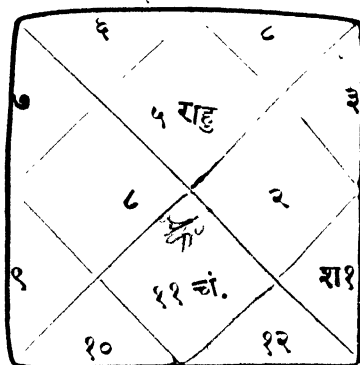
कारण

पहला स्थान जातक का जन्म स्थान है जो कि सुत स्थान से नवां है। अर्थात् उसकी बृद्धि का घर है और नवें तथा पाँचवें घर से नवां बनता है और राहु यथा शनि का एक-सा स्वभाव है और राहु को चन्द्रमा को देखना सन्तान की बृद्धि का कारण है। अतः सन्तान की बृद्धि अर्थात् साथ-साथ लड़के पैदा होते हैं।

नम्बर ७

जिस जातक के लग्न में राहु स्थित हो और सप्तम घर का स्वामी नीच चन्द्रमा के साथ सुत स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक शरीर से रुग्न तथा स्त्री पुत्र के सुख से बंचित रहता है।

उदाहरण
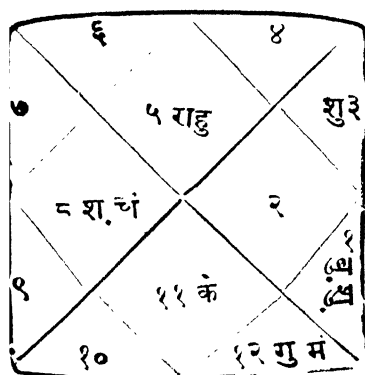
कारण

राहु केन्द्र में १, २, ३, ४, लग्नों का हो तो शुभ शेष लग्नों में अशुभ होता है। राहु का तन स्थान में स्थित होना और केतु की उसपर दृष्टि शरीर को दुखदायक है। स्त्री के साथ में घर पर केतु की स्थिति और राहु की दृष्टि स्त्री को हानिकारक है। और सप्तमेश शनि जो स्त्री के घर का स्वामी है। वह नीच चन्द्रमा के साथ सुख स्थान में स्थित है। इसलिये स्त्री का सुख नहीं होने देता और चौथे मातृ भाव में क्षीण चंद्रमा का होना माता के सुख से भी वंचित रखता है। और शनि की स्थिति से भ्राता का जीवित रहना भी पाया जाता है।

——:o:——

द्वितीय धन स्थान सम्बन्धी शुभ योग।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश गुरु हो अथवा धन स्थान ही में स्थित हो या बृहस्पति मंगल के साथ हो तो ऐसा जातक बड़ा धनवान होता है।
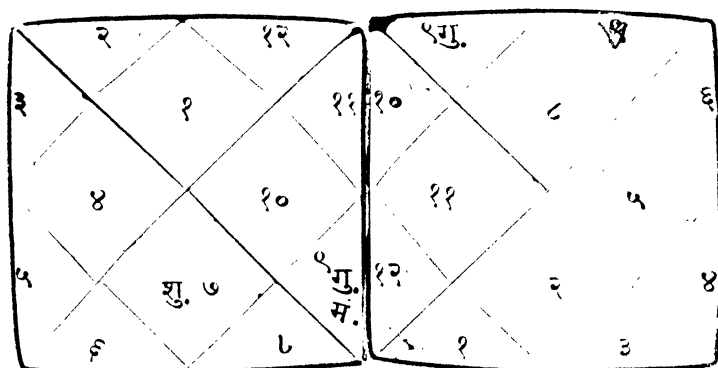
उदाहरण

कारण

बृहस्पति का धन से सम्बन्ध है और धनेश होकर धन स्थान में पड़ा है अतः धन की बृद्धि होती है और मंगल के साथ में मित्रता है इस कारण और भी धन की बृद्धि होती है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश द्वादश स्थान में हो और द्वादशेश धन में हो या दोनों केन्द्रों में स्थित हो तो ऐसा जातक बड़ा धनवान होता है।
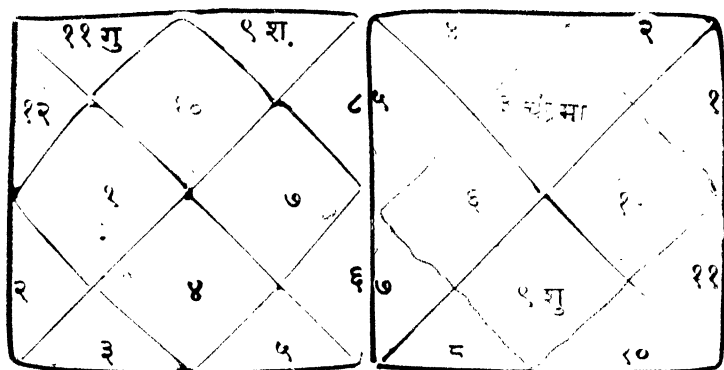
उदाहरण

कारण

धनेश का द्वादश स्थान तथा व्ययेश का धन स्थान में होना क्षेत्र सम्बन्ध कहलाता है या यह दोनों शुभ ग्रहों में स्थित है तो यह धन की वृद्धि का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश केन्द्रों में हो और त्रिकोण में द्वादशेश स्थित हो और धनेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या शुभ ग्रहों से युक्त हो तो ऐसा जातक बड़ा धनवान होता है।

उदाहरण

कारण

धनेश का केन्द्र में होना तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि का पड़ना या उनके साथ रहना धन की बृद्धि का कारण है और द्वादशेश का त्रिकोण में रहना धन को बढ़ाने का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश शुक्र बुध से युक्त हो या मित्र क्षेत्री हो तो वह जातक सुख पाता है।

उदाहरण

कारण

चूंकि धनेश और बुध का यह नियम है कि जिस ग्रह के साथ पड़ते हैं उसका प्रभाव ले लेते हैं और शुक्र तथा बुध दोनों का सुख से सम्बन्ध है उनका धनेश के साथ रहना आराम पहुँचाने का कारण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश शुभ ग्रहों से युक्त हो या केन्द्र स्थान में पड़ा हो या मित्र क्षेत्री हो या शुभ ग्रह की राशि में पड़ा हो तो ऐसा जातक परोपकार करनेवाला, सत्यवादी तथा धार्मिक होता है।
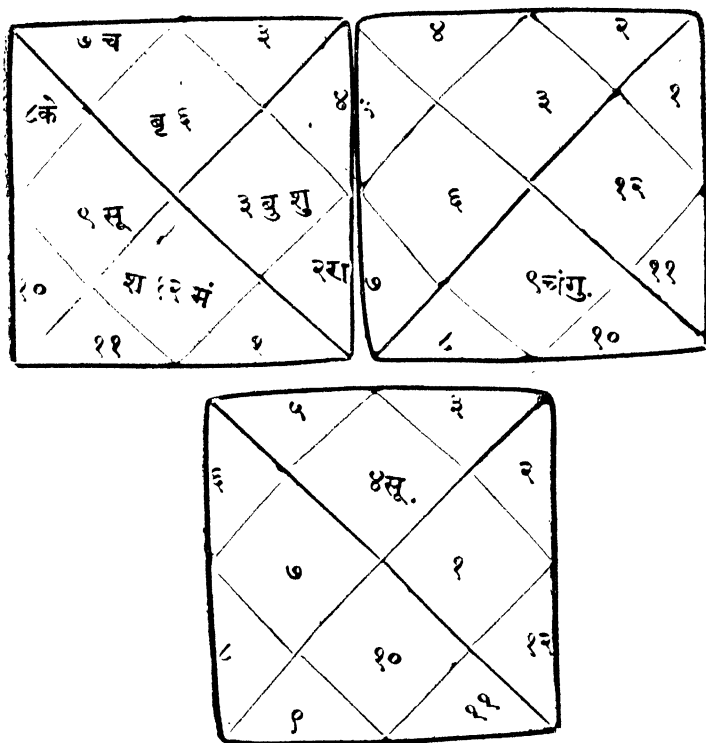
उदाहरण

कारण

चूंकि द्वितीय स्थान से धन दौलत का सम्बन्ध है और जवान का भी सम्बन्ध है तथा शुभ ग्रहो से शुभ समाचारो का सम्बन्ध है अतः इनका शुभ घरों में स्थित होना मुखबर, सच्चा तथा धर्मात्मा होने का कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धन स्थान का स्वामीपर मोक्ष दशा में हो तो ऐसा प्राणी अनेकों मनुष्यों का पालन करता है।
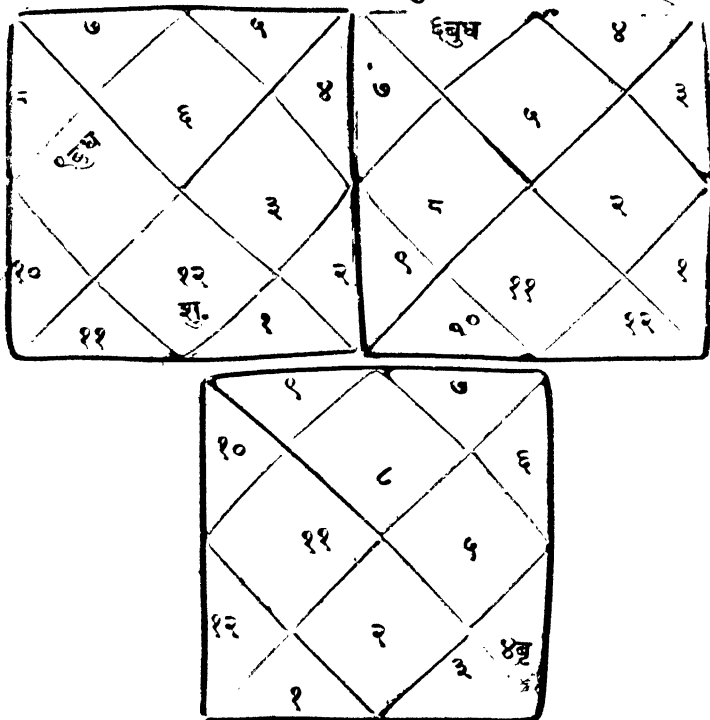
उदाहरण

चूंकि दूसरे स्थान से खान-पान दान तथा परोपकार का सम्बन्ध है। इसके स्वामी का उच्च होकर किसी स्थान की शोभा बढ़ाना भोजन का दान करने और लोगों के पालन करने का हेतु है। इसलिये धन का स्वामी का उच्च होना परोपकार वृत्ति: होने का कारण है।

नम्बर ७

जिस जातक के दूसरे स्थान में शुक्र और ऐकादश स्थान में वृहस्पति स्थित हो और इन स्थानों के स्वामी शुभ ग्रहो से युक्त हों और बारहवें स्थान में भी शुभ ग्रह स्थित हो तो ऐसा प्राणी बड़ा दानी होता है। और उसका धन धार्मिक कामों में व्यय होता है।

उदाहरण
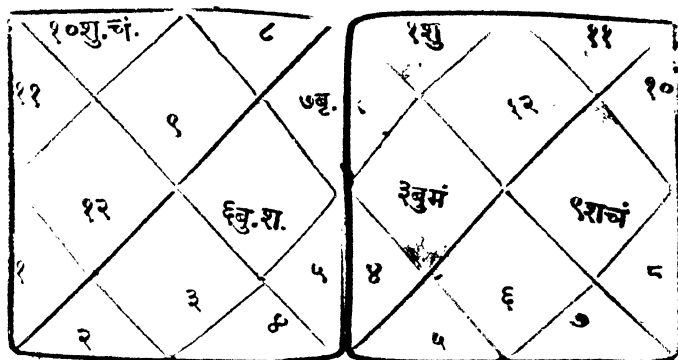
कारण

दूसरे स्थान का सम्बन्ध धन से और ऐकादश का सम्बन्ध आमद से है। इन दोनों घरों में गुरु शुक्र दोनों शुभ ग्रहों का होना जातक के धनवान होने का हेतु है। साथ ही धार्मिक जीविका द्वारा धनो पार्जन करना पाया जाता है और यह भी नियम है कि जैसी वृत्ति से धन कमाया जाता है बहुधा वैसे ही कामों में खर्च किया जाता है। या आप ही ह जाता है।

चूंकि इस कुण्डली वाले जातक का धन धार्मिक रीति से कमाया हुआ होता है इसलिये खर्च भी धार्मिक रीति से होना चाहिये इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है कि व्यय स्थान (खर्चा के खाने) में भी शुभ ग्रह है इसलिये धार्मिक कर्मों में खर्च होना चाहिये।

इससे आगे मनुष्य के अंगों का विचार किया जायगा।

नम्बर ८

दूसरे घर का स्वामी शुक्र के साथ हो अथवा शुक्र की राशि बृष में स्थित हो अथवा शुक्र के उच्च स्थान मीन राशि में स्थित हो अथवा मूल त्रिकोण ५वां नवें घर में स्थित हो और लग्नेश से सम्बन्ध रखता हो तो ऐसा जातक जन्मान्ध होता है।

उदाहरण
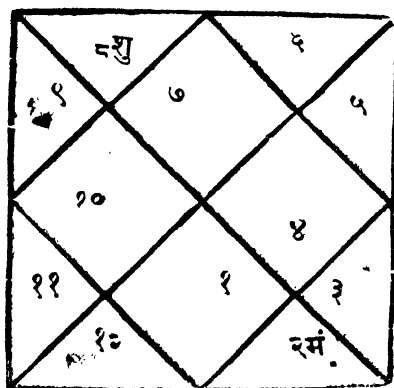
कारण

दूसरा घर आंख से सम्बन्ध रखता है शुक्र सफेद (स्वेत) रंग का ग्रह है इसलिये इसको सित भी कहते हैं और एक आंख वाला भी है इसलिये दूसरे घर के स्वामी का शुक्र से सम्बन्ध रखना आंखो का स्वेत अथवा अन्धा होने का कारण है दूसरी बात यह है कि लग्न में मेष राशि हो तो धन स्थान में बृष राशि होगी इसका स्वामी शुक्र है और दूसरा घर आंख से सम्बन्ध रखता है और शुक्र से भी आंख का सम्बन्ध है दूसरे घर का स्वामी मारकेश होता है। इसलिये मारकेश का लग्नेश तथा शुक्र से सम्बन्ध रखना आंखों के मारे जाने या अन्धा होने का कारण है।

नम्बर ९

सूर्य, चन्द्रमा शुक्र, युक्त होकर धन स्थान में स्थित हो अथवा शुक्र के घर में विशेषकर बृष राशि में सूर्य चन्द्रमा दोनों पड़ जायें तो ऐसा जातक रात्री में अन्धा हो जाता है और दिन में सूजता रहता है इसको रात्रिरोंध का रोग कहते हैं।

उदाहरण

कारण

सूर्य दिन वाला ग्रह है और चन्द्रमा रात्रि का ग्रह है जब यह दोनों एक राशि में आते हैं तो चन्द्रमा का प्रकाश सूर्य के द्वारा छिप जाता है और इन दोनों से शुक्र का मिल जाना विशेषकर बृष राशि में जो युक्त सूर्य का घर है दोनों सूर्य, चन्द्रमा, का स्थित होना रात्रि में अन्धे होने का कारण है।

नम्बर १०

दूसरे घर का स्वामी छठे, आठवें, बारहवें घर में स्थित हो तो आंखों में रोग होता है।
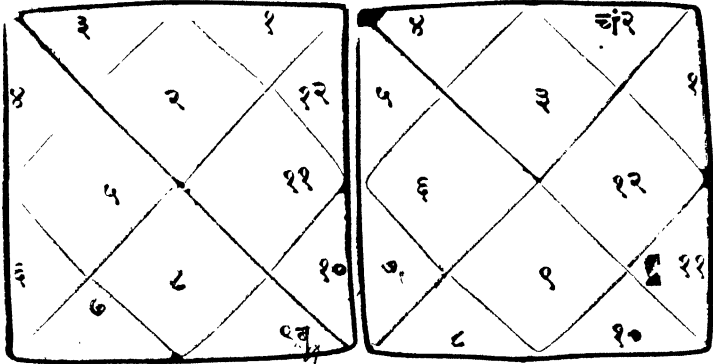
उदाहरण

कारण

चूंकि दूसरे घर का आँख से सम्बन्ध है अतः इसका स्वामी जो अशुभ स्थानों में पड़ता है वह आंख में रोग उत्पन्न करने का कारण होता है।

नम्बर ११

जिस जातक की जन्म कुण्डली में धनेश द्वितियेश अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो ऐसा जातक झूंठा चुगलखोर तथा रोगी होता है।

उदाहरण
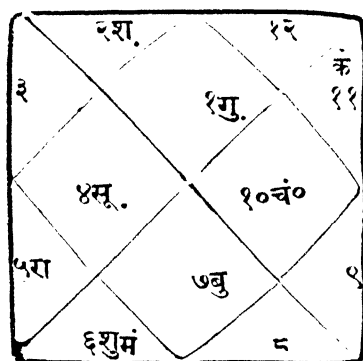
कारण

चूंकि द्वितीय घर से आंख और मुंह का सम्बन्ध है और आठवें घर से दूसरा घर सातवां है अतः दूसरे घर का उम्र से भी सम्बन्ध है और धनेश अपने पास बैठने वाला का प्रभाव ग्रहणकर लेता है तथा अशुभ ग्रहों से बुरे कामों का सम्बन्ध है इस निमित इनका एकत्रित होना चुगल खोरी, झूठापन तथा शरीर के रोगी रहने का कारण है।

नम्बर १२

धनेश और व्ययश दोनों ग्रह धन स्थान में अशुभ ग्रहों से युक्त पड़े हो तो वह जातक पैदायश से ही कंगाल होता है और वह भीक मांगकर अपनी जीविका कमाता है।

उदाहरण
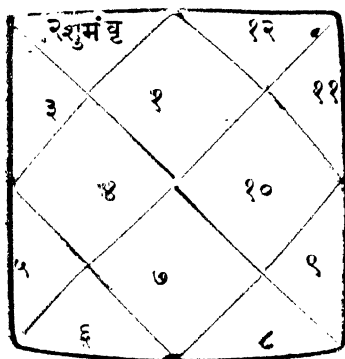
कारण

चूंकि अशुभ ग्रह जिस शुभ ग्रह के साथ होते है। और जिस शुभ घर में स्थित होते है उन दोनों की हालत को बिगाड़ देते है अर्थात अशुभ ग्रह शुभ घर से सम्बन्ध रखने वाली सम्पूर्ण बातों को उल्टी कर देते है और धन स्थान में अशुभ ग्रहों का आयेश और धनेश के साथ होना आमद तथा धन नष्ट करने का कारण है और भीख भी मांगने का कारण है।

तृतीय स्थान सम्बन्धी शुभ योग

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सहजेश नवें तथा पाचवें घर में स्थित हो तो उसके भाई सुख पाते हैं।

उदाहरण
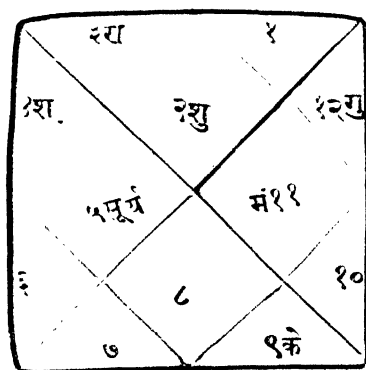
कारण

चूंकि तीसरे घर से मुख्य कर भाईयों से सम्बन्ध है इस घर के स्वामी का शुभ घरो में होना भाईयों को सुख पहुंचाने तथा धनवान बनाने का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में तृतीयेश तृतीय स्थान में उच्च का होकर तथा शुभ ग्रहों से युक्त होकर पड़े तो वह जातक अपने भाइयों का पूर्ण सुख पाता है।

उदाहरण
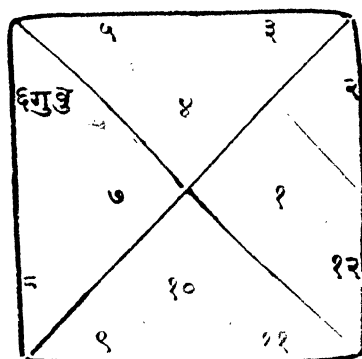
कारण

चूंकि तीसरे घर से भाई बहिनों का सम्बन्ध है उसमें सहजेश का शुभ ग्रहों के साथ स्थित होना भाइयों से सुख पहुंचाने का कारण है।

तृतीय स्थान सम्बन्धी अशुभ योग

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में तृतीयेश मंगल से युक्त होकर तीसरे छठे, आठवें तथा बारहवें स्थानों में पड़े या अशुभ राशियों में स्थित हो तो ऐसे जातक के भाई उन्नति करके मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

उदाहरण
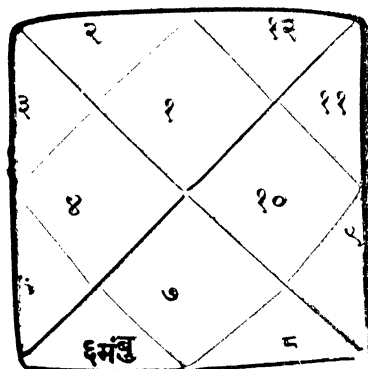
कारण

तृतीयेश और मंगल से दोनों से भाइयों का सम्बन्ध है इन दोनों का एक जगह स्थित होना उन्नति का कारण है और अशुभ घरो में जैसे तीसरे, छठे, बारहवें तथा आठवें घर में होना या अशुभ ग्रहों के साथ होना भाइयों की मृत्यु का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में तृतीयेश चन्द्रमा के साथ और मंगल शनि के साथ हो और तीसरे घर में बुध स्थित हो तो प्रथम बहन और पश्चात् तीन भाई एक ही पेट से उत्पन्न होकर मर जायगें।

उदाहरण
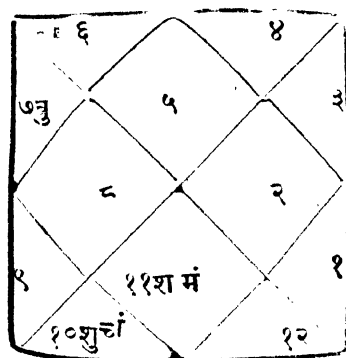
कारण

चूंकि तीसरा घर स्त्रीलिंग है और द्विस्वभाव लग्न वाला बुध इस घर में पड़कर स्त्री हो गया और चन्द्रमा भी स्त्री संज्ञक है एक से स्वभाव वाले ग्रहों का एक साथ होना फल को पुष्ट कर देता है इसलिये बहन के उत्पन्न करने का कारण है और क्योंकि मंगल भाई से सम्बन्ध रखता है और तीसरे घर का ग्रह है। और वृश्चिक लगन से मकर लग्न तीसरी है और कुम्भ से मेष तीसरी है और मंगल तथा शनि में परस्पर शत्रुता है अतः तीन भाई उत्पन्न होकर मरने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में क्षीण चन्द्रमा नवें घर में हो तो उसकी मां को हानिकारक है और यदि उसको शुभ ग्रह देखें तो उपरोक्त फल कुछ शुभ हो जाता है।

उदाहरण
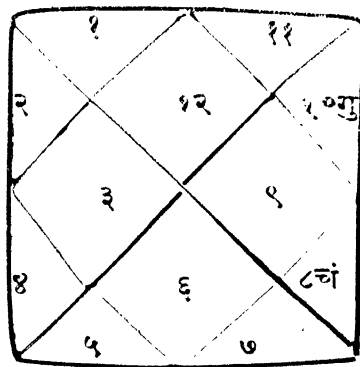
कारण

चूंकि चन्द्रमा का माता से सम्बन्ध है और तीसरा घर चौथे घर से बारहवां है जो माता के खर्चे का घ है इसको चन्द्रमा की कुदृष्टि से देखना माता को कष्ट पहुँचाने का कारण है और शुभ ग्रह का देखना उस कष्ट को कुछ कम करणे का कारण है।

चतुर्थ स्थान सम्बन्धी शुभ योग।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थेश चतुर्थ स्थान में स्थित हो और लग्नेश उसके साथ पड़ा हो तो उस जातक को जमीन और मकान का बहुत लाभ होता है।

उदाहरण
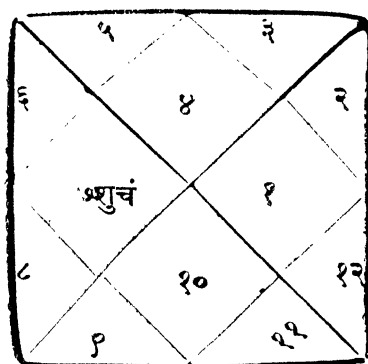
कारण

चौथे घर से भूमि और मकान का सम्बन्ध है उसमें लग्नेश का चर्थेश के साथ स्थित होना भूमि और मकान के स्वामी होने का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थेश भाग्येश के साथ स्थित हो और चन्द्रमा तथा शनि भी एक स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक फरनीचर तथा चित्रों से सजा हुआ मकान पाता है।
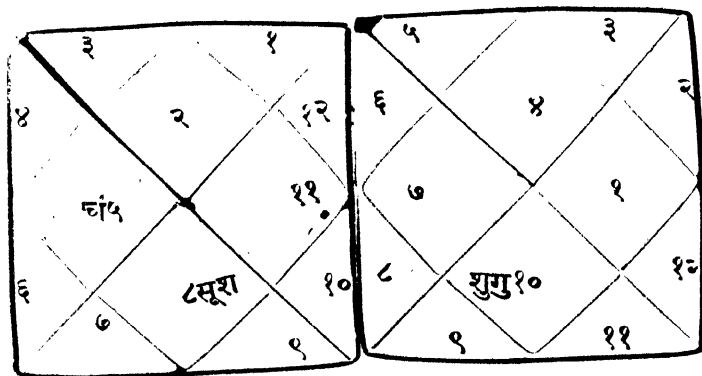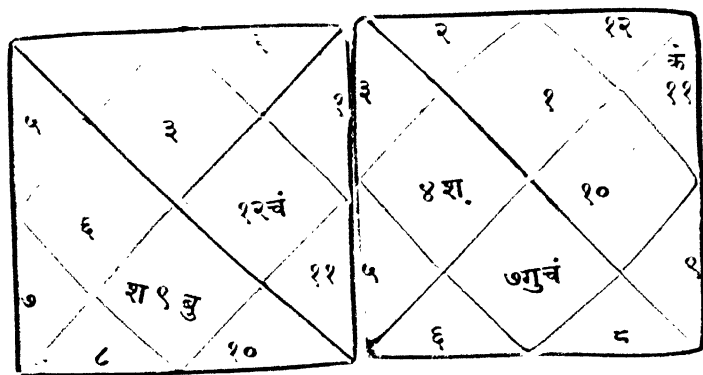
कारण

चूंकि शनि से पुराने मकान तथा चन्द्रमा से सजावट का सम्बन्ध है और चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ होता है उसकी उन्नति करता है अतः मकान से सम्बन्ध रखने वाले शनि की अवश्य उन्नति होगी और चतुर्थेश का साथी नवमेश है जो उन्नति का घर है अत इनका साथ २ होना सजे हुए मकान के मिलने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थेश उच्च का चन्द्रमा हो और चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह स्थित हो तो उसकी मां बड़ी उम्रवाली होती है।

उदाहरण
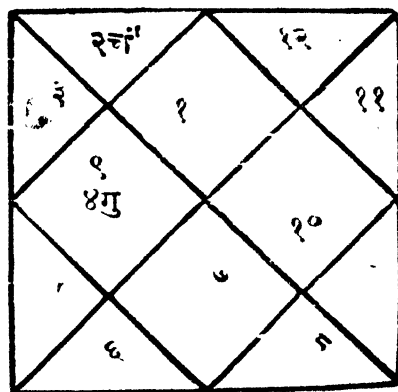
कारण

क्योंकि चन्द्रमा से माता का सम्बन्ध है तथा चतुर्थ घर से भी माता का सम्बन्ध है अतः चतुर्थेश माता का लग्नेश हुआ उसका उच्च का होना माता की उम्र की बढ़ाने का कारण है और चतुर्थ घर आठवें आयु के घर से नवां है उसमें शुभ ग्रह का स्थित होना माता की उम्र के बढाने का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य चतुर्थ स्थान में शनि के साथ स्थित हो और चन्द्रमा नवें स्थान में हो और मंगल एकादश स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक पशुओं से लाभ उठाता है।

उदाहरण
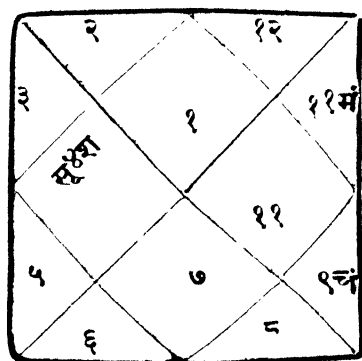
कारण

चूंकि चतुर्थ घर में सूर्य तथा शनि से पशुओं का सम्बन्ध है और चन्द्रमा भी जानवरों से सम्बन्ध रखता है जो उन्नति के नवें घर में स्थित है और मंगल ग्यारहवें घर में स्थित होकर छठे घर पशुओं पर और धन स्थान पर दृष्टि डालता है जो कि छठे से नवां चौथे से ग्यारहवां है अतः अशुओं से धन प्राप्ति का कारण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थेश ग्यारहवें घर में और एकादशेश चतुर्थ घर में स्थित हो तो उस जातक को उत्तम सवारी मिलती है।

उदाहरण
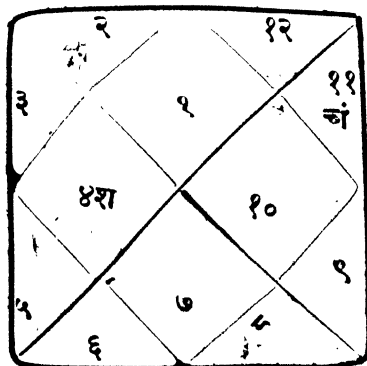
चूंकि चौथे तथा ग्यारहवें घर से सवारी सम्बन्ध है अतः इन दोनों के स्वामियों का क्षेत्र सम्बन्ध होना सवारी के मिलने का कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ योग चतुर्थेश निर्बल तथा नीच का हो और चतुर्थ स्थान में अशुभ ग्रह पड़े हों तो वह जातक माता, भूमि सवारी तथा सुख से वंचित

उदाहरण
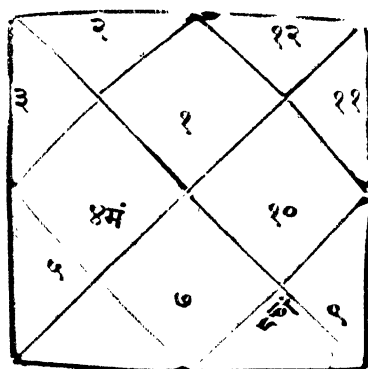
कारण

क्योंकि चतुर्थ स्थान से माता, सवारी भूमि तथा सुख से सम्बन्ध है उसके स्वामी का दुर्बल तथा नीच का होना और चतुर्थ स्थान में अशुभ ग्रहों का होना माका सवारी तथा भूमि के सुख से बंचित रखने वाला है।

पंचम स्थान सम्बन्धी शुभ योग

इस स्थान से विद्या का होना तथा न होना, पुत्र-पुत्रियों का होना या न होना, उनका मरना या जीवित रहना तथा उनका सुख, दुख चिट्ठी पत्री का वृत्तान्त आदि विषय देखे जाते है और इन्हीं के अनुसार योग लिखे जाते हैं।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेश बृहस्पति हो तो उसके पुत्र बहुत योग्य उत्पन्न होते है।

उदाहरण
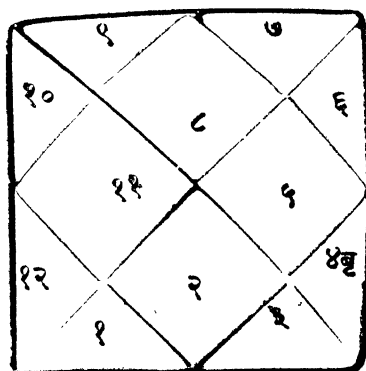
चूंकि बृहस्पति सन्तान से सम्बन्ध रखता है और पांचवां घर सन्तान का ही है उसमें गुरु को उच्च का होकर स्वामी होना सन्तान उत्पन्न करने का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में चतुर्थ तथा छठे स्थान में अशुभ ग्रह हों और पंचमेश उच्च का होकर लग्नेश के साथ स्थित हों या बृहस्पति शुभ ग्रह से युक्त होकर शुभ स्थान में पड़े तो ऐसा जातक बहुत सन्तान वाला होता है। और वह अपनी सन्तान से सुख भी पाता है।

उदाहरण
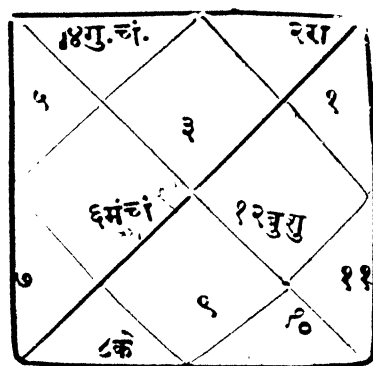
कारण

चतुर्थ घर पुत्रों के खर्चा का स्थान है क्योंकि पाचवें सुत स्थान से बारहवां है और छठा घर दसवें घर जो पुत्रों के शत्रु का घर नवां है जो कि पुत्रों के शत्रुओं की उन्नति का है इन स्थनों में अशुभ ग्रहों का पुत्र के शत्रुओं को नष्ट करने वाला है और लग्नेश जो कि पुत्र को लग्नेश से नवें घर का स्वामी है वह पंचमेश से युक्त है अतः अधिक संतान उत्पन्न करने का कारण है और वृहस्पति जिसका सम्बन्ध मुख्यकर पुत्रों से है शुभ ग्रहो के साथ स्थित है अस्तु यह भी संतान की अधिकता का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में बृहस्पति बलवान तथा उच्च का हो और धनेश राहु के साथ पड़ा हो तथा भाग्येश नवम स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक अधिक पुत्रों वाला होता है।

उदाहरण
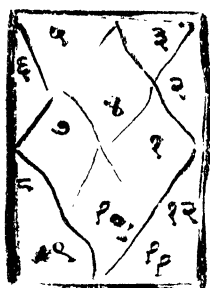
कारण

राहु हिन्दुस्तानी आचार्यों के मता नुसार बृहस्पति के स्वभाव का माना जाता है और यह ग्रह जिस ग्रह के साथ होता है उसकी ताकत को बढाता है और यही मुख्यता व्ययेश की भी है और चूंकि नवमेश बली है। जो कि पुत्र स्थान से पांचवां है और अपने घर का है। यह सब कारण संतान कि अधिक उत्पति के हैं।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में गुरु पंचम घर में हो और उससे पंचम शनि हो तथा उससे पंचम राहु हो तो उस जातक के एक पुत्र उत्पन्न होता है।

उदाहरण
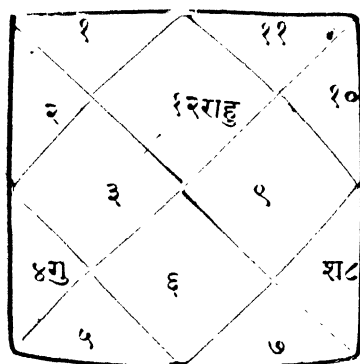
कारण

धन स्थान से बृहस्पति दसवें घर का मालिक है और शनि ग्यारहवें घर का स्वामी है और राहु लग्न में बैठा है यह कारण कम संतान पैदा करने का है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेश त्रिकोन में हो उच्च राशि का हो या द्वितीय स्थान में स्थित हो और बृहस्पति से युक्त हो तो उसका पुत्र भाग्यवान होता है।

उदाहरण
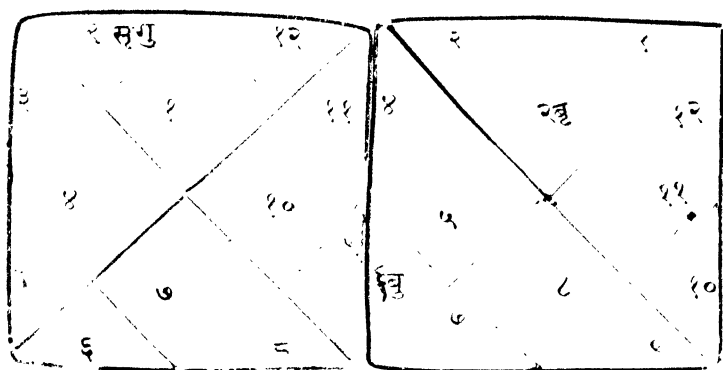
पंचम घर पुत्र का है और पंचमेश का उच्च होना योग्य पुत्र के पैदा होने का कारण है और बृहस्पति की दृष्टि उसको और भी उतेजित कर देती है इन बातो से सिद्ध होता है कि योग्य लड़का पैदा होगा।

नम्बर ६

पाचवें स्थान में बृहस्पति स्थित हो और पंचमेश शुक्र के साथ हो तो उसका पुत्र विद्वान हो और वह स्वयम् कवि और गणितज्ञ शिल्पी विद्वान हो।

उदाहरण
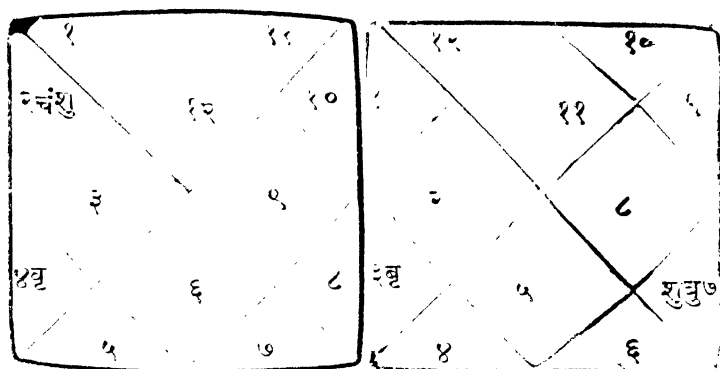
कारण

बृहस्पति का पांचवें स्थान में होना पुत्र उत्पत्ति का कारण है क्योंकि बृहस्पति संतान से सम्बन्ध रखता है और शुक्र भी पंचमेश के साथ है इसलिये संतान तथा जातक विद्वान होता है क्योंकि पांचवां घर जो संतान का है वही विद्या का भी है। बृहस्पति और शुक्र जो संतान के लिये शुभ हैं वही विद्या की वृद्धि भी करते है। इसलिये जिस जातक की कुण्डली में ऐसा सुयोग उपस्थित होता है वह तथा उसकी संतान विद्वान होती है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेष छठे, आठवें या बारहवें स्थान में स्थित होता है उसके संतान मुश्किल से होती है और यदि किसी और ग्रहों की दृष्टि से उत्पन्न हो भी जाये तो जीवित नहीं रहती।

उदाहरण
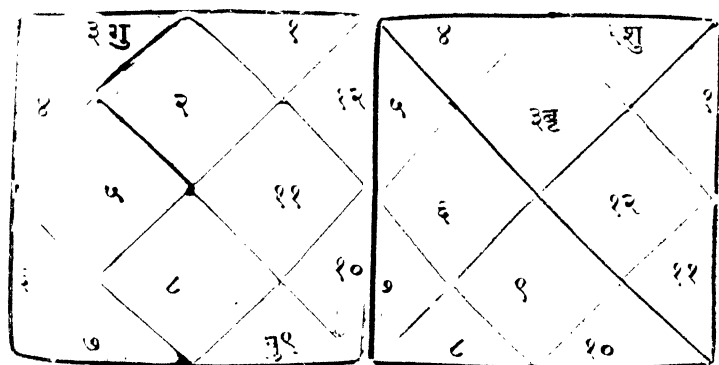
चूंकि पंचम स्थान का सम्बन्ध संतान से है और उसके स्वामी का अशुभ ग्रहों में स्थित होना संतान न उत्पन्न होने का कारण है।

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचम स्थान में अशुभ ग्रह हों और गुरु से पंचम शनि स्थित हो और मंगल भी पाचवें घर में स्थित हो तथा लग्नेश द्वितीय स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक अपनी संतान से अधिक दिन तक जीवित रहता है। अर्थात उसकी सन्तान उसके सामने मर जाती है।

उदाहरण
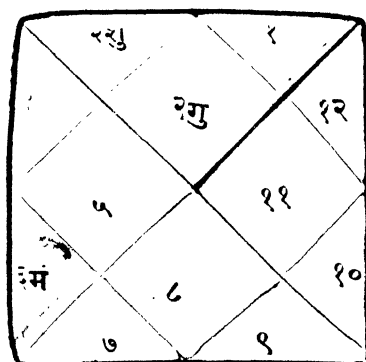
कारण

दो अशुभ ग्रहों का पंचम घर (पुत्र के लग्न स्थान) में और गुरु से पंचम स्थित होना यह दोनों कारण पुत्र के लिये हानि कारक हैं और द्वितीय स्थान पुत्रों के मृत्यु स्थान से नवां तथा पुत्र के लग्न स्थान से दसवां है और दसम स्थान से उम्र का सम्बन्ध है अतः पुत्र स्थान से नवें घर के स्वामी का पुत्र के मृत्यु स्थान (छठे घर) से नवम स्थान (द्वितीय) में स्थित होना संतान को हानि कारक है।

नम्बर ९

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचम स्थान में गुरु स्थित हो और पंचमेश शुक्र से हो तो ऐसे जातक के ३३ वर्ष में पुत्र उत्पन्न होता है।

उदाहरण
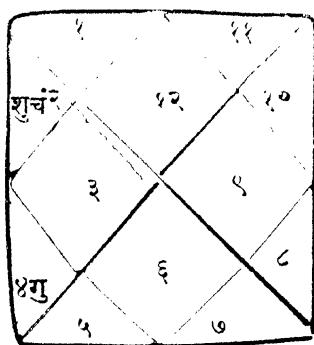
कारण

चूंकि बृहस्पति से पुत्र का सम्बन्ध है और पंचमेश के साथ शुभ ग्रह शुक्र का स्थित होना पुत्र उत्पन्न होने का कारण है।

नम्बर १०

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेश नीच का होकर छठे, आठवें तथा बारहवें स्थान में स्थित हो और पंचम स्थान में केतु तथ बुध स्थित हो तो ऐसे जातक की स्त्री पतिव्रता होती है परन्तु उसके सन्तान नहीं होती अर्थात बांझी रहती है।

उदाहरण
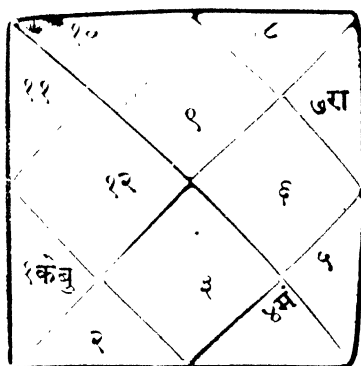
कारण

पंचमेश का दुर्बल तथा नीच का होकर अशुभ स्थानों में पड़ना और स्त्री के गर्भ स्थान (पंचम घर) में अशुभ ग्रह केतु और द्विस्वभाव ग्रह बुध का स्थित होना बांझ रहने का कारण है।

शत्रु स्थान सम्बन्धी शुभ योग

इस स्थान से रोग चोर तथा शत्रुयों का होना आदि विषय देखे जाते हैं इससे मामा का भी बिचार किया जाता है।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में षष्ट मेश उच्च का

होकर लग्न स्थान में पड़े तो ऐसा जातक सुन्दर, भाग्यवान तथा देश और मकान का मालिक होता है, वह धनवान, सवारी वाला तथा भाई बन्धु वाला होता है।

उदाहरण

कारण
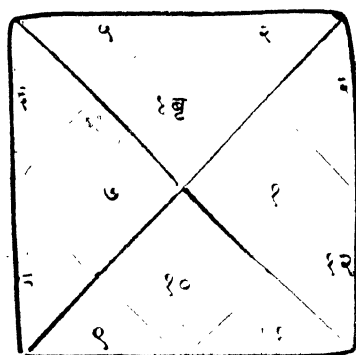
छटे घर से दास, दासी, नौकर आदि सम्बन्ध है। और वह ग्रह धन स्थान से पंचम राज्य स्थान से नवम और उन्नति के स्थान का दसवां है इसके स्वामी का उच्च का होकर लग्न में स्थित होना उपरोक्त गुणों का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली मैं द्वादशेश छठे घर में और षष्टमेश बारहवें घर में हो तो वह जातक ३० वर्ष की अवस्था में पैरों से वेकार हो जाता है।
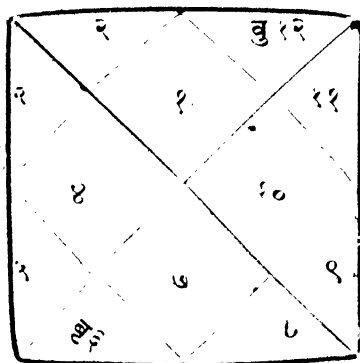
उदाहरण

कारण

द्वादश स्थान से पैरों तथा षष्ठम स्थान से रोग और पैरों का भी सम्बन्ध है। इन दोनों घरों के स्वामियों में क्षेत्र सम्बन्ध का होना पैरों की बीमारी का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लड़के का बुध या मंगल हो और चन्द्रमा के साथ शनि और राहु हो तो उसके कोढ़ का रोग होता है।

उदाहरण

कारण
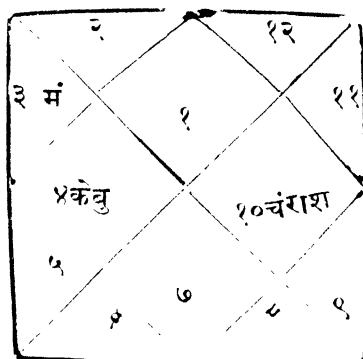
राहु और शनि से बात रोग का सम्बन्ध है। और खुस्की भी इनसे सम्बन्ध रखती है और मंगल से खुन के विकार का सम्बन्ध है और चन्द्रमा तथा बुध से तरी का सम्बन्ध है चन्द्रमा का राहु के साथ होना तरी को कम करना है और खुस्की का कारण है। यही कारण कोढ़ उत्पन्न होने का है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में षष्टमेश अशुभ हो अष्टमेश लग्न में स्थित हो ऐसे जातक के बदन पर फोड़ा फुन्सी अधिक होती है।
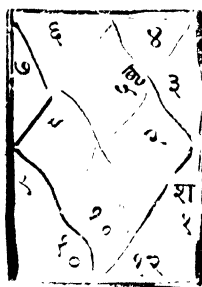
उदाहरण

कारण

अशुभ ग्रहों से फोड़ा तथा घाव षष्टम घर रोग और अष्टम घर से घाव तथा चिन्ह का सम्बन्ध हैं। अनेक कारण प्रत्यक्ष हैं।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में छठे या आठवें घर में राहु स्थित हो उससे आठवां शनि हो तो पागल हो जाता है।

उदाहरण

कारण
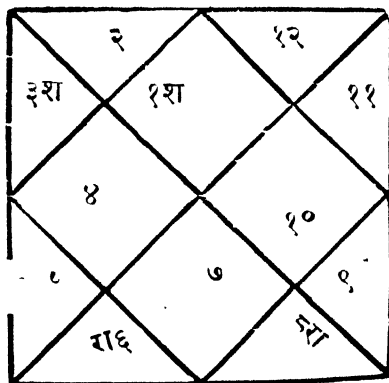
शनि से जले हुये कफ का सम्बन्ध है जो कि पागलपने का कारण है और तृतीय स्थान से मस्तिस्क का सम्बन्ध है इसमें शनि का स्थित होना उन्माद का कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न स्थित बृहस्पति को शनि और मंगल देखे तथा षष्टमेश मंगल साथ में हो तो ऐसे जातक को दांतों का रोग होता है मुख्यकर उसको पाइरिया होता है।

उदाहरण

कारण
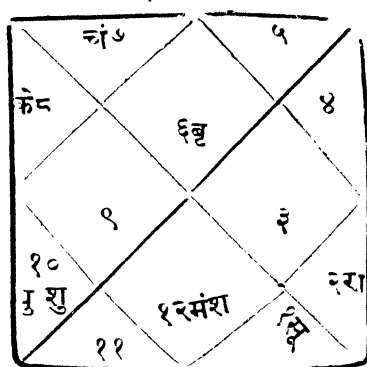
षष्टम स्थान रोग का घर और शनि से दांतों का सम्बन्ध उसका मंगल के साथ होकर लग्न स्थित बृहस्पति को देखना दांतों में रोग उत्पन्न होने का कारण है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में आठवें घर में शनि ७ वें घर में मंगल हो तो उसके माता का (चेचक) अवश्य निकलती है।

उदाहरण

कारण

शनि से सूजनपत मंगल से खुन के विकार को सम्बन्ध है और चेचक रोग रुचिर विकार से होता है। अतः मंगल का लग्न को देखना चेचक निकलने कारण है।

नम्बर ८

जिस जातक के जन्म कुण्डली में षष्टमेश ११वें घर में हों और एकादशेश षष्टम घर मे हो तो उसका २१ या ३४ वर्ष शत्रुयों द्वारा धन नाश होता है।
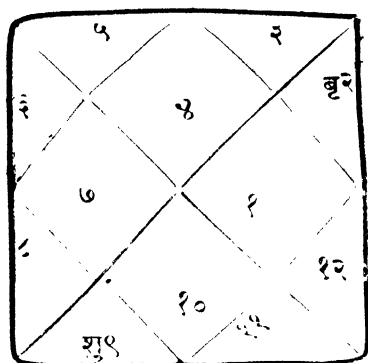
उदाहरण

कारण

चूंकि एकादश स्थान आप का घर है और उससे अष्टम अर्थात् छठा घर शत्रु के भय का घर है अतः इन दोनों के स्वामियों का क्षेत्र सम्बन्ध होना शत्रु के द्वारा धन के नाश होने का कारण है।

नम्बर ९

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेश छठे घर में स्थित हों षष्टेश गुरु से युक्त हों और द्वादशेश लग्न में स्थित हों तो पुत्र भी शत्रु हो जाता है।

उदाहरण
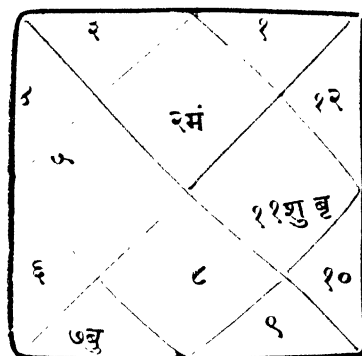
कारण

पुत्र का मालिक शत्रु स्थान में स्थित है षष्टमेश बृहस्पति से युक्त है और द्वादश का घर जो कि पुत्र के लग्न स्थान से आठवाँ है उसका स्वामि पुत्र के लग्न स्थान से नवां घर है याने लग्न में स्थित है अतः यह पुत्र के शत्रु ताकि उन्नति का कारण है।

सप्तम घर सम्बन्धी शुभ योग

इस भवन से स्त्री का होना न होना तथा उसके सुख या दुःख का होना, साझियों से मित्रता या शत्रुता का होना आदि विषय देखे जाते हैं।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली के सप्तम घर में मंगल स्थित हो और लग्न में चन्द्रमा स्थित हो तो ऐसा जातक दो स्त्रियों का स्वामी होता है।

उदाहरण
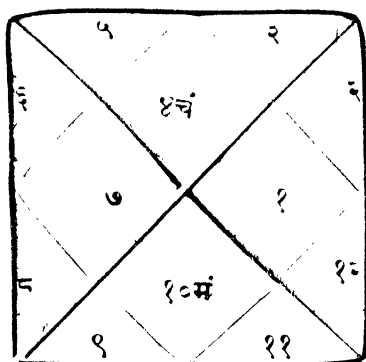
कारण

मंगल का १२-४-८-७ वे घर में होना पुरुष तथा स्त्री को मंगली बना देता हैं और यदि मंगली पुरुष को मंगली स्त्री मिल जाय तो वह मर जाती है और दूसरी शादी होती है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली के सातवें घर में शुक्र हो तो वह जातक काम शक्ती में बढ़ा हुआ होता है।

उदाहरण

कारण
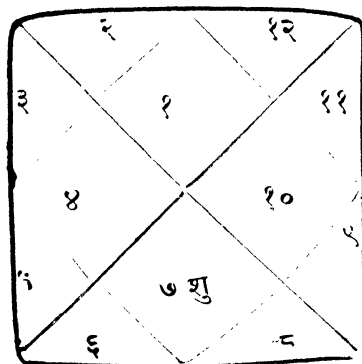
चूंकि शुक्र से काम का सम्बन्ध है और सत्तम घर से भूतेन्द्रिय का सम्बन्ध है इस कारण काम शक्ति को प्रबल करना है।

नम्बर ३

जिस जातकी जन्म कुण्डली में शत्रु अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो उस जातक की स्त्री मर जाती है।
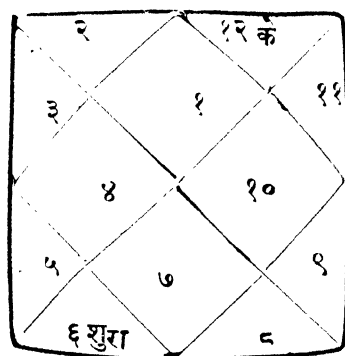
उदाहरण

कारण

क्योंकि शुक्र स्त्री से सम्बन्ध रखता है और उसका बुरे ग्रहों के साथ स्थित होना स्त्री को मारने का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली के सातवें घर में मंगल हो और लग्न में राहु हो तो उसे स्त्री का सुख कभी नहीं मिलता है।

उदाहरण

कारण
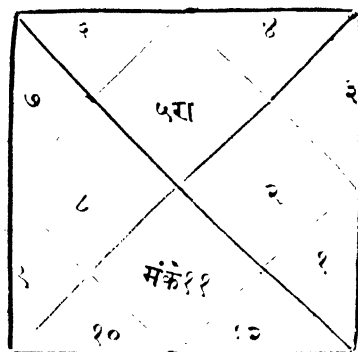
मंगल का वर्णन तो पहिले ही हो चुका है कि सातवें घर में स्त्री मारक हैं और तिस पर राहु का होना इस अशुभ फल को बढाता है इसलिये जिस जातक की कुण्डली में यह ग्रह पड़ते है वह जातक चाहे कितने विवाह करे पर उसकी स्त्री मर जाती है और वह स्त्री का सुख कभी नहीं भोगता है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न के घर में शुक्र हो तो ऐसे पुरुष की स्त्री व्यभि चारिणी हो जाती है।

उदाहरण

कारण
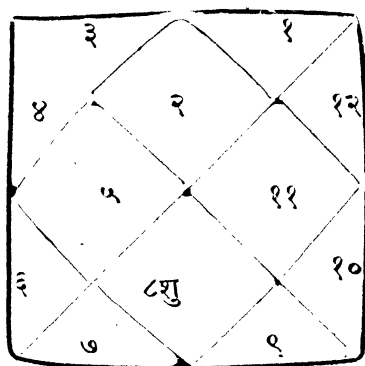
मंक्कल व्यभिचारी पुरुष और शुक्र व्यभिचारी स्त्री मानी जाती हैं इसलिये व्यभिचारी पुरुष के घर में व्यभिचारी स्त्री का प्रवेश करना व्यभिचारीणी बनने का मुख कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली के सतवें घर का स्वामी आठवें घर में स्थित हो और उसका स्वामी शनिश्चर की राशि मकर या कुम्भ में पड़ा हो तो एसे पुरुष की स्त्री उन्नीस या बीस वर्ष की अवस्था में मर जाति है।
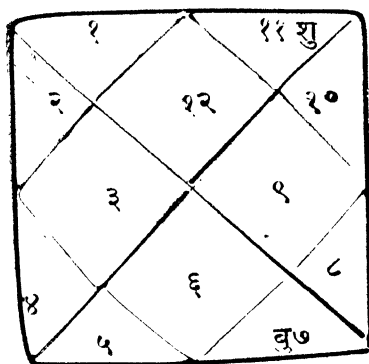
उदाहरण

कारण

चूंकि हर एक लग्न से दूसरा घर उसका मारक स्थान होता है और सातवां घर स्त्री का लग्न स्थान है इसलिये आठवां घर उसका मारक स्थान हुआ सातवें घर के स्वामी का आठवें घर में पड़ना स्त्री के मरने का कारण है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दूसरे घर में राहु और सातवें घर में मंगल हो तो उसकी स्त्री विवाह के समय ही मर जाती है।
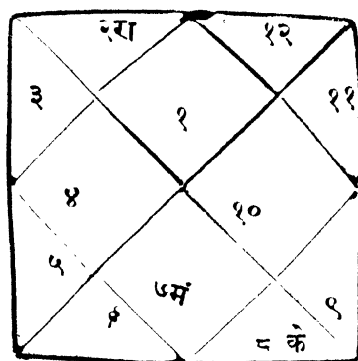
उदाहरण

कारण

स्त्री की लग्न में मंगल के होने स्त्री मंगली होती है और आठवें घर स्त्री का मारक स्थान है जिसको राहु का होना स्त्री के मरने का हेतु है और चूंकि राहु सांप के सदृश्य रखता है इसलिये सम्भव है स्त्री का मरण सांप के काटने से होता है।

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सप्तमेश छठे-आठवें या बाहरवें स्थान में स्थित हो तो उसकी स्त्री सदा रोगिणी बनी रहती है।
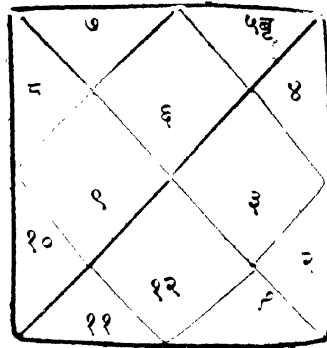
उदाहरण

कारण

सातवां घर स्त्री का लग्न है और स्त्री के घर का स्वामी छुठे-आठवें-बारहवें घर में हो तो अवश्य रोग का कारण होगा।

नम्बर ९

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सातवें घर का मालिक बारहवें घर में उच्च का होकर पड़े तो स्त्री बिमार पड़ी रहे परन्तु शीघ्र ही बीमारी से अच्छी भी होती रहे।
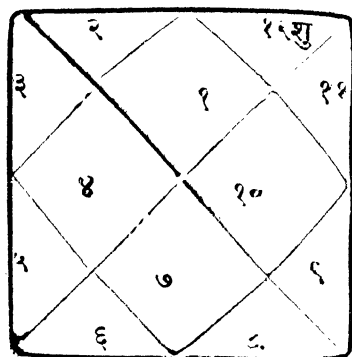
उदाहरण

कारण

उच्च का ग्रह चाहे घर में हो तो भी अत्यन्त अशुभ फल नहीं देता है नीच घर में पड़ने के कारण कुछ बिगाड़ हो जाता है परन्तु उच्च होने से जल्द संभल जाता है इसलिये उच्च होने के कारण स्त्री जल्दी अच्छी हो जाती है.

नम्बर १०

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सप्तमेश उच्च का होकर केन्द्र में स्थित हो तो उसकी स्त्री दीर्घायु वाली सुशीला और सुन्दरी होती है।
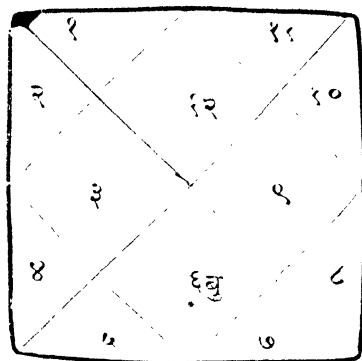
उदाहरण

कारण

प्रथम तो केन्द्र में ही ग्रह बलवान होते हैं और फिर उच्च के होकर और भी बलवान् हो जाते है इसलिये सप्तमेश का केन्द्र में पड़ना और बलवान होना स्त्री का बलवती सुशीला तथा सुन्दरी होने का कारण है।

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सप्तमेश बलवान होकर त्रिकोण में पड़ता है तो उसकी स्त्री हर प्रकार से अच्छी होती है।

उदाहरण
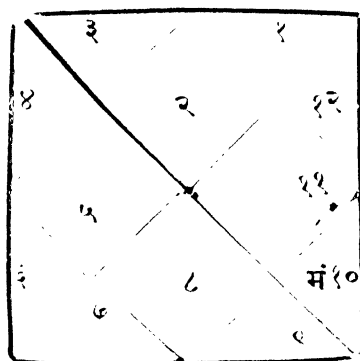
कारण

त्रिकोण में भी उच्च का ग्रह बहुत बलवान होता है इसलिये त्रिकोण में बलवान ग्रह पड़ना आयुष्यमान होने का कारण है इसलिये स्त्री बड़ी आयु वाली होती है।

अष्टम स्थान सम्बन्धी योग

आठवें घर से उम्र रोग-बन्धन और मृत्यु का विचार किया जाता है।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश उच्च का हो और चन्द्रमा ग्यारवें घर में पड़ा हो और बृहस्पति आठवें घर में स्थिर हो तो वह बड़ी आयु वाला होता है।
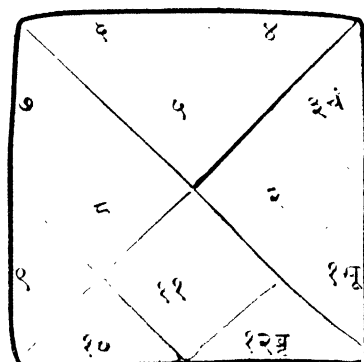
उदाहरण

कारण

चन्द्रमा बृहस्पति और लग्नेश तीनों ही आयु से सम्बन्ध रखने वाले है इनका बलवान होना और उत्तम ग्रह में होना दीर्घायु का कारण है ।

नम्बर २

जिस जातक की कुण्डली में छठे घर का स्वामी छठे या बारहवें स्थान में स्थित हो और बारहवें घर का स्वामी बारहवें या छठे घर में स्थित हो अथवा दोनों में से हर एक लग्न या अष्टम स्थान में स्थित हो तो उस प्राणी की दीर्घायु होती है ।
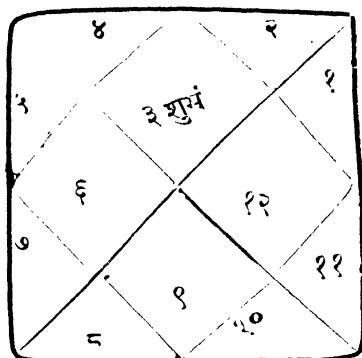
उदाहरण

कारण

छठा-बारहवां तथा लग्न का घर आयु स्थान होता है और इन घरों के स्वामियों का अपने ही घरों में वा परस्पर एक दूसरे के घर में स्थित होना दीर्घायु का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की कुण्डली में अष्टमेश और दशमेश बली होकर लग्न में स्थित हों और केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें में बलवान शनि स्थित हो तो वह जातक दीर्घायु होता है।
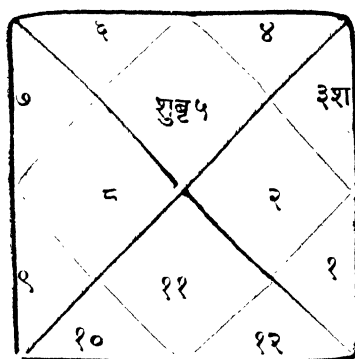
उदाहरण

कारण

शनि आयु कारक ग्रह है इसलिये आयु लग्न हो सकता है और लग्न भी आयु का घर है इसमें अष्टमेश का स्थित होना दीर्घायु का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में षष्टेश पांचवें घर में स्थित हो और दशमेश उसके साथ, लग्न में या आठवें घर में विराजमान हो तो उसकी बड़ी आयु होती है।

उदाहरण

कारण
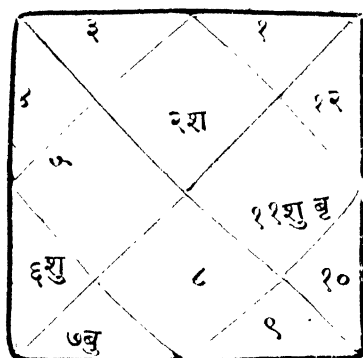
किसी २ आचार्य का मत है कि दशवें और पांचवें दोनों खाने उसीसे सम्बन्ध रखते हैं इसलिये छठे घर का पांचवें घरों दशमेश के साथ बैठना दीर्घायु होने का कारण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्न में शनि स्थित हो और केन्द्र त्रिकोण या ग्यारहवें घर में लग्नेश-अष्टमेश या दशमेश हो तो वह बड़ी उम्र वाला होता है।

उदाहरण
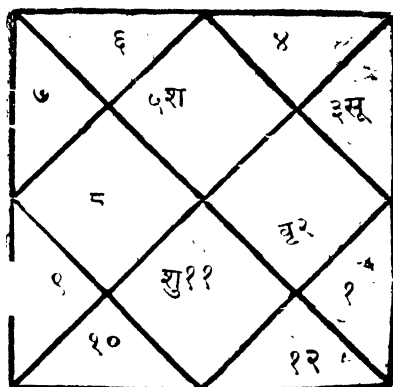
कारण

शनि का आयुसे सम्बन्ध है और इन स्थानों में आयु का विचार किया जाता है अतः इन स्थानों में बली ग्रहों का स्थित होना आयु को बढ़ाने वाला है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में अष्टमेश तीन ग्रहों से युक्त हो अशुभ ग्रह हो तो उसकी आयु थोड़ी होती है।
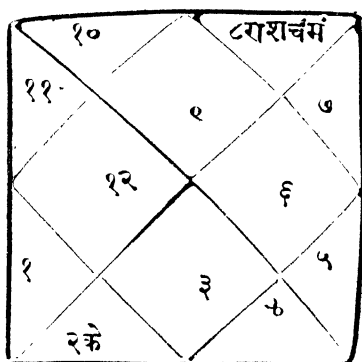
उदाहरण

कारण

अष्टमेश मारकेश होता है इसका अशुभ ग्रहों के साथ स्थित होना आयु की हानि कारक हैं।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में अष्टमेश अपने घर में स्थित हो और चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से युक्त हों और उसको कोई शुभ ग्रहन देखते हों तो उसकी एक मास के अन्दर मृत्यु हो जाती है।

उदाहरण
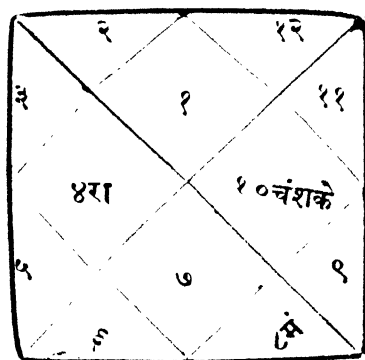
कारण

जो ग्रह लग्न और अष्टम दोनों ग्रहों का स्वामी होता है वह आयु से सम्बन्ध रखता है और चन्द्रमा से उन्नती का सम्बन्ध है परन्तु इसका अशुभ ग्रहों के साथ होना उम्र को हानि कारक है और किसी शुभ ग्रह का न देखना भी अल्पायु का कारण है।

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश और दशमेश और शनि अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो वह जातक अल्पायु होता है या दृष्ट
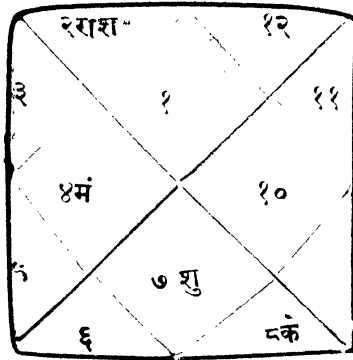
उदाहरण

कारण

अष्टमेश तथा अष्टम घर से तो आयु का सम्बन्ध है ही परन्तु इनके अतिरिक्त लग्नेश दशमेश तथा शनि से भी आयु का सम्बन्ध है इनका अशुभ ग्रहों के साथ होना अल्पायु का कारण है।

नवमा घर सम्बधी शुभ योग

नम्बर १

जिस जातक का जन्म कुण्डली में नवमेश केन्द्र में स्थित हो और बृहस्पति उसको देखते हों तो ऐसे जातक का पिता सवारी तथा बहुत से दास दासियों वाला होता है।

उदाहरण

कारण

क्यूंकि नवमेश पिता का लग्नेश माना जाता है और गुरु मे सवारी तथा-दासियों का सम्बन्ध है अतः शुभ ग्रह स्थित नवमेश पर गुरु की शुभ दृष्टि का होना सवारी तथा नौकरों से सुख पहुचाने का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में नवमेश दशम स्थान में और दशमेश नवम स्थान में स्थित हो तो उसका पिता धनवान तथा प्रसिद्ध होता है और स्वयं भी प्रसिद्ध धनवान होता।
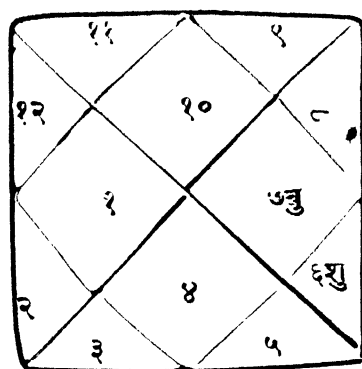
उदाहरण

कारण

नवम स्थान से प्रसिद्धता का सम्बन्ध है उसके स्वामी का दशमेश से क्षेत्र सम्बन्ध होना प्रसिद्ध तथा धनवान होने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य शुभ तथा उच्च का हो और नवमेश ग्यारहवें स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक सुरवीर तथा नेक चरित्र वाला होता है वह अपने पिता को अपने नेक चाल चलन सदैय खुश रखता है।
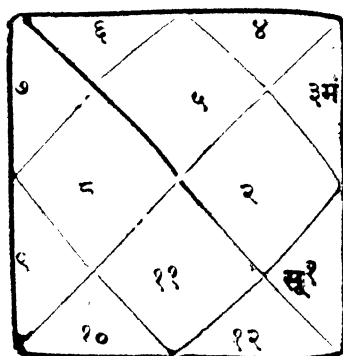
उदाहरण

कारण

सूर्य से पिता तथा नवम स्थान से नेक चरित्रता का सम्बन्ध है तथा एकादश स्थान से शुभ ग्रहों के होने से नेक चरित्र तथा शुभ वार्ता का द्योतक है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य त्रिकोण में स्थित हो और नवमेश सप्तम स्थान में स्थित हो और उसको बृहस्पति देखे तो ऐसा जातक अपने पिता का आज्ञाकारी होता है।
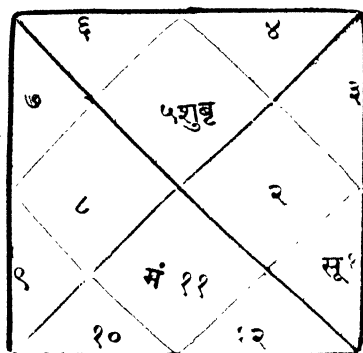
उदाहरण

कारण

नवम स्थान से पिता की आज्ञा का सम्बन्ध है और पिता की लग्न का स्वामी केन्द्र स्थान में हैं और सूर्य से भी पिता की आज्ञा का सम्बन्ध है और गुरु से पुत्र का सम्बन्ध है इसका नवमेश पर मित्र दृष्टि डालना पुत्र को पिता की आज्ञा मानने का कारण है।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में बृहस्पति अपनी धन राशि में स्थित हो और नवमेश केन्द्र में हो तथा लग्नेश बलवान हो तो ऐसा जातक बड़ा भाग्यवान होता है।
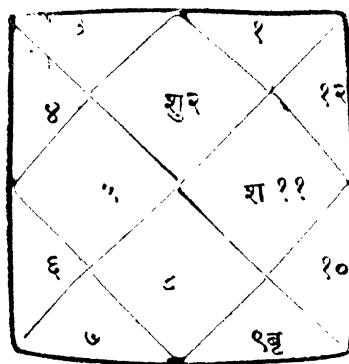
उदाहरण

कारण

बृहस्पति से उन्नती का सम्बन्ध है वह अपनी राशि में स्थित है और नवमेश तथा लग्नेश दोनों ग्रह बलवान है यही भाग्यवान होने का प्रत्यक्ष कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वितीयेश नवम स्थान में स्थित हो और नवमेश धन स्थान में स्थित हो तो वतीस वर्ष के वाद भाग्य का उदय हो और वह सवारी खरीद करें।

उदाहरण

कारण
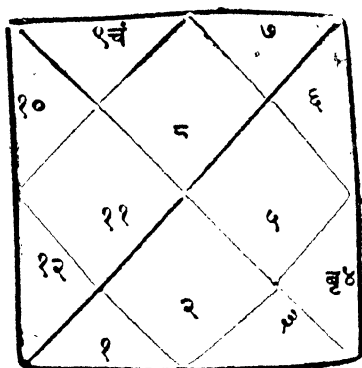
नवमेश का द्वितीय के साथ क्षेत्र सम्बन्ध होना भाग्यवानी का चिन्ह है चूंकि चौथा तथा ग्यारहवां घर सवारी से सम्बन्ध रखता है और द्वितीय घर इनसे ग्यारहवां तथा पांचवा है जो कि सवारी प्राप्त होने का कारण है।

अशुभ योग नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में अष्टमेश सूर्य होकर नवम स्थान में स्थित हो तो उसके बाप की पहिले ही साल में मृत्यु हो जाय।
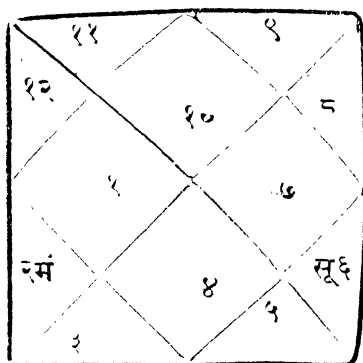
उदाहरण

कारण

सूर्य से पिता का सम्बन्ध है और आठवां घर बाप की उमेद का घर है उसके स्वामी का बाप के खर्च के घर में स्थित होना अशुभ है और पांचवा घर बाप की उम्र का स्थन है जिसके पांचवें घर में अशुभ ग्रह स्थित है यह सब कारण पिता की मृत्यु के लिये हानि कारक है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में नवमे घर में नीच स्थग्रह हो और ग्यारहवें या चौथे मंगल स्थित हो तो उसका बाप कंगाल होता है।
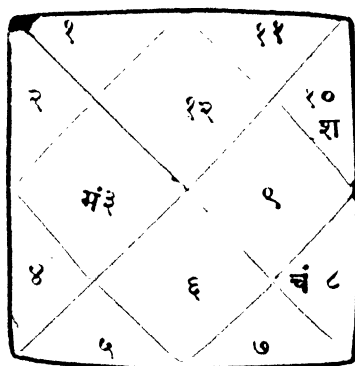
उदाहरण

कारण

एकादश भवन बाप का धन स्थान है उसको मंगल चौथे में स्थित होकर देखता हो और नवम स्थान से बाप का सम्बन्ध है उसके स्वामी का नीच होना पिता की कंगाली का मुख्य कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में नवमेश नीच का हो और द्वादशेश नवम घर में हो तो उसका बाप तीसरे वर्ष मर जाता है।
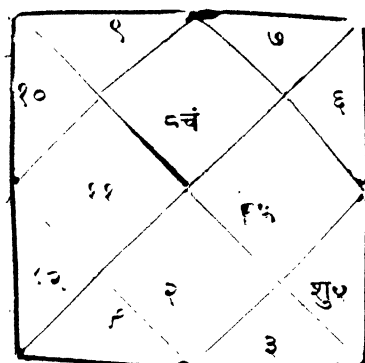
उदाहरण

कारण

तृतीय घर से पिता की उम्र का सम्बन्ध है अतः द्वादश स्थान से पिता की आयु का सम्बन्ध हुवा जिसका की स्वामी पिता के व्यय स्थान (नवम) स्थान में स्थित है और पिता के व्यय स्थान का स्वामी नीचका है अतः यह सब कारण पिता के मृत्यु के हैं।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश आठवें घर में स्थित हो और अष्टमेश सूर्य के साथ पड़ा हो तो उसका पिता उसकी दूसरी साल मर जाता है।

उदाहरण
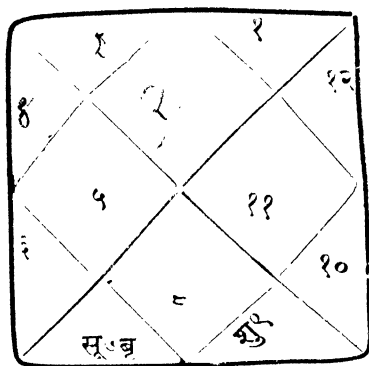
कारण

लग्नेश का अशुभ घर में पड़ना अशुभ है और अष्टम घर मृत्यु स्थान हैं जिसका स्वामी सूर्य से पिता का सम्बन्ध है यही कारण कि वाल्य वस्था में पिता का सुख नहीं मिलता।

दश स्थान सम्बन्धी शुभ योग

इस भवन से राज्य की दशा राजं का कोष या प्रसन्नता जानी जाती हैं और इससे पिता का भी विचार किया जाता है।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश बलवान हो और गुरु उसको देखें तथा एकादशेश दशम स्थान में स्थित हो तो

ऐसा जातक धर्म कार्यों में प्रसिद्ध हो नवमें घर से धार्मिक का सम्बन्ध है और सप्तम घर नवमें स्थान का ग्यारहवां घर है और ग्यारहवा घर सातवें घर से पांचवां उन्नती का घर है और दशम स्थान से प्रसिद्धता तथा गुरु से धार्मिक बातों का सम्बन्ध है अतः धार्मिक कार्य में प्रसिद्ध होना सिद्ध है।

उदाहरण
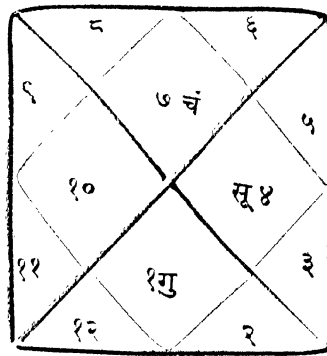
नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशवे स्थान में चन्द्रमा हो और दशमेश त्रिकोण में हो और लग्नेश केन्द्र में हो वह जातक धार्मिक कार्यों में उन्नती करना है।
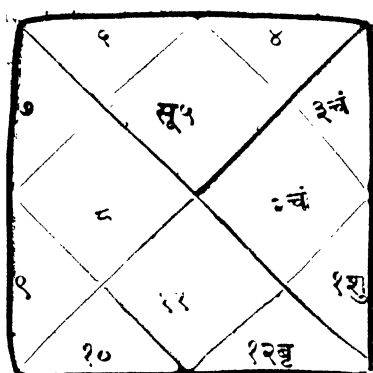
उदाहरण

कारण

यदि किसी घर का स्वामी दूसरे पांचवा या नवमें हो तो उन्नती का कारण और दशवें घर का स्वामि इससे पांचवां हैं तो धार्मिक उन्नती का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में गुरू या शुक्र दशम घर में स्थित हो और दशमेश और लग्नेश से युक्त हो तथा चन्द्रमा उच्च का हो तो वह बुद्धिमान धार्मिक कार्यों में जानकार होता है।
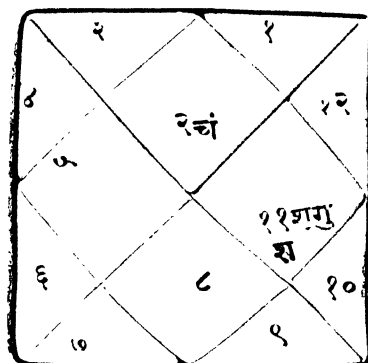
उदाहरण

कारण

शुभ ग्रहों से बुद्धि धर्म या समझ का सम्बन्ध है और लग्नेश का शुभ ग्रहों से युक्त होना भी शुभ है और चन्द्रमा का उन्नती से सम्बन्ध है अतः कारण प्रत्यक्ष है।

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशम स्थान में मीन राशि का शनि स्थित हो तो ऐसा जातक संसार त्यागकर संन्यासी हो जाता है।
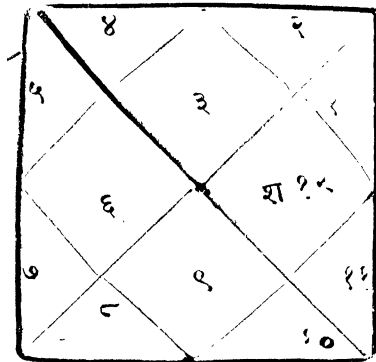
उदाहरण

कारण

बृहस्पति के घर में शनि स्थित है बृहस्पति का सम्बन्ध शुभ वार्त्ता से है और शनि जिस घर में बैठता है उसके बुरे फल को बढ़ा देता है अतः संसार त्याग करने को है।

नम्बर ५

जिस जात की जन्म कुण्डली में राहु उच्च का होकर दशम स्थान में स्थित होना वह जातक तीर्थ यात्रा करता है।
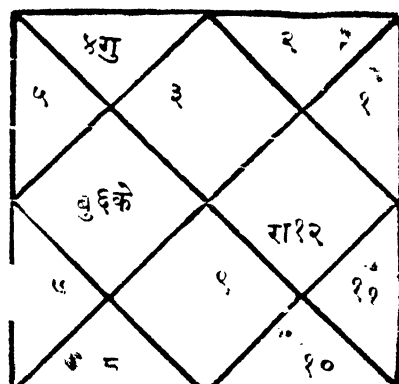
उदाहरण

कारण

चूंकि नवम घर से तीर्थ यात्रा का सम्बन्ध है और राहु वक्री ग्रह है जो की दशवें स्थान से चलकर नवें में उच्च लोटता है अतः यह तीर्थ यात्रा का कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश एकादश स्थान में हो और एकादशेश लग्न में स्थित हो और दशम स्थान में शुक्र स्थित हो तो ऐसा जातक जवाहरात्त वाला होता है।
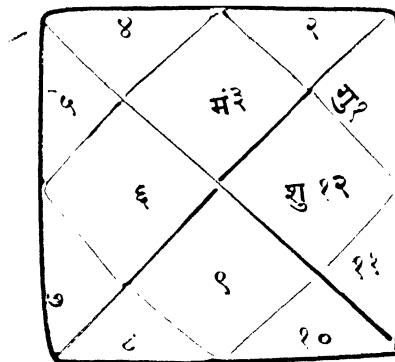
उदाहरण

कारण

एकादश स्थान राज्य के कोठा का घर है जिसका कि स्वामी लग्न में स्थित है और शुक्र से मोती व जवाहरात का सम्बन्ध है जो राज्य स्थान में स्थित है और दशमेश ग्यारहवें स्थान में स्थित है अत कोठा से जवाहरात का लग्न होता है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश बलवान हो और गुरु दशम स्थान में स्थित हो तो ऐसा जातक सवारी वाला तथा जेव - वाला होता है।
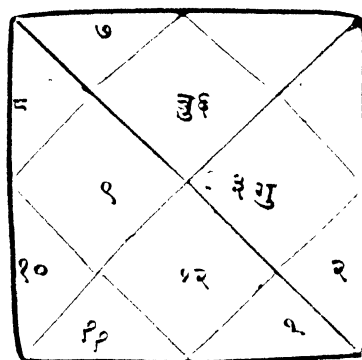
उदाहरण

कारण

द्वितीय घर से वस्त्रों का सम्बन्ध है और दशवां घर द्वितीय स्थान से नवां उन्नती का है और गुरु चतुर्थ स्थान को देखता है और चतुर्थ घर से सवारी का सम्बन्ध है अतः भूषण तथा सवारी पाने का हेतु है।

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश दशम घर में स्थित हो और दशमेश लग्न में स्थित हो या दोनु ग्रह केन्द्र में स्थित हो तो ऐसा जातक सुखी भाग्यवान और बड़ी आयु वाला होता है।
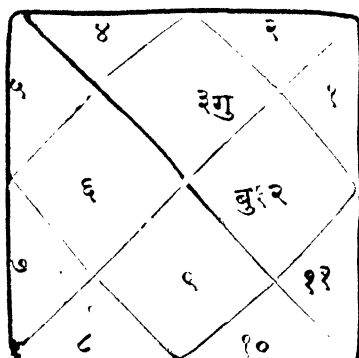
उदाहरण

कारण

यहां क्षेत्र सम्बन्ध है लग्नेश चतुर्थ घर को देखता है और दशम स्थान से आयु का सम्बन्ध है जिसका स्वामी केन्द्र में होना मुख्य कारण है।

अशुभ योग

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश अष्टम स्थान में राहु से युक्त होकर पड़ा हो ऐसा जातक लोगों के विरुद्ध रहता है और वदसूरत कुल में होता है।

उदाहरण

कारण
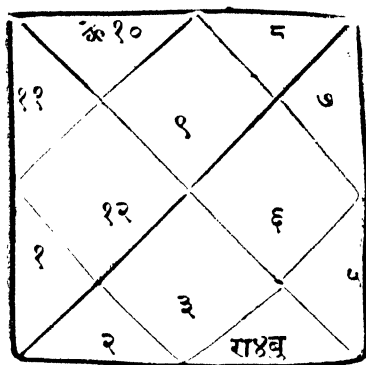
षष्टम घर द्वेष पागलपान तथा कुकर्म का सम्बन्ध है और दशवा घर षष्ठम भवन से पांचवा है और चूंकि पांचवें और नववें स्थान के स्वामी के प्रभाव उसके घर से सम्बन्ध रखने वाले विषयों को उन्नती पहुँचाता है अतः दशमेश का अष्टम घर में रहना और राहु से युक्त होना द्वेष पागल या बुरे कार्यों कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश शुभ ग्रहों के वर्ग में या अशुभ ग्रहों से युक्त हो तो ऐसा जातक दुर्भागी होता है।
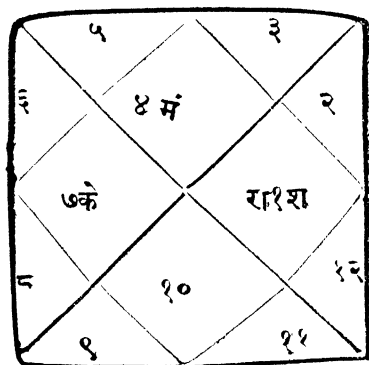
उदाहरण

कारण

दशम स्थान से भाग्यो हृदय का सम्बन्ध है इसके स्वामी औरस्थित ग्रह का अशुभ ग्रहों से युक्त होने के कारण फल भी अशुभ होगया है यही भाग्य की अवनती का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश अशुभ ग्रह हो और लग्न में भी अशुभ ग्रह स्थित हो तो ऐसा जातक अपने मित्र विरुद्ध रहता है और अच्छे आदमी उसकी बुराई करते है।
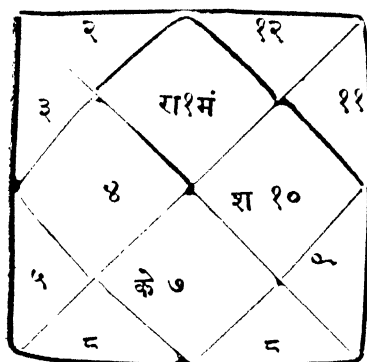
उदाहरण

कारण

लग्नेश शारीरीक बातों से सम्बन्ध है और उसने शुभ कार्यों से भी सम्बन्ध है इसमें अशुभ ग्रहों का स्थित होना कुरूपता अशुभ कार्यों का कारण है और प्रतिष्ठा का नैकर्मा ऐसे

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में दशमेश अपने घर में हों और अष्टमेश दशमें स्थान में बैठा हो और किसी अशुभ ग्रह से युक्त हो तो ऐसा जातक दुराचारी होता है।
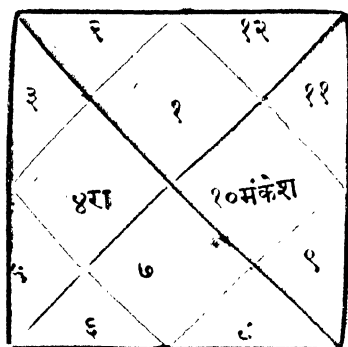
उदाहरण

कारण

दशम स्थान राज्य का है और व्यापार से सम्बन्ध रखता है जिसमें अष्टमेश स्थित हो अष्टम घर से बुरे कार्यों का सम्बन्ध है और अशुभ ग्रहों से युक्त होना उसके फल को उन्नती करते है अतः दुराचारी बनने का प्रत्यक्ष कारण है।

एकादश स्थान सम्बन्धी शुभ योग

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादशे का एकादश स्थान या केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो वह जातक बड़ा मालदार होता है।
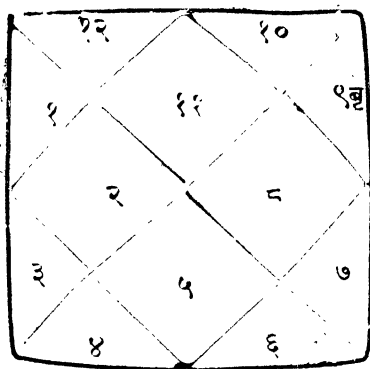
उदाहरण

कारण

एकादश स्थान शुभ घर है इसमें अशुभ वह शुभ ग्रह शुभ ही फल देते है फिर इसके स्वामी का इसीमें या केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो भाग्यशाली बनाने का कारण है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादशेश उच्च का हो तो वह जातक धनवान होता है।
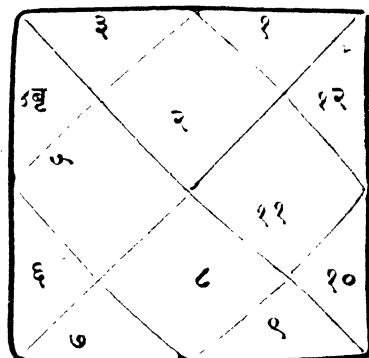
उदाहरण

कारण

एकादश स्थान से धन तथा आपका सम्बन्ध है उसके स्वामी का उच्च पद ग्रहण करना धनवान बनाने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जात की जन्म कुण्डली में द्वितीयेश केन्द्र में हों और एकादशेश का द्वितीय स्थान में हो तथा एकादश स्थान में गुरु हो तो वह जातक भाग्यवान धनवान होता है।

उदाहरण

कारण
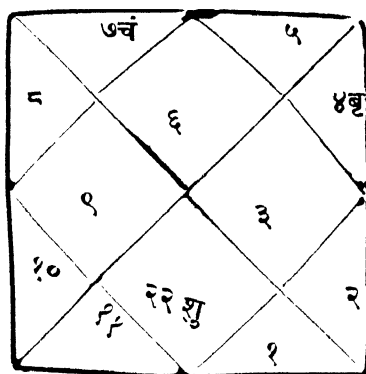
द्वितीय स्थान ग्यारहवें स्थान से केन्द्र का घर हैं और ग्यारहवें घर का स्वामी धन का मालीक हैं और गुरु का धन से सम्बन्ध है अतः यह सब ग्रह धनवान बनाने का कारण है

नम्बर ४

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में हो और शुभ ग्रह से युक्त हो तो ऐसा जातक को ३६ या ४० वर्ष में धन प्राप्त होता है।
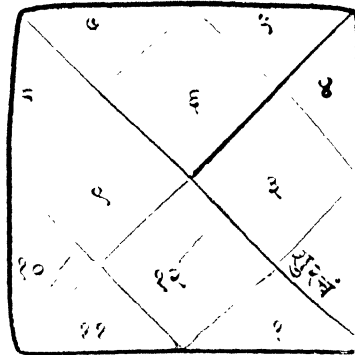
उदाहरण

कारण

एकादशेश का बलवान होना तथा उच्च का होना धन प्राप्ती का कारण हैं

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादश में गुरु दूसरे चन्द्रमा और नवें शुक्र स्थित हो तो ऐसा जातक धनवान होता है।

उदाहरण
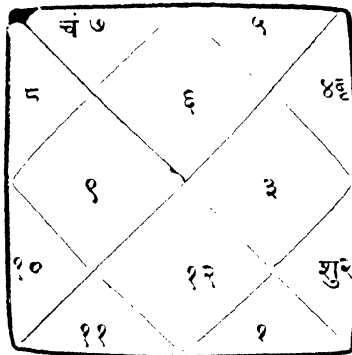
कारण

गुरु शुक्र चन्द्रमा यह तीनों ग्रह शुभ है और धनसे सम्बन्ध है नवां घर उन्नती का ग्यारवा घर दूसरा घर ग्यारवे से केन्द्र का है यह सब धनवान होने का कारण है।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादशेश लग्न में और लग्नेश एकादश में स्थित हो तो ३२ वैतीस वर्ष की आयु में अधिकार धन की उन्नती मिलती है।

उदाहरण
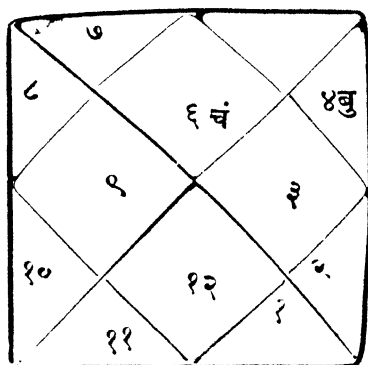
कारण

क्षेत्र सम्बन्ध से एक ग्रह का बल दूसरे ग्रह में पहूंचता है और एकादशेश का लग्नेश के साथ क्षेत्र सम्बन्ध है अतः यही उन्नती तथा धनवान बनाने का कारण है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वितीयेश एकादश में और एकादशेश द्वितीय में हो तो विवाह के पहले ही धन सामग्री मिलती है।

उदाहरण
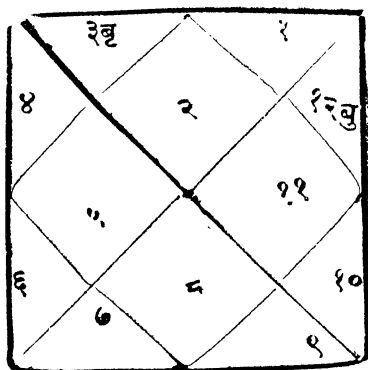
कारण

सप्तमा स्थान से विवाह का सम्बन्ध है और दूसरा घर सप्तम से आठवां है अशुभ और दूसरा घर माल का तथा ग्यारहवां लाभ का है और इन दोनों के स्वामीयों का क्षेत्र सम्बन्ध है शादी में पूर्ण उन्नती का कारण है।

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में पंचमेश ग्यारहवें हो और एकादशेश तृतीय हो तो भाईयों से धन वस्त्र तथा भूषण मिलते है।

उदाहरण
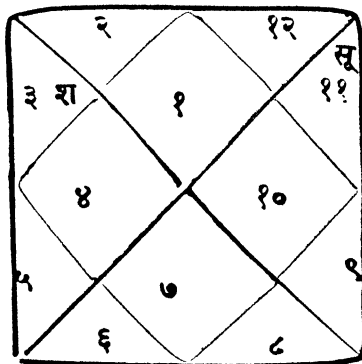
कारण

पंचम स्थान से वस्त्र आभूषणों का सम्बन्ध है। जिसका स्वामी अपने घर को पूर्ण दृष्टी से देखता है अतः वह वस्त्र भूषणों की प्राप्ती का कारण है। और एकादश स्थान का सम्बन्ध आमद से है उसका स्वामी मातृ स्थान में बैठना अतः भाईयों से धन मिलने का है।

अशुभ योग नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में एकादश तथा द्वादश स्थानो में अशुभ ग्रह हों या देखते हो और लग्न में भी अशुभ ग्रह हो या देखते हो ऐसे जातक की आम हानी कम हो जाती है।

उदाहरण
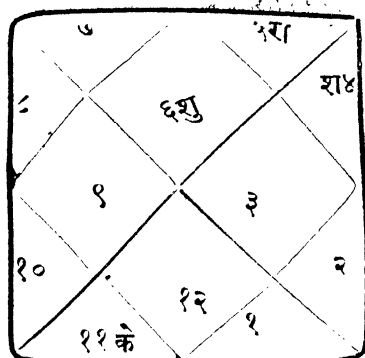
कारण

धन को लग्न का घर ग्यारहवां है और दूसरा (द्वादश) धन स्थान है इनमें अशुभ ग्रहों का होना आय घटाने का है।

द्वादश स्थान सम्बन्धी शुभ योग

इस स्थान से व्यय का होना या न होना शुभ कार्यों में खर्चा होना या अशुभ कार्यों में खर्चा होना आदि विषय विचारे जाते हैं और यात्रा भी देखी जाती है।

नम्बर १

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादशेश चन्द्रमा के साथ पांचवें नवें अथवा ग्यारहवें स्थानों में स्थित हो या उच्च स्थान में स्थित हो या चतुर्थ स्थान में स्थित हो या पंचमेश नवमेश तथा द्वादमेश के वर्गों में हो तो उसको सुखकी सामग्री एकत्रित रहती है और धनवान तथा दूसरों की इच्छा को पूर्ण करने वाला होता है।

उदाहरण
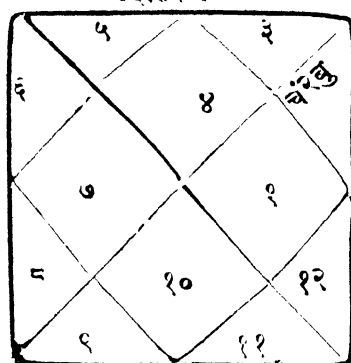
कारण

चन्द्रमा जिस घर में स्थित होता है उस घर से सम्बन्ध रखने वाले विषयों को उन्नती देती है और द्वादशेश चन्द्रमा के साथ होने से चन्द्रमा के स्वभाव वाला हो जाता है और वह ग्रह शुभ ग्रहों में स्थित है अतः फल को उन्नती देगे वह ही कारण सुख पहुँचाने का है।

नम्बर २

जिस जातक की जन्म कुण्डली में लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और द्वादशेश शुक्र के साथ लग्न में स्थित हो तो ऐसा जातक शुभ कार्यों से धन प्राप्त करता है।

उदाहरण
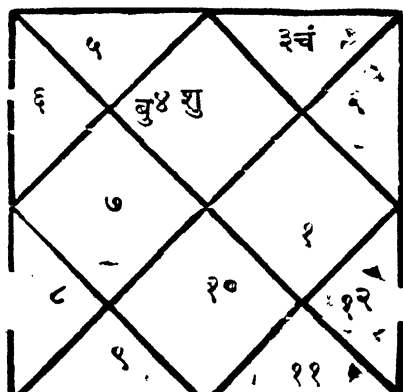
कारण

लग्नेश और द्वादशेश में क्षेत्र सम्बन्धी का होना यद्यपि अपव्ययता का कारण है परन्तु शुक्र से धन का सम्बन्ध है जो कि इनके साथ हैं और द्वादशेश शुभ ग्रह में स्थित है अतः यह सब धन प्राप्त होने का कारण है।

नम्बर ३

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादशेश शुभग्रह के घर में हो और द्वादश घर में शुभग्रह स्थित हो या शुभ देखते हों तो वह जातक अपने ही देश में सुख पूर्वक रहता है।
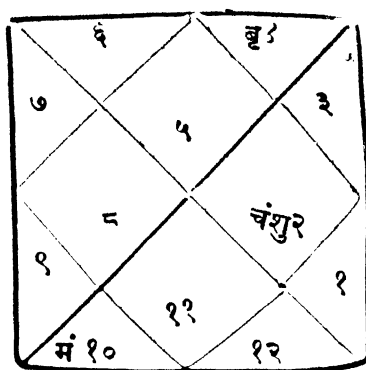
उदाहरण

कारण

चतुर्थ स्थान से अपने मकान का सम्बन्ध है और बारहवां घर चतुर्थ घर से नवां उन्नति का है जो कि अच्छी दशा में है और उसका स्वामी भी अच्छी जगह में स्थित है अतः यह कारण अपने मकान पर सुख पूर्वक रहने का कारण है।

नम्बर ४

जिस जातक की कुण्डली में चन्द्रमा द्वादशेश होकर त्रिकोण या केन्द्र में स्थित हो तो उसको अपनी स्त्री से सुख मिलता है।

उदाहरण
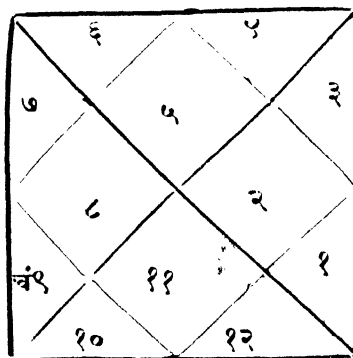
कारण

द्वादश स्थान सप्तम स्थान का छठा या त्रिकोण का है इसके स्वामी का शुभ होना स्त्री से सुख मिलने का कारण है ।

नम्बर ५

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश स्थान में उच्च का शनि स्थित हो तो ऐसे जातक को हर्ष प्राप्त होता है ।

उदाहरण
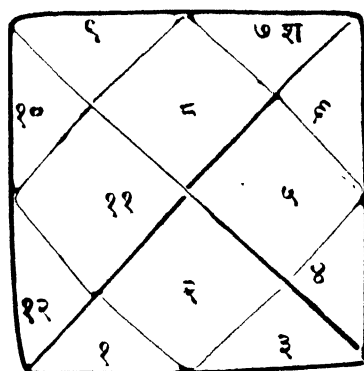
कारण

चूंकि द्वादश स्थान से व्यय का सम्बन्ध है और शनि उस स्थान में बैठा है जो कि खर्च नहीं होता है और प्रसन्नता बढ़ाता है ।

नम्बर ६

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश स्थान में बुध स्थित हो और द्वादशेश उच्च का हो या शुभग्रह से युक्त हो तो वह जातक बड़ी दूर की यात्रा करता है।

उदाहरण
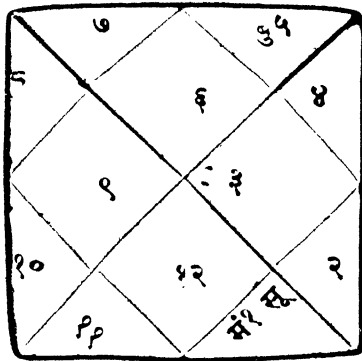
कारण

बुध का सम्बन्ध दूर की यात्रा से है जो कि यात्रा के घर नवम स्थान से चौथे स्थान केन्द्र (द्वादश) में स्थित है और द्वादशेश भी बलवान तथा उच्च का है अतः दूर की यात्रा करने का कारण है।

नम्बर ७

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश स्थान ही द्वादशेश को शुभग्रह देखते हैं तो उस जातक को अधिक यात्रा करनी पड़ती है।

उदाहरण

कारण
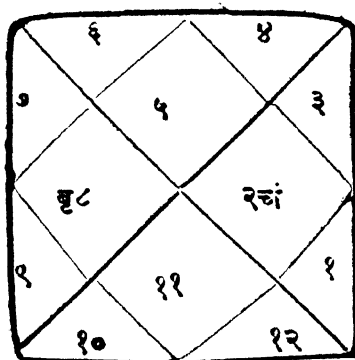
नवम स्थान से यात्रा का सम्बन्ध है उससे चौथा घर द्वादश स्थान है और ।वह केन्द्र हुवा उसको तथा उसके स्वामी को शुभग्रह देखते है अतः यही सब यात्रा के कारण है।

अशुभ योग

नम्बर ८

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादशेश अशुभ ग्रहों से युक्त हो और उसको अशुभ ग्रह देखते हों तो वह यात्रा करता है और अधिक धन खर्चा करता है।

उदाहरण

कारण
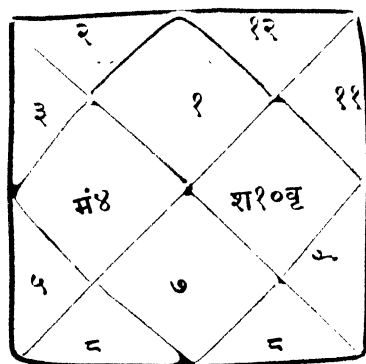
इस योग में विना कारण तथा बिन इच्छा के यात्रा करना धन व्यय होने का कारण है।

नम्बर ९

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश स्थान में राहु पड़ा हो और सूर्य शनि तथा मंगल युक्त हो तथा द्वादशेश भी उसी

स्थान में पड़ा हो तो ऐसा जातक दुराचारी होता है और अशुभ कर्यों में धन खर्च करता है।

उदाहरण
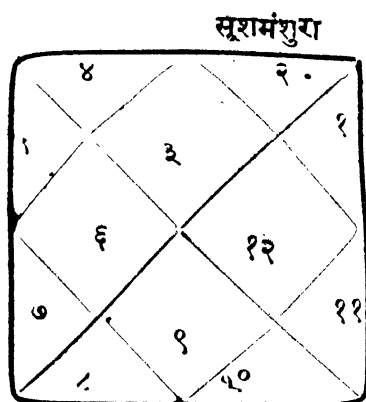
कारण

अशुभ ग्रहों के साथ द्वादशेश का अशुभ ग्रह में स्थित होना बुरे कार्यों में धन खर्च कराने का कारण है।

नम्बर १०

जिस जातक की जन्म कुण्डली में द्वादश स्थान में शनि मंगल और राहु स्थित हो और शुभग्रह उसको देखते हों तो ऐसा जातक कठोरता से धन कमाता है।

उदाहरण
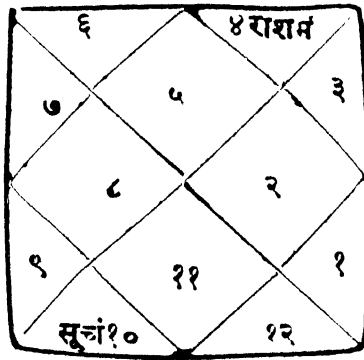
कारण

जो ग्रह बारहवें स्थान में स्थित होते हैं उससे अशुभ बातों का सम्बन्ध है और शुभग्रहों की दृष्टि से धन की उन्नती का सम्बन्ध है अत दुष्टता के साथ धन प्राप्त करने का कारण है।

योग समाप्त

॥ फलित ज्योतिष सम्बन्धी सुनहरे नियम ॥

इस से आगे ऐसे अनुभूत नियम लिखे जाते हैं जिन को जानकर ज्यौतिषी भूत, भविष्य, का हाल लोगों को बता सकता है।

पहला नियम

लग्न स्वामी अथवा विंशोत्तरी दशा का स्वामी अथवा उसके अन्तरों का स्वामी वा वर्ष दशा का स्वामी वा प्रश्न लग्न का स्वामी और उनसे चौथे और दशवें स्थान के स्वामी यदि शुभ ग्रहहों तो उनका प्रभाव अशुभ पड़ता है और वे बनावटी अशुभ कहलाते हैं परन्तु उन पर शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो उनका प्रभाव अच्छा पड़ता है।

दूसरा नियम

पाँचवे, नवें, घरों में जो ग्रह स्थित हों चाहे वे शुभ हों या अशुभ वे सब शुभ ही फल देते हैं।

तीसरा नियम

दूसरे और सातवें स्थान के स्वामी मार्केश कहलाते हैं अर्थात् जब उनकी दशा अथवा उनकी अन्तर दशा आती है उस जातक की मृत्यु होती है और कदाचित् किसी की मृत्यु भंग कारक योग के कारण न भी हो तो मरने के सामान कष्ट होता है और नाना प्रकार का धन हानि, और क्लेश होता है सारांश यह है की वह ग्रह मारने में कसर तो छोड़ता नहीं

परन्तु किसी दूसरे ग्रह के कारण और थोड़ा सा जी प्राप्त हो जाता है।

चौथा नियम

जन्म लग्न से छठे घर का स्वामी अशुभ होता है विशेष कर शुभ ग्रह इस घर में बुरे होते हैं और अशुभ शुभ फल देते हैं। इसका कारण यह है कि छटा घर, चोर, शत्रु रोग आदि का है और शुभ ग्रह जिस घर में बैठते हैं उसकी वृद्धि करते हैं और अशुभ ग्रह उसकी हानि करते हैं। रोग, शत्रु का बढ़ना दुःखदायक है और गटना सुखदायक है इसलिए मंगल, शनि और राहु इस घर मे शत्रुओं का नाश करते हैं।

पांचवां नियम

अष्टमेश सूर्य चन्द्रमा हो तो शुभ होता है इन के सिवाय अन्य ग्रह लग्नेश भी हों तो शुभ होते हैं यदि और ग्रह केवल अष्टमेश हो तो अशुभ होता है।

छठा नियम

दूसरे और बाहरवें घरों के स्वामी शुभ स्थानों में स्थित हों अथवा शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शुभ फलदायक होते हैं और अशुभ स्थान (६, ८, १२) में स्थित हों और अशुभ ग्रहों के साथ हों तो अशुभ फल देते हैं।

सांतवां नियम

पहले केन्द्र वा लग्न स्वामी का विन्शोत्तरी महादशा के

अन्दर बढ़कर होता है और शेष तीन केन्द्रों और त्रिकोणों के स्वामियों के फल महा दशा की अन्तर्दशा के भीतर होता है।

आठवां नियम

जो केन्द्रों, त्रिकोणों के स्वामियों में से किसी ग्रह का समय विन्शोत्तरी दशा के अन्दर हो और उसके अन्दर मारकेश का अन्तर वर्त्तमान हो तो महा अनर्थफल प्राप्त होता है अर्थात् नाना प्रकार से शरीर को कष्ट और धन हानि होती है।

नवां नियम

मारकेश ग्रहों का अनिष्ठ फल अपनी महादशा में होता है और अन्य अशुभ ग्रहों का कुफल अन्तर्दशा में होता है।

दशवां नियम

अशुभ ग्रहों का अनिष्ठ फल अपनी महादशा में अधिक होता है और मारकेश ग्रह की अन्तर्दशा में भी बुरा फल मिलता है।

ग्यारहवां नियम

मारकेश अथवा किसी प्रकार के अशुभ ग्रह की दशा हो उसमें केन्द्र त्रिकोणों के स्वामियों का अन्तर आवे उस में परस्पर किसी प्रकार का क्षेत्र सम्बन्ध वा दृष्टि आदि का शुभ सम्बन्ध न हो तो अनिष्ठ फल अधिक होता है। और जो कोई शुभ सम्बन्ध हो तो मिश्रीत (अच्छा बुरा मिला हुआ) फल होता है।

बारहवां नियम

केन्द्रों के स्वामियों की दशा में त्रिकोण के स्वामी का अन्तर आकर पड़े और उनमें कोई शुभ सम्बन्ध हो तो फल शुभ होगा और सम्बन्ध न हो तो बुरा फल प्राप्त होता है।

तेरहवां नियम

जो ग्रह स्वोदय राशि में स्थित हो वह प्रारम्भ काल में अपना शुभा शुभ फल देता है और जो पृष्ठोदय राशि में बैठा हो उसका फल अन्त में होता है।

चौदहवां नियम

दशमेश का सम्बन्ध पचंम, नवम् घर से हो तो यह यह महाराज योग होता है।

पन्द्रहवां नियम

यह दशमेश, नवमेश स्वक्षेत्रों में स्थित हो तो राज योग होता है !

सोलहवां नियम

दशमेश का किसी त्रिकोण स्वामी के साथ शुभ संयोग हो तो यह भी उत्तम योग है।

सत्रहवां नियम

दशमेश नवम स्थान में स्थित हो तथा नवमेश दशमस्थ हो तो यह भी शुभ योग है।

अठारहवां नियम

त्रिकोण स्वामी का लग्नेश वा चतुर्थेश से शुभ सम्बन्ध हो तो उत्तम योग है।

उन्नीसवां नियम

राजयोग कारक ग्रह शुभ; अशुभ दोनों प्रकार के स्थानों के स्वामी हों परन्तु छठे, आठवें बारहवें स्थान के स्वामी न हों और न उनके स्वामियों से सम्बन्ध रखते हों तो अशुभ घर का अनिष्ठ फल दबा रहता है।

बीसवां नियम

राजयोग कारक शुभ ग्रह का फल विन्शोत्तरी दशा में होता है।

इक्कीसवां नियम

राजयोग कारक ग्रह का सम्बन्ध किसी शुभ ग्रह से हो तो जब राजयोग कारक ग्रह की दशा में उस शुभ ग्रह का अन्तर होगा उस समय राजरोग का शुभ फल प्राप्त होगा।

बाईसवां नियम

राहु, केतु में से कोई ग्रह पहले, चौथे वा दसवें स्थान में स्थित हो और त्रिकोण के स्वामी से सम्बन्ध रखता हो तो शुभ योग होता है यह दृष्ट फल जब राहु केतु की महादशा के अन्तर में त्रिकोण स्वामी की दशा बर्तेगी तब वह इष्ट फल प्राप्त होगा।

तेईसवां नियम

राहु केतु त्रिकोण में स्थित और केन्द्रों के स्वामियों में से किसी एक के साथ सम्बन्ध रखते हों तो भी उत्तम योग समझना चाहिए। यह शुभ फल जब मिलेगा जब राहु केतु के भीतर के स्वामियों का अन्तर होगा।

चौबीसवां नियम

राज कारक योग में कोई अशुभ योग बाधक न होगा तब उसका फल शुभ होगा अन्यथा नहीं अर्थात् अस्त वक्री नीच आदि दोषों से रहित स्वयम्, राजयोग कारक ग्रह हो तथा उसके सम्बन्धी भी निर्दोष हों।

पच्चीसवाँ नियम

विंशोत्तरी महादशा का स्वामी अपने अधिकार के कारण शुभ या अशुभ फल केवल अपनी दशा में नहीं होता हो जब दूसरे ग्रह की अन्तर्दशा उसकी दशा में विराजमान होती है तब उसका फल दिखाई देता हैं।

छब्बीसवां नियम

किसी कुण्डली में राजयोग पड़ा हो तो उसका फल राहु केतु की महादशा में तथा राजयोग कारक ग्रह की अन्तरदशा में भी प्राप्त होता है अथवा उस ग्रह की अन्तरदशा में होता है जिसके घर राहु, केतु स्थिर हों परन्तु राहु केतु १, ४, १०, ५ तथा नवें घर में स्थित हों।

सताईसवां नियम

राहु केतु जिस शुभाशुभ ग्रह के साथ उसका शुभाशुभ प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं ऐसी अवस्था यदि उनकी महादशा में राजयोग कारक ग्रह का अन्तर हो तो उस समय उसका फल कर लेंगे।

अट्ठाईसवां नियम

यदि मारकेश की महादशा वा अन्य अशुभ ग्रह की महादशा हो और उसके मध्यम में राजयोग कारक ग्रह का अन्तर हो और उनके बीच सम्बन्ध न हो तो उसका परिणाम अशुभ होगा।

उन्तीसवां नियम

मारकेश की महादशा में किसी शुभ ग्रह का अन्तर आकर पड़ जावें तो मरण नहीं होता वरन मरण तुल्य होकर टल जाती है।

तीसवां नियम

मारकेश की महादशा में किसी अशुभ ग्रह का अन्तर आकर पड़े तो कोई शुभ सम्बन्ध हो या नहीं मृत्यु अवश्य होगी।

इकतीसवां नियम

शुक्र शनि एक दूसरे के मित्र हैं इसलिए शुक्र की महादशा में जब शनि का अन्तर आकर पड़ता है तो शनि का शुभ फल शुक्र के सदृश होता है और शनि की महादशा में जब शुक्र का

अन्तर आता है तो शुक्र अपना फल छोड़कर शनि का प्रभाव ग्रहण कर लेता है।

बत्तीसवां नियम

प्रत्येक ग्रह जिस की महादशा हो वह अपने अन्तर दशा वाले ग्रह का १—प्रभाव मुख्य होता है और महदशा का शुभा शुभ प्रभाव दब जाता है। २—प्रभाव ग्रहण कर लेता है अर्थात् अन्तर्दशा वाले ग्रह का।

तेतीसवां नियम

लग्नेश दशमेश में नैसर्गिक मित्रता राजयोग कारक होती है और एक दूसरे के अन्तर में राजयोग का शुभ फल होता है।

चौंतीसवां नियम

लग्नेश तथा चतुर्थेश का भी मैत्री सम्बन्ध राजयोग कारक होता है।

पैंतीसवां नियम

मारकेश की अन्तरदशा में राजयोग वर्तने लगे तो लाभ के बदले हानि होती रहती है।

छतीसवां नियम

यदि किसी अशुभ स्थान का स्वामी केन्द्र वात्रिकोण में उच्च का होकर स्थित हो तो शुभ ही फल देता है।

सैंतीसवां नियम

किसी शुभ घर का स्वामी छटे, आठवें, बारहवें स्थान में नीच का होकर स्थित हो तो अनिष्ठ फल देता है।

अड़तीसवां नियम

जिस ग्रह के बारहवें स्थान में अशुभ ग्रह स्थित हो तो उसकी दशा अशुभ होगी।

उन्तालीसवां नियम

जिसके पंचम, नवम स्थान में अशुभ ग्रह पड़ा है तो विद्या सन्तान तथा धर्म की हानी होगी।

चालीसवां नियम

जिस ग्रह से पांचवें, नवें, सूर्य, चन्द्रमा, शनि तथा अष्टमेश वा द्वादशेश स्थित हों तो उसकी दशा में सन्तान की मृत्यु, धन, धर्म का नाश तथा देश का त्याग होगा

इकतालीसवां नियम

जिस ग्रह से छटे, आठवें अशुभ गह नीच का होकर स्थित हो तो उसकी दशा में रोग, शत्रु तथा चोरी से हानि होगी।

ब्यालीसवां नियम

जिस ग्रह से चौथे घर में मंगल हो तो उसको दशा में अग्नि का भय, माता का क्रोध तथा भूमि की हानि होती है।

तैंतालीसवां नियम

जिस ग्रह से चौथे घर में शनि हो तो शरीर को कष्ट मिले।

चौबालीसवां नियम

जिस ग्रह से चौथे घर में सूर्य स्थित हो तो उसकी दशा में राजभय होता है।

पैंतालीसवां नियम

जिस ग्रह से चौथे घर में राहु पड़ा हो तो उसकी दशा में चोर, तथा विष का खटका और धन की हानि होती है।

छियालीसवां नियम

जिस ग्रह से दशवें स्थान में राहु स्थित हो तो उसकी दशा में तीर्थ स्थान की यात्रा होती है।

सैतालीसवां नियम

जिस ग्रह से चौथे स्थान पर शुभ ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो अथवा निजक्षेत्री हो तो उसकी दशा में पशु-सवारी तथा नगर का शासन प्राप्त होता यदि चन्द्रमा स्थित हो तो पुष्कल अन्न मिले शुक्र हो तो गाने बजाने में अभिरुचि हो, गुरु हो तो धन तथा उत्तम सवारी प्राप्त हो।

अड़तालीसवां नियम

जो ग्रह नीच राशि वाले छठे, आठवें, ग्यारहवें स्थान में

स्थित हो और अशुभ गृह के साथ हो तो उसकी दशा दुखदायक होती है उसमें रोग, ऋण, झगड़ा जेलखाना तथा अकाल मृत्यु तक महाकष्ट उत्पन्न होता है।

उन्चासवां नियम

षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो उनका अशुभ फल घट जाता है।

पचासवां नियम

केन्द्र त्रिकोण के स्वामी छठे, आठवें स्थान में स्थित हो तो अपने सम्बन्ध वाले स्थानों पर अशुभ प्रभाव डालते हैं।

इक्यावनवां नियम

दूसरे सातवें स्थानों में स्थित ग्रह जो अशुभ हो वह भी मारक होता है।

बावनवां नियम

शनि जिस घर में स्थित होता है उसकी वृद्धि करता है और जिस को देखता है उसकी हानि करता है और गुरु जिस घर में बैठता है उसकी हानि करता है और जिस पर दृष्टि डालता है उसको बढ़ाता है जैसा कि प्रसिद्ध है (स्थान हानि करो जीवः, स्थान वृद्धि करो शनिः)

त्रेपनवां नियम

राहु केतु तथा बुध दूसरे व बारहवें घर के स्वामी होकर द्विस्वभाव के होते हैं यह जैसे गृह के साथ मिलते हैं वैसे ही

हो जाते हैं अर्थात् शुक्र, गुरु, सोम के साथ शुभ फल देते हैं और मंगल शनि के साथ हो तो अशुभ फल देते हैं।

चौअवनवां नियन

शुभ गृह जैसे शुभ वा अशुभ स्थान में स्थित हों उसके शुभा-शुभ फल को बताते हैं और अशुभ (क्रूर तथा पाप गृह) अच्छे तथा बुरे दोनों प्रकार के फलों को घटाते हैं इसलिए शुभ गृह शुभ स्थानों में अति शुभ फल देते हैं और अशुभ स्थानों में अशुभ फल को बढ़ाते हैं यदि अशुभ गृह अशुभ स्थान में स्थित होंगे तो अशुभ फल को कम करने के कारण शुभ होंगे और शुभ घर में बैठकर उसके शुभ प्रभाव को घटाने के कारण हानि कारक सिद्ध होते हैं।

पचपनवां नियम

राहु, दूसरे, छठे, चौथे, आठवें, बारहवें घरों को छोड़कर द्विस्वभाव घर अर्थात् तीसरे नवें स्थान में स्थित हो तो अति-लाभदायक होता है।

छपनवां नियम

पञ्चमेश, नवमेश में परपर शुभ सम्बन्ध हो तो प्रताप की वृद्धि और भाग्य का उदय होता है।

सतावनवां नियम

दशमेश पचंम स्थान में स्थित हो तो लाभ तथा सुख-दायक होता है।

अट्ठावनवां नियम

छठे सातवें स्थान के स्वामी यदि दशम स्थान में स्थित हों अथवा दशमेष के साथ एक स्थान पर विराजमान हों तो शुभ फल दिखलावे हैं।

उनसठवां नियम

यदि लग्न अपने द्वादशांश या ड्रेष्काण में हों तो शुभ फल देता है।

साठवां नियम

जो गृह अपने त्रतिआंश या अपने मित्र के त्रतिआंश में हो अथवा नवांश, द्वादशांश में हो तो अपनी दशा में शुभ फल देता है।

इकसठवां नियम

पचंम स्थान में जो लग्न है उसके नवांश वा द्वादशांश में जो गृह हैं अच्छी दशा में शुभ फल देता है।

बासठवा नियम

नवम स्थान में जो लग्न है उसके नवांश वा द्वादशांश में जो गृह स्थित है यदि वह बृहस्पति के द्रेष्काण में हैं उसकी दशा में शुभ फल प्राप्त होता है।

तिरेसठवां नियम

चौथे भवन के नवांश वा द्वादशांश में जो गृह अपने वा चौथो लग्न के द्रेष्काण में हो तो उसकी दशा में शुभ फल प्राप्त होता है।

चौसठवां नियम

छठे, आठवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थान के स्वामियों की दशा दुखदाई होती है।

पैंसठवां नियम

(क) लग्नेश और षष्ठेश चन्द्रमा के होरा द्रेष्काण नवांश वा द्वादशांश में स्थित हो तो जल में डूबने का भय हो और जब की लग्नेश को दशा वर्तमान हो तो भोजन नहीं पचता।

(ख) यदि बुद्ध के होरा, द्रेष्काण, नवांश अथवा द्वादशांश में स्थित हो तो वातव्याधि से कष्ट होता है।

(ग) यदि शनि के होरा, द्रेष्काण, नवांश अथवा द्वादशांश में स्थित हो तो सन्निपात आदि बात सम्बन्धी रोग सताते हैं।

(घ) यदि शुक्र के होरा आदि में हो तो वीर्य विकार उत्पन्न हो जाता है।

छियासठवां नियम

राहु, केतु, जब किसी स्थान में अकेले स्थित हों तो राहु की अन्तिम दशा निषिद्ध होती है और प्रथम दशा शुभ होती है, केतु की आरम्भिक दशा निकृष्ट और अन्तिम दशा उत्तम होती है।

सरसठवां नियम

प्रत्येक ग्रह जिस स्थान पर दृष्टि डालता है उसके बल

को बढ़ाता हैं विशेष कर जब कोई ग्रह किसी घर का स्वामी होकर उस पर दृष्टि डालता है तो उसका फल उत्तम होता है।

अड़सटवां नियम

महादशा के स्वामी तथा अन्तरदशा के स्वामी में शुभ सम्बन्ध होता है तो परम शुभ फल का लाभ प्राप्त होता है।

उनहत्तरवाँ नियम

महादशा के स्वामी तथा अन्तरदशा के स्वामीयों का अशुभ सम्बन्ध शत्रुता आदि का होता है जो अशुभ फल का वाहुलय होता है।

सत्तरवाँ नियम

यदि महादशा के स्वामी और अन्तर्दशा के स्वाली में कोई सम्बन्ध नहीं होता तो फल शून्य रहता है अथवा नाममात्र फल प्राप्त होता है।

इकत्तरवाँ नियम

यदि महादशा का स्वामी बली और शुभग्रह है और अन्तर्दशा का ग्रह भी बली और शुभ है तो सर्वोत्तम सुखदायक फल मिलता है।

बहत्तरवाँ नियम

यदि महादशा का स्वामी तथा अन्तर्दशा का स्वामी दोनों अशुभ और निर्बल है तो महा अशुभ फल प्राप्त होता है।

तिहत्तरवाँ नियम

यदि दोनों दशाओं के स्वामियों में से एक बली और दूसरा निर्वल होता है तो फल समान्य तथा शुभाशुभ से मिश्रत होता है।

चौहत्तरवाँ नियम

यदि महादशा का स्वामी एक शुभ स्थान तथा दूसरे अशुभ स्थान का स्वामी है तो भी शुभाशुभ मिश्रत फल होगा जैसे बृष लग्न का स्मामी शुक्र लग्न में स्थित है तो वह लग्नेश केन्द्रवर्त्ती होने से तो फल देगा परन्तु वह तुला का भी स्वामी है। तुला लग्न छठे घर का हैं इसलिए लग्नेश षष्ठेश भी है अतः सामान्य रहा, ऐसे ही मिथुन का बुद्ध तथा बृहस्पति मिथुन और धन लग्न में पंचम स्थान में स्थित हैं परन्तु दोनों छठे घर के भी स्वामी हैं अतः मिश्रन फल देगें।

नोटः—इसमें भी एक और बारीक बात है कि पंचम घर में है तो कुछ शुभ और अष्टम घर में पड़कर महा अशुभ दोनों घरों को हानिकारक होता है।

द्वादश भाव फल

किसी कुण्डली का फलित निर्णय करने के लिये पाठकों को सुविधा हो इस हेतु से द्वादश भाव सप्तग्रह तथा उनकी दृष्टि का फल उदाहरण रूप से संक्षिप्त में यहां लिखना हम आवश्यक समझते हैं और आशा करते है कि इसे जानने में पाठकों को कुछ आनन्द अवश्य मिलेगा। जैसेः—

१ तनु स्थान

१—लग्नेश शुभग्रह होकर यदि केन्द्र स्थान में स्वराशि मित्रराशि-उच्चराशि मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट न हो तो मनुष्य सुस्वरुप, विद्वान, धनी, निरोगी व सुखी होगा।

२—लग्न स्थान पर मंगल की दृष्टि हो अथवा वह पापग्रह से युक्त व दृष्ट होकर लग्न को देखता हो तो मनुष्य के चेहरे पर चेचक या घाव के दाग होना चाहिये।

३—लग्न में गुरु व शुक्र हों अथवा उनकी दृष्टि हो तो मनुष्य निरोगी पुण्य शील दूसरों पर छाप रखने वाला होगा।

४—लग्न में उच्चराशि का गु. बु. शु. हो तो मनुष्य अतुल विद्या व धन प्राप्त करेगा।

५—लग्नेश यदि ६, ८, १२ भाव में स्थित हो तो मनुष्य मद्दमी पुत्र होने पर भी वह अन्त में निर्धन होगा।

६—लग्न में चन्द्र या शुक्र हो तो ममुष्य विलासी व खर्चीला होगा।

७—लग्न में तुलाराशि का शुक्र हो तो मनुष्य दो स्त्री से विलास करेगा।

८—लग्न में बुध और सप्तम में गुरु हो तो मनुष्य हंसकर बोलने वाला होगा।

९—उच्चराशि का ग्रह यदि केन्द्र में हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा!

१०—लग्नेश पंचमेश लाभेश व भाग्येश उच्चराशि में होकर अपने भाव में ही स्थित हों और अपने ग्रहों से दृष्ट हों अथवा शुभ ग्रह १-४-७-१० भाव में स्थित हों तो मनुष्य को अनेक प्रकार का सुख ऐश्वर्य व अधिकार प्राप्त होगा।

२ धन स्थान

१—इस भाव में चन्द्र या गुरु स्थित हों और शनि उन पर दृष्टी देता हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

२—इस भाव में उच्च राशि का गुरु शुक्र हो तो भी श्रीमा होगा।

३—धन भाव में शनि होकर बुध या गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

४—धन भाव में मकर या कुंभ का बुध मंगल हो और सूर्य से दृष्ट हो तो मनुष्य विनोदी हंसने वाला होगा।

५—धन भाव में सू. मं. श. हों और गुरू की दृष्टि न हो तो मनुष्य धन हीन होगा।

६—धन भाव में बुध या चन्द्र हो और शनि की दृष्टि हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

७—इस भाव में सू. शु. मं. हो तो धन नाश होगा।

८—धन भाव में चन्द्र या शुक्र पापग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य पर स्त्री रत होगा।

९—इस भाव में उच्च का सू. बु. गु. श. हो तो मनुष्य नृबली या नेता होगा।

१०—धनेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

११—धनेश गुरू होकर मंगल से युक्त इसीभाव में हो तो मनुष्य धनवान होगा।

१२—द्वितीय भाव का स्वामी जहाँ स्थित हो उस भाव का स्वामी यदि ६-८-१२ भाव में हो तो मनुष्य के वाणी में दोष जानना।

१३—धनेश शुक्र से युक्त व पापग्रह से दृष्ट होकर ६-८-१२ भाव में हो तो नेत्र दोष व दरिद्र योग जानना उसे प्रापंचिक सुख की कमी रहेगी।

१४—धनेश केन्द्र में व लग्नेश त्रिकोण में गुरू शुक्र से दृष्ट हो तो द्रव्य लाभ होगा।

१५—धनेश लाभ भाव में और लाभेश धन भाव में हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

१६—धनेश व लाभेश एकत्र होकर पाप भाव में पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो आजन्म दरिद्री जानना।

१७—धन भाव में सू. बु. गु. शु. उच्च राशि का हो तो कुटुंब के लोग ऊंचे दर्जे के और नीच राशि का हो तो नीचे दर्जे के और साधारण हो तो साधारण दर्जे के होगें। परन्तु मनुष्य भारी कुटुम्ब का सदस्य होगा।

१८—चन्द्र धनराशि में हो तो मनुष्य विद्या सम्पन्न धर्म शास्त्र में प्रवीण व गणितज्ञ होगा।

१९—बुध स्वराशि में या मित्र राशि में हो तो मनुष्य विनोदी हास्यमुख गणित, ज्योतिष, गायनवादन विद्या में निपुण होगा।

२०—चतुर्थेश मंगल यदि धन भाव में हो तो मनुष्य को खट्टा व नमकीन पदार्थ की अधिक रूचि होगी।

२१—धन भाव में गुरु हो तो मनुष्य विद्वान, शास्त्रज्ञ, कीर्तन व्यास्थान करने में चतुर होगा।

२२—धन भाव में शुक्र हो तो मनुष्य मैथुन प्रिय शौकीन सुन्दर नेत्र बाला रत्न परीक्षक व संग्रही होगा।

२३—धन भाव में रा. के. श. मं. हो तो क्रोधी होगा।

२४—धनेश शुभग्रह होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो विद्वान व धनवान जानना।

२५—धनभाव पर सू. मं. श. की दृष्टि हो तो धनहीन होगा।

२६—धनभाव में चन्द्र पर यदि बुध की दृष्टि हो तो मनुष्य धनवान होगा परन्तु यदि बुध हो और चन्द्र की दृष्टि हो तो मनुष्य दरिद्री होगा।

२७—सूर्य पंचमेश होकर धनभाव में हो तो मनुष्य वेदान्त व वेद में प्रवीण होगा और सूर्य चतुर्थेश हो तो उच्च पदार्थ और खारी वस्तु खाने की रुचि होगी।

३ सहज स्थान

१—तृतीय भाव में जितने अधिक शुभग्रह हों उतना ही अधिक मनुष्य पराक्रमी शक्तिशाली व परोपकारी होगा।

२—इसभाव में मंगल हो तो कनिष्ट बंधु का सुख मिलना या कनिष्ठ भाई का होना भी प्रायः असंभव समझना परन्तु मनुष्य पराक्रमी होगा। मंगल से चन्द्र युक्त हो तो युक्ति से धन प्राप्ति करेगा, चन्द्र स्थित हो गुरू से दृष्ट हो तो मनुष्य श्रीमान् होगा।

३—इसभाव में पापग्रह हो अथवा तृतीयेश ६-८-१२ भाव में हो तो बंधु सुख का नाश जानना।

४—तृतीयेश शुभ हो केन्द्र या त्रिकोण में हो तो बंधु भगिनी का पूर्ण सुख मिलेगा।

५—तृतीयेश धनभाव में और धनेश तृतीय में या

३-१० का स्वामी होकर तृतीय में हो तो मनुष्य स्वपराक्रम से धन प्राप्त करेगा।

६—तृतीयेश शुभग्रह होकर तृतीय में ही हो तो उपजीविका का साधन आप से आप प्राप्त होगा।

७—तृतीय भाव में विषम राशि और तो भाई समराशि हो तो भगिनी की अधिक संख्या होगी।

८—तृतीय भाव में शनि हो तो बड़े भाई को सूर्य हो तो छोटे भ्राता को और मंगल हो तो दोनों का नाश करता है।

९—तृतीयेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य पराक्रमी यशस्वी और भाई भगिनी सुखी होगा।

४ सुहृत् स्थान

१—चतुर्थेश केन्द्र त्रिकोण धन या लाभ भाव में हो तो मनुष्य सम्पत्तिवान् होगा।

२—चतुर्थेश गुरू शुक्र से युक्त व दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य स्वपराक्रम से स्थावर स्टेट संपादन करेगा।

३—चतुर्थेश नवमेश से युक्त हो गुरू से दृष्ट हो अथवा मंगल एकादश में व चन्द्र नवम भाव में हो तो वह राजपूज्य होकर गज वाहन का सुख भोगेगा।

४--चतुर्थेश चतुर्थ में हो और मगल व गुरु की दृष्टी हो तो ग्रह प्राप्ती होगी।

५--चतुर्थेश शुभग्रह हो या शुभग्रह से दृष्ट हो तो मातृ सुख मिलेगा।

६--इस भाव पर शनि की दृष्टी हो तो बालपन में माता की मृत्यु या मातृ सुख नाश जानना व विमाता भी योग होगा।

५ सुत्त स्थान

१--पंचमेश चतुर्थ स्थान में हो तो प्रथम कन्या होगी।

२--लग्न या धन भाव में चं. मं. शु. एकत्र या पृथक हों तो पुत्र प्रथम होगा।

३--पंचम भाव पर जितने शुभग्रह की दृष्टी हो उच्च राशि हो उससे संतती संख्या दुगुनी या उतनी ही होगी। पुरुष ग्रह की दृष्टी हो तो पुत्र-व स्त्री ग्रह की दृष्टी हो तो कन्या की संख्या का विचार करना चाहिये।

४--इस भाव में कुम्भ का शनि यदि गुरु से दृष्ट हो तो पांच पुत्र और मकर का मंगल हो तो कन्या संतती होगी।

५--स्वग्रह का गुरु हो तों पांच पुत्र होगें।

६--शनि केन्द्र में या त्रिकोण में होकर शुभग्रह से दृष्ट हो किंवा लाभ भाव में हो तो मनुष्य कायदा प्रिय या वकील होगा।

७—८०१० राशि का शनि केन्द्र या १-२-३-९-११ भाव में हो तो या स्वराशि का या नवम भाव में गु. चं. परस्पर दृष्ट करते हो तो मनुष्य वकील होगा।

८—शु. बु. २-५-९-११ भाव में हो तो मनुष्य वेदान्ती होगा।

९—५-११ भाव में बहुत ग्रह हों तो मनुष्य विद्वान व कारस्थानी होगा।

१०—बुध मंगल परस्पर सांतवे भाव में हो तो मनुष्य इन्जीनीयर होगा।

११—२-३ भाव में सू. चं. बु. हो तो गणितज्ञ होगा।

१२—लग्न भाव या मिथुन राशि में शुक्र हो तो शास्त्री होगा

१३—पंचम भाव के अंक के समान संतान होवे अथवा पंचम भाव के नावांश संख्या के समान सन्तान होवे।

१४—पंचम भाव पति जिस सख्या के नवांश में स्थित होवे उतनी सन्तान संख्या होवे। यदि पंचम भाव में शुक्र नवांश होवे अथवा पंचम भाव नवांश शुक्र कर दृष्ट होवे तो बहुत सन्तान होवे।

१५—यदि लग्न से तृतीय भाव में बुध स्थित होवे तो दो पुत्र तीन कन्या होवे इसमें सन्देह नहीं।

१६—यदि कुम्भ राशि पर शनि पंचम भाव में स्थित होवे तो पुरुष पांच पुत्रों वाला होता है। और मकर राशि का मंगल पंचम भाव में स्थित होवे तो तीन पुत्री होता है।

१७--यदि शुभग्रह लग्न में स्थित होवे वा लग्नको देखता होवे तो बाल्यावस्था में पुत्र प्राप्ति होवे। और दशम भाव में शुभग्रह स्थित होवे अथवा दशम भावको देखता होवे तो तरुणावस्था में पुत्र होवे। यदि सप्तम भाव में शुभग्रह होवे या देखता होवे तो जवानी में सन्तान होवे और शुभग्रह यदि चतुर्थ भाव में होवे या देखता बुढ़ापे में सन्तान होवे।

१८--पंचम भाव में धन राशि का गुरु होवे तो बहुत कन्या होवे और कर्क राशि का बुध पंचम भाव में होवे तो तृतीय स्त्री से बहुत पुत्र होवे।

१९--पंचम भाव में वली पापग्रह होवे या पापग्रह देखता हो तो मनुष्य के सन्तान नहीं होवे।

२०--पंचन भाव में पापग्रह होवे तो मनुष्य धन-जन-पुत्र से हीन होता है।

२१--बृहस्पति वा सूर्य वा मंगल नीच वा अस्तंगत वा शत्रु राशि होकर पंचमभाव में स्थित होवै तो मृत वत्सा योग जानना।

२२--यदि पंचम भाव में मकर कुम्भ राशि होवे या शनि होवे और चन्द्रमा से दृष्ट होवे तो दत्तक पुत्र होवे अथवा बुध से दृष्ट होवे तो खरीदा पुत्र होवे।

२३--पंचम भाव में राहु होवे तो गर्भ में बालक मृत्यु को प्राप्त होवे अथवा केतु होवे तो शस्त्रों से पीडीत होकर मृत्यु को

प्राप्त होवे। लेकिन ग्रहों का चलावल विचार कर फल कहना—

६ रिपु स्थान

१—इस भाव में शुभ ग्रह स्थित हो अथवा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा पापग्रह हों तथा उसकी दृष्टि हो तो मनुष्य रोगी गुप्त शत्रु होगा परन्तु मातुल पक्ष से सुख मिलेगा।

७ जाया स्थान

१—सप्तमेश उच्च राशि में शुभग्रह से युक्त या दृष्ट अथवा इस भाव में शुभग्रह हो तो आज्ञाकारी व धर्माभीमानी भार्या मिलेगी।

२—सप्तमेश सू. मं. चं. शु. या श. मं. रा. के. से युक्त व दृष्ट हो तो मनुष्य व्यभिचारी हो विधवा स्त्री से प्रेम व सहवास करेगा।

३—सप्तम भाव में जो राशि या ग्रह हो अथवा जिस ग्रह की युक्ति या दृष्टि हो तो उसके अनुसार स्त्री को रूप-रंग गुण-स्वभाव आदि का निश्चय करना चाहिये।

४—इस भाव में शुक्र यदि मंगल शनि राहु ये तीनों या एक ग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो मनुष्य व्यभिचारी होगा।

५—इस भाव में शुक्र यदि उच्च राशि का हो अथवा पाप-ग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो उच्च कुल के स्त्री से स्वगृह का हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो स्वजाति के स्त्री से शत्रु क्षेत्री या नीच राशी से पापग्रह से दृष्ट हो तो नीच जाती के स्त्री से व्यभीचार

करेगा।

६—इस भाव में कर्क का चन्द्रमा हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो सुन्दर-रूपवान गौरवर्ण पतिव्रता स्त्री से विवाह होगा। और यदि उच्च का पापग्रह हो तो पति-पति पर उसका अधिकार प्रभाव रहेगा।

७—सप्तमेश लाभ में हो अथवा इस भाव पर श. मं. चं. शु. स्थित हो तो मनुष्य पर स्त्री संग करेगा।

८—इस भाव में मिथुन का शुक्र हो तो मनुष्य व्यभिचारी होगा।

९—इस भाव में शुक्र होकर इससे द्वितीया व द्वादस भाव में पापग्रह हो और इस पर पापग्रह की दृष्टि वह नपुंसक होगा।

१०—मगल की दृष्टि इस भाव पर हो तो भार्या का नाश और द्वितीय विवाह योग जानना।

११—सप्तमेश वक्री नीच राशि का या शत्रु क्षेत्र और अशुभ भाव में हो तो स्त्री सुख नाश योग जानना।

१२—सप्तम भाव में रवि पापग्रह से दृष्ट हो तो बंध्या स्त्री से चन्द्र हो तो स्वजाति के स्त्री से मंगल हो तो रजस्वला स्त्री से बुध हो तो वैश्या जाति के स्त्री से गुरु हो तो ब्राह्मण जाति के स्त्री से श. रा. के. हो तो नीच जाति के स्त्री से मनुष्य रमण करेगा।

१३—इस भाव में सूर्य हो तो स्त्री के स्तन कड़े व खड़े मंगल हो तो छोटे श. रा. हो तो लंबे और शुभग्रह हो तो उत्तम व गोल होंगे।

१४--इस भाव में श. या मं. अपने राशि का हो अशुभ ग्रह से दृष्टि व युक्त हो तथा शुभग्रह से दृष्ट न हो तो स्त्री पर पुरुष गामिनी होगी।

१५--इस भाव में शुक्र १-८ राशि का हो मं. से युक्त व दृष्ट हो तो मनुष्य अत्यन्त विषयी होगा।

१६--शुक्र इस भाव में चं. मं. सू. श. शुक्र से चतुर्थ सप्तम और अष्टम हो तो स्त्री जलकर मरेगी।

१७--चन्द्र से शनि सप्तम भाव में हो और मंगल से दृष्ट हो तो पुनर्विवाह योग जानना।

१८--सप्तमेश जहां हो वहां से १-४-७-८-१२ इन भावों में मंगल या पापग्रह हो तो बहुभार्या योग जानना।

१९--इस भाव पर मंगल और गुरू दोनों की दृष्टि हो तो मनुष्य पर स्त्री सुख से परांग मुख होगा।

२०--सप्तमेश उच्च राशि का होकर अपने भाव पर दृष्टि करता हो व इस भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो सुन्दर स्त्रीयों की प्राप्ति योग।

२१--सप्तम भाव में २-७ राशि का शुक्र या चन्द्र शनि से दृष्टि या युक्त हो तो बहुस्त्री लाभी।

२२--लग्न में कर्क का चन्द्र हो सप्तम में मंगल और नवम में शुक्र हो तो स्त्री पतिव्रता होगी।

८ अष्टम स्थान

१--इस भाव पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य दीर्घायु होगा।

२—अष्टमेश व लग्नेश पापग्रह से युक्त व दृष्ट हों अशुभ भाव में हों और शुभग्रह से दृष्ट न हों तो मनुष्य अल्पायुषी होगा।

३—सू. चं. बु. द्वादश भाव में हों तो अल्पायुषी होगा।

४—अष्टमेश केन्द्र में व लग्नेश निर्बली हो तो अल्पायुषी होगा।

५—अष्टम में शुभग्रह और केन्द्र व त्रिकोण में अशुभग्रह हो तो अल्पायुषी होगा।

६—लग्न में चन्द्र पापग्रह से युक्त व अष्टम में मंगल हो तो माता व बालक को अरिष्ट जानना।

७—अष्टम स्थान में जो राशि हो और वह राशि चक्र में दिये हुए अंग विभाग के जिस स्थान पर आति हो उसी स्थान में रोग होकर मनुष्य की मृत्यु होता है।

८—अष्टमेश पापग्रह होकर लग्न में हो तो चेहरे पर चेचक के दाग होंगे।

९ नवम स्थान

१—भाग्येश भग्य भाव में होकर यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य भाग्यवान होगा।

२—भाग्येश गुरू होकर १-३-४ भाव में हो तो मनुष्य भाग्यशाली सम्पत्तिवान व विलासी होगा।

३—श. चं. या मं. चं. इस भाव में उच्च राशि का हो तो मनुष्य मंत्री सलाहकार होगा और बहुत धन प्राप्त करेगा।

४—नवमेश व धनेश केन्द्र में होकर यदि लग्नेश से दृष्ट हो तो मनुष्य गुणी व सम्पत्तिवान होगा।

५—नवम भाव में पांच ग्रह हो तो मनुष्य श्रेष्ठ अधिकार व अपार सम्पत्ति प्राप्त करेगा।

६—इस भाव पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य सुखी और श्रीमान् होगा।

७—नवमेश दशम भाव में दशमेश नवम भाव में हो तो पिता धनवान् व किर्तीमान होना चाहिये।

८—पापग्रह उच्च का हो और उसपर गुरु की दृष्टि हो तो मनुष्य का भाग्योदय पापग्रह के अंश कला से आरम्भ होगा।

९—भाग्य भाव में पापग्रह हो या उसकी दृष्टि हो तो भाग्योदय में अनेक बाधाएं आवेंगी।

१०—नवमेश ६-८-१२ में हो तो भाग्यहीन जानना और पापग्रह की दृष्टि हो तो अधिक अशुभ फल मिलेगा।

११—नवमेश केन्द्र में हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो भाग्यवान होगा।

१२—चतुर्थेश नवम भाव में गु. शु. से युक्त व दृष्ट हो तो अनेक प्रकार से संपत्ति प्राप्त होगी।

१३—नवमेश उच्च हो गुरु से युक्त व दृष्ट हो व केन्द्र में शुक्र हो तो पिता दीर्घायुषी होगा।

१४—नवमेश धन भाव में और धनेश नवम हो तो ३२ वर्ष के बाद में भाग्योदय होगा।

१५—नवमेश से तृतीयेश युक्त हो नीच राशि या अंश में हो या निर्बली व अस्तंगत हो तो राजा भी रंक होगा राजगद्दी से त्याग दिया जावेगा।

१६—रवि यदि कुण्डली में ६-८-१२ में हो षष्ठेश पंच भाव में हो अष्टमेश नवम में हो और द्वाददेश लग्न में हो तो बालक का जन्म होने के पूर्व पिता की मृत्यु होना संभव है।

१७—नवमेश व अष्टमेश शनि हो और शुभग्रह से दृष्ट न हो रवि अष्टम स्थान में हो तो बालक के जन्म के पहिले वर्ष ही पिता को अरिष्ट जानना।

१८—नवमेश नीच राशि का हो और व्ययेश नवमें हो तो तीसरे वर्ष या १६ वें वर्ष पिता को अरिष्टकारक होगा।

१९—नवमेश नवम में और बुध उच्चांशा में हो तो ३६ वर्ष से भाग्योदय होगा।

२०—नवमेश लग्न में लग्नेश नवम में गुरू सप्तम में हो तो संपत्ति और वाहन का लाभ होगा।

२१—नवमेश नवम को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो स्वदेश में भाग्योदय होगा।

२२—नवम भाव में मकर का मंगल हो तो भाग्योदय व धनी व भाग्यवान होगा।

१० दशम स्थान

१—दशमेश व लग्नेश एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य अपने स्वपराक्रम से द्रव्य प्राप्त कर अनेक प्रकार

के सुख भोगने तथा व्यापार व नौकरी में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा।

२—३-५-९-१० भाव के स्वामी शुभग्रह लग्नेश से युक्त हो केन्द्र या त्रिकोण में हो तो मनुष्य वेदान्ति व ज्ञानि होगा।

३—दशमेश बुध हो या दशम भावमें बुध हो तो व्यापरी होगा।

४—दशमेश रवि शुभ स्थान या दशम में हो तो मनुष्य बुद्धिमान पुत्रवान गुणवान व श्रीमान् होगा।

५—दशमेश लग्न में अथवा लग्नेश से युक्त हो तो मनुष्य सुखी व कवि होगा।

६—दशम भाव में मकर का मंगल हो तो मनुष्य पराक्रमी श्रेष्ठ अधिकारी ऐश्वर्ययुक्त व वंशाली होगा किन्तु मंगल नीच राशि का हो तो इससे विपरीत होगा।

७—दशमेश व लग्नेश पापग्रह हो तो बुरे कर्म से या स्वजन को सुख मिलेगा। दशमेश राहु से युक्त हो अष्टम भावमें हो तो महा मूर्ख जानना।

८—दशमेश शुभग्रह होकर श. मं से दृष्ट व युक्त हो तो सत्कार्य के लिये संकट व बंधन होगा।

९—दशमेश लग्न में व लग्नेश दशम में हो तो मनुष्य सुखी व पराक्रमी होगा।

१०—दशम भाव में राहु हो तो गंगा स्नान का लाभ होगा दशमेश गु. शु. श. से युक्त हो दशम भाव में हो तो बड़ा ज्ञानी होगा।

११ —दशमेश नवन में और नवमेश दशम में हो तो भाग्य वान् दशमेश लाभ में लाभेश दशम में हो तो रत्नादि से युक्त होगा।

१२—दशमेश दशम में हो तो सत्य प्रिय व एक वचनी होगा दशमेश शनि हो या दशम में शनि हो तो इस स्थान पर शनि की दृष्टि हो तो मनुष्य कायदे में निपुण व वकील वालीस्टर होगा।

१३—दशमेश लग्न में हो तो वाल्या वस्था में रोगी यौवन वस्थामें भोगी व बृद्ध वस्था में सुखी होगा।

१४—दशम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो अधिकारी से सदैव विरोध होते रहेगा।

११ एकादश स्थान

१—लाभेश लग्न में हो तो सुशील लाभेश शुभग्रह होकर शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो विद्वान-दयालु व संपत्तिवान् होगा।

२—लाभ भाव में शुक्र हो तो स्त्रियों से देशान्तर में धन प्राप्ति लाभेश अष्टमेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो दीर्घायु। लाभेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो श्रीमान्। लाभेश लग्न मे हो तो वक्ता धनेश गुरु हो लाभ में और लाभेश धन भाव में हो तो ३६ वर्ष की अवस्था में भाग्योदय होगा।

३—लाभेश लग्न में और लग्नेश लाभ में हो तो ३३ वर्ष से भाग्योदय सूरु होगा। लाभ में गुरु नवम में शुक्र धन में चन्द्र हो तो हजारों का धनी होगा।

४--लाभेश धन में धनेश लाभ में हो तो विवाह से भाग्योदय होगा।

५--लाभेश तृतिय में और तृतीयेश लाभ में हो तो बन्धु से धन प्राप्ति होगी।

६--लाभेश व अष्टमेश केन्द्र त्रिकोण में हो तो दीर्घायुर्षी लाभेश सूर्य हो अथवा उसकी दृष्टी हो तो राजा से लाभ होगा।

७--एकादश स्थान में शुक्र या चन्द्र हो अथवा उनकी दृष्टी हो तो सुन्दर स्त्री बाग बगीचा स्थावर इस्टेट इत्यादि लाभ होगा।

८--लाभेश मंगल हो और उसकी दृष्टी हो तो राजा से धन प्राप्ति होगी।

९--लाभ में बुध हो या लाभेश बुध और बुध की दृष्टी हो तो मनुष्य छापाखाना लेखन व्यापार राज्याधिकारी से धन लाभ होगा।

१०--लाभ में गुरु हो अथवा उसकी दृष्टी हो तो सज्जन का संग नित्य मिष्टान्न वस्त्र धन धान्य लाभ होगा।

११--लाभ में शनि हो अथवा उसकी दृष्टी हो तो वकील व व्यभिचारी स्त्री से लाभ होगा।

१२--लाभेश शनि हो अथवा शनि की दृष्टी हो तो वकीली धंधे में चोरी रिसवत्त झूठे काम से धन लाभ होगा।

१३--लाभेश शुक्र या शुभग्रह हो और वह लाभ केन्द्र व त्रिकोण में हो तो सन्मित्र से धन लाभ होगा।

१२ द्वादश स्थान

१—इस भाव में शुभग्रह उच्च व स्वराशि का हो तो मनुष्य कम खर्चों व शुभ कार्य में खर्च होगा।

२—व्ययभाव में अशुभग्रह हो या उसकी दृष्टी हो तो अशुभ कार्य में धन खर्च होगा।

३—धनेश व्यय भाव में होगा तो मनुष्य निर्धन होगा।

४—व्यय भाव में नीच का पापग्रह हो तो सदैव ऋणि कर्जदार होगा।

५—व्ययेश पापग्रह से युक्त अशुभ भाव में हो और उस पर श. रा. की दृष्टी हो तो देशान्तर वास व आर्थिक संकट होगा।

६—व्ययेश शुभग्रह हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टी हो तो स्वदेश में किर्ती प्राप्त होगी।

७—व्यय में श. मं. रा. होकर गुरु से दृष्ट न हो तो पाप कर्म से धन प्राप्त करो।

८—लग्न और व्यय भाव के स्वामी परस्पर भाव में हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो धर्म कार्य में धन की कमी होगा।

स्थान परत्त्वगृहों का विफलत्त्व

चतुर्थ स्थान में बुध पंचम में गुरु दूसरे में मंगल छठवें में शुक्र सप्तम में शनि और सूर्य से युक्त चन्द्रमा हो तो वे ग्रह योग्य फल देने के लिये असमर्थ होते है।

२—सुखेश चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्ण ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्ट कारी ग्रह हो उस ग्रह की दशा अन्तरदशा में माता को कष्ट होता है।

भ्रातृ सुख नाश योग

१—पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सप्तम भाव में होवें।

२—चन्द्रमा से पाप युक्त शुक्र सप्तम होवे।

३—पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह होवे।

४—तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे।

५—चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो जप दान कराना चाहिये।

पितृनाश योग

१—सूर्य मंगल दशवें या नवमें गये हो २ दशमेश रवि मंगल से युक्त हो ३ शत्रु राशि का मंगल १० वें हो ४ पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो इन चार योगों में से एक भी योग हो ता पिता को भय हो।

सन्तान सुख नाश योग

१—गुरू से पंचम भावपति ३-६ भाव में हो तो पुत्र का अभाव समझना २ पंचम नवम लग्न इन तीनों भावों का पति भी त्रिक स्थान में पड़े तो सदा पुत्र को भय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना

१—जन्म लग्नेश और पंचमेश दोनु को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवमांश की राशि में या इन दोनु की त्रिकोण ५-९ राशि में जब गोचर का गुरू होता है तब पुत्र उत्पन्न होता है।

२—चं. ल. गु. इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश की दशा विदशा में पुत्र होता है।

ग्रहदशा महादशा का विचार

महादशा मुख्य दो प्रकार की है अथात् विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी इनके अनुसार मनुष्य के आयुष्य मर्यादा का विचार किया जाता है अर्थात् विंशोत्तरी महादशा से १२० वर्ष और अष्टोत्तरी महादशा से १०८ वर्ष का आयुष्य निश्चित किया जाता है। जन्म नक्षत्र पर से ग्रहदशा का निर्णय किया जाता है यह हम प्रथम लिख चुके है। नवग्रह के मुख्य दशाको महादशा कहते है और इनमें दशा काल के अन्तर्गत फिर से नवग्रहों में जो काल विभाजित किया गया है उसे अन्तर दशा कहते हैं अन्तर दशा के अन्तर्गत पुनः नवग्रहों में जो काल विभाजित किया गया है उसे विदशा कहते है। अतः विंशोतरी महादशा के विषय ही यहा संक्षिप्त में लिखकर इसे समाप्त करना उचित होगा।

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के है एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः

प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत किस तरह का फल मिलता है। यह ध्यान में लाना चाहिये जैसे--

शुभग्रह दशा फल--आरोग्य धन बृद्धि शत्रु का पराय इष्ट कार्य की सिद्धी ऐश्वर्य प्रापंचिक सुख आदि अनेक प्रकार के सुख मिलते है।

अशुभ ग्रह दशा फल--लोकोप वाद विश्वासघात द्रव्य हानि रोग बिमारी शरीर कष्ट वियोग व्यापार में नुकसान आदि दुःख मिलते है।

इस तरह शुभ और अशुभ ग्रहों के फल का साधारण ज्ञान होने से मनुष्य को संतोष होना कठिन है अतः प्रत्येक ग्रह की दशा का क्या फल मिलेगा यह जानना चाहिये। ग्रह दशा का फल निश्चत करने के पूर्व प्रथम उस ग्रह को स्थिति का विचार करना चाहिये अन्यथा पूर्ण फल मिलना असंभव होगा। ग्रहोंको स्थिति का विचार निचेलिखे अनुसार जरना चाहिये जैसे-

१--ग्रह किस भाव व राशि में है उच्च अथवा नीच राशि और शुभ अथवा अशुभ भाव मे है।

२--ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा न हो

३--दशा स्वामी ग्रह से अन्तर दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते है अथवा अशुभ योग मनुष्य के जीवन में जो सदा सर्वदा परिवर्तन हुआ करता है उसका मुख्य कारण ग्रह दशा का प्रभाव है। जन्म कुण्डली में यदि रा. गु. श. बु. और शु. शुभ फलदायी हों और मनुष्य

का जन्म इनमें से रा. गु. या श. महादशा में हुआ हो तो उसका पूर्ण आयुष्य सुख से व्यतीत होगा यह अनुमान इसी अधार पर किया जाता है व इसीलिये फलित वर्तते समय इस शास्त्र के ज्ञाता इन ग्रहों के स्थिति का प्रथम विचार किया करते है। जन्म कुण्डली के द्वादश भाव और द्वादश राशि में से प्रत्येक भाव व राशि में नवग्रह यदि स्थित हो तो उनका शुभा-शुभ फल मनुष्य को किस तरह मिलेगा यह संक्षिप्त में नीचे लिखा है।

जैसे—रवि महा दशा भाव फल

लग्न भाव—देशान्तर व रोग प्रवास भ्रमण अविस्कार-द्वितीय वाणी में दोष द्रव्य की चिंता राजभय बंधु वियोग।

तृतीय भाव—बन्धू वैर-धैर्य-सुख धन लाभ राज सन्मान।

चतुर्थ भाव— अग्नि शास्त्र व चोर भय मातृ पीड़ा

पंचम भाव—मंत्र विद्या-धन संचय-संतती कष्ट शरीर कष्ट अस्थिर बुद्धि।

षष्ठ भाव—व्रण मूत्र कृच्छ्र-रक्त दोष ज्वर-शत्रु पक्ष का नाश

सप्तम भाव—सुख में आपत्तियां-स्त्री को कष्ट-मानसिक चिन्ता व्यापार में हानी।

अष्टम भाव—शरीर कष्ट उद्योग धंधा के लिये अनिश्चित नेत्र पीड़ा-ज्वर उष्ण विकार दुःख।

नवम भाव—अविचारी कार्य-दुष्ट बुद्धि-नास्तिकमत-स्वजन से विरोध।

दशम भाव—उद्योग धंधा, राज सम्मान, सन्मान राज वर्ग से मैत्री धन-लाभ यश प्राप्ति।

एकादश भाव—विपुल द्रव्य लाभ राजकीय व उद्योग उत्कर्ष, संतति के लिए उत्तम, द्रव्य-लाभ।

द्वादश भाव—चिन्ता, ऋण ग्रस्त स्थिति कष्ट कलह शत्रुत्व संकट राजभय अपयश।

रवि महादशा राशिफल

मेष राशि—स्वधर्म पर श्रद्धा, तीव्र बुद्धि, उच्च विचार, पूर्वार्जित धन-लाभ, स्त्री पुत्रादि सुख।

वृषभ राशि—स्त्री पुत्र पीड़ा जमीन-घर-रहित चिन्ता हृदय-रोग द्रव्य नाश असंतोष का कारण।

मिथुन राशि—विद्या का अभिमान, वचन प्रिय, कवि, द्रव्य-लाभ, बुद्धिमान।

कर्क राशि—शीघ्र कोपी परंतु निष्कपटी राजवर्ग से मित्रता कुटुम्ब से द्वेष करनेवाला स्त्री लोलूप।

सिंह राशि—पराक्रमी द्रव्य लाभ राज सन्मान डाकू सबों पर छाप रखनेवाला।

कन्या राशि—भक्ति मधुर-भाषी भूमि लाभ वाहनादि सौख्य।

तुला राशि—स्त्री संबन्ध से कष्ट चौर अग्निभय स्थावर स्टेट के लिये प्रतिकूल।

वृश्चिक राशि—अग्नि से पशुओं से भय शस्त्राघात माता पिता से द्वेषता।

धनु राशि—द्रव्यलाभ ऐश्वर्य उत्कर्ष सौख्य सन्मान वाहन प्रिय।

मकर राशि—दुःख कष्ट परावलम्वी जीवन प्रापंचिक स्थिति निराशाजनक।

कुम्भ राशि—संतत्ति सम्पत्ति स्त्री पुत्रादि सम्बन्ध से चिन्ता विरोधी लोगों से त्रास व हानि हृदय रोग मानसिक दुःख।

मीन राशि—द्रव्य हानि अल्प सुख रक्त दोष ज्वर व पित्त रोग।

चन्द्र महादशा भाव फल

प्रथम भाव—सम्पति सुख के लिये श्रेष्ठ अधिकार दुर्वल मानसिक स्थिति शरीर कष्ट उद्योग के लिए चंचल।

द्वितीय भाव—द्रव्य संचय कुटुम्बिक सुख पूर्ण पुण्यकर्म-ऐष-आराम मिष्टान्त प्राप्ति।

तृतीय भाव—भ्रातृ सुख के लिए अनुकूल पराक्रम में यश विदेश में सुख लेखनादि कार्य में सन्मान।

चतुर्थ भाव—सम्पति स्थावर वाहन स्त्री पुत्रादि अधिकार लाभ व सौख्य सार्वजनिक कार्य में प्रतिष्ठा व कीर्त्ति।

पंचम भाव—संतति विद्या अधिकार सुख विद्वान लोगों से मित्रता।

षष्ठ भाव—द्रव्य नाश स्त्री पुत्र को पीड़ा कलह मूत्र रोग।

सप्तम भाव—स्त्री सुख व्यापार से लाभ शत्रु से त्रास।

अष्टम भाव—माता को कष्ट पिता परदेशगमन शत्रुता शरीरकष्ट।

नवम भाव—भाग्योदय श्रेष्ठ उत्कर्ष सर्व प्रकार का सुख।

दशम भाव—माता पिता से सुख द्रव्य लाभ राज समान।

एकादश भाव—स्त्री पुत्र धन मित्र आदि से सुख व लाभ।

द्वादश भाव—भाग्य हानि मित्र व कुटुम्ब से द्वेष संकटकाल में अपयश के प्रसंग।

चन्द्र महादशा राशिफल

मेष राशि—ईश्वर पर भरोसा उदार व दयालु चंचल वृत्ति दिखाई कामों का तिरस्कार।

वृष राशि—सन्तति संपति स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब, वाहन धनादि सुख श्रीमान् व राज सन्मान।

मिथुन राशि—मातृपितृ भक्ति प्रवासी सुखी धार्मिक वृत्ति।

कर्क राशि—जमीन घर वाहन आदि की प्राप्ति नये कार्य का आरम्भ कीर्ति कारक प्रसंग परोपकारी गुप्त विकार।

सिंह राशि—राजकीय उन्नति श्रेष्ठ अधिकार मान्यता द्रव्य प्राप्ति किन्तु शरीर कष्ट।

कन्या राशि—पाप बुद्धि द्रव्य व स्त्री प्राप्ति स्त्री सुख परदेश गमन लोगों में गैर समाज।

तुला राशि—स्त्री विषय विचार बुरे लोगों की संगति दारिद्र द्रव्य का अभाव।

वृश्चिक राशि—पराधीनता राजकीय संकट संपत्ति की हीनावस्था स्वजन से द्वेप शरीर व्याधि दुष्ट कृत्य।

धन राशि—पूर्वार्जित स्टेट का क्षय, मानसीक व राजकीय संकट स्वपराक्रम से भाग्योदय।

मकर राशि—प्रवास द्रव्य लाभ संतत्ति सौख्य गुप्त-चिन्ता व्यवसाय में अस्थिरता।

कुम्भ राशि—ऋण ग्रस्त स्थिति हीन द्रव्य स्थिति क्लेश बुरे लोगों की मैत्री पाप कृत्य।

मीन राशि—ज्यादा खर्च स्त्री पुत्र सुख शत्रु पक्ष का नाश सत्कर्म में धन खर्च।

मंगल महादशा भाव फल

प्रथम स्थान—मस्तक में पीड़ा, संताप, शरीर कष्ट, त्रास, चिन्ता, स्त्री को कष्ट, अधिकार से भ्रष्ट, द्रव्य का नाश, देशान्तर शत्रु से परास्त उद्योग धंधा नौकरी में संकट।

द्वितीय स्थान—धन की कमी नेत्र विकार फजूल खर्च उष्ण विकार से त्रास सतति को दुःख।

तृतीय स्थान—पराक्रम, साहस, शूरवीरता, प्रतिष्ठा, सत्ता, अधिकार प्राप्ति, भ्रातृ को अनिष्ट।

चतुर्थ स्थान—जमीन की चिन्ता। अपघात का डर संतति को मृत्यु समाचार रोगभय।

पंचम स्थान—विपरित बुद्धि हठी स्वभाव दुष्ट कर्म लाभ हानि अधिक नेत्र रोग।

षष्ट स्थान—शत्रु का पराभव धाडसी कार्यों में यश कार्य-सिद्धि चिन्तायुक्त मन कष्ट त्रास।

सप्तम स्थान—स्त्री को अनिष्ट गलगंड प्रवास द्रव्य नाश भय उद्योग धंधा के लिए दूर दूर का प्रवास।

अष्टम स्थान—मष्तक में पीड़ा बवासीर की बिमारी गुप्त विकार के रोग द्रव्य नाश सर्व प्रकार से चिन्ता देवी प्रकोप सम्बन्धी चिन्ता।

नवम स्थान—भाग्योदय में विघ्न धनहीन क्लेश क्षमिक पापबृति धर्म के विषय में उदासीन।

दशम स्थान—अधिकार प्राप्ति व्यापार से लाभ शत्रु नाश स्थावर प्राप्ति योग मान सन्मान यश द्रव्य लाभ सर्व सुख।

एकादश स्थान—स्त्री स्थावर स्टेट द्रव्य प्राप्ति व सुख संतति को अनिष्ट शत्रु नाश।

द्वादश स्थान—धन नाश स्त्री को कष्ट गलगंड रोग राजभय शत्रुभय अपमान।

महादशा राशिफल

मेष राशि—युद्ध में विजय राज से सन्मान वाद्य आभूषण की प्राप्ति शारीरिक कष्ट राज्य प्राप्ति।

वृषभ राशि—सत्कर्म के . य द्रव्य का खर्च स्त्री को कष्ट।

मिथुन राशि--पिता से विरोध प्रवास सज्जन विरोधी अपने अभिमान में चूर धूर्त कला कौशल्या का जाननेवाला भयंकर खर्चि द्रव्यनाश ।

कर्क राशि--आप्त वर्ग व स्त्री पुत्र का वियोग, चिन्ता, जमीन घरद्वार, नौकर वाहन भूमि की प्राप्ति ।

सिंह राशि--अनेक लोगों पर अधिकार मुख्य नेता निश्चयी साहसी सत्याग्रही संकट में धैर्य रखनेवाला श्रीमान् भाग्यवान् परन्तु स्त्री पुत्र का वियोग अग्निभय राज्यकारक में प्रमुख ।

कन्या राशि--धन धान्य की वृद्धि स्त्रियों का अभिलाषी गृह सुख सदाचारी सत्कर्मी ।

तुला राशि--व्यापार व स्त्री से धन-लाभ सुखी ।

वृश्चिक राशि--भूमि से लाभ अधिक भाषण गुप्त शत्रु ।

धन राशि--धर्माचरण के ओर लक्ष वाद-विवाद अप्रिय ।

मकर राशि--युद्ध में यश अधिकार व सुख प्राप्ति ऐश्वर्य सम्पन्न श्रेष्ठ आर्थिक स्थिति ।

कुम्भ राशि--धर्म भ्रष्ट संतति से कष्ट अधिक खर्च ।

मीन राशि--परदेश वास, ऋण ग्रस्त हृदय रोग पुत्र चिन्ता मस्तक व नेत्र पीड़ा सर्व प्रकार से हानि ।

राहु महादशा भाव व राशिफल

लग्न में राहु--शरीर को कष्ट विष व अग्नि से भय शत्रु से त्रास नुकसान इष्ट कार्य में अनेक अड़चन ।

धन में राहु—द्रव्य नाश पराधीन स्थिति नेत्र रोग स्त्री को कष्ट अपयश नुकसान राजकीय कार्य में हानि।

तृतीय में राहु—पराक्रम में यश श्रेष्ठों से मित्रता द्रव्य लाभ प्रापंचिक सुख नौकर-चाकर सुख।

चतुर्थ राहु—मातृ कष्ट गंडातर व वियोग राजा का कोप मित्रों से विश्वास घात स्वजन से बिरोध घर जमीन सम्बन्धी आपति।

पंचम राहु—मान भंग विद्या में अपयश अधिकार भंग शत्रु से पराभव कलह ऋण ग्रस्त द्रव्य नाश संतति को कष्ट।

षष्ट राहु—शत्रु नाश नौकर सुख चौर अग्नि विष से भय प्रमेह गुल्म पितरोग से शरीर को कष्ट।

सप्तम राहु—स्त्री को कष्ट मृत्यु समपीड़ा मृत्यु योग भाग्य हानि संकट, क्लेश, द्रव्य नाश, प्रवास में फेर बदल, अधिक घूमना।

अष्टम राहु—भयंकर रोग मृत्युसम दुःख द्रव्य नाश कुटुम्ब नाश उद्योग म हानि अनेक दुखमय प्रसंग।

नवम राहु—पिता या बड़े भाई से दुःख प्रीति करनेवालों का नाश बन्धु वियोग समुद्र व तीर्थ यात्रा गंगा स्नान घूमना।

दशम राहु—साधु संत का लाभ, गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, उद्योग में यश परिस्थिति मे फेर बदल धर्म ग्रन्थों का पठन प्रापंचिक सुख।

एकादश राहु—स्त्री पुत्र द्रव्य मान ऐश्वर्य लाभ सुख व कीर्ति।

द्वादश राहु--स्त्री पुत्र का नाश मन को दुःख घर जमीन धन धान्य का नाश राजकोप शत्रुकोप दुःख।

मिथुन राशि राहु--मान मान्यता श्रेष्ठ अधिकार मित्र संपति संतति सुख प्राप्ति उद्योग धंधा व्यवहार में यश उत्कर्ष चिन्ता का नाश।

धन राशि राहु--इसके विपरीत अशुभ फल।

गुरू महादशा भाव फल

लग्न में गुरू--शरीर बुद्धि विद्या ऐश्वर्य संतति लाभ भाग्यो-दय के अनुकूल।

धन में गुरू--राज सभा में प्रवेश बड़ों से मित्रता श्रेष्ठ अधिकार द्रव्यलाभ ऐश्वर्य शत्रु नाश श्रीमान व सत्कर्माचारी।

तृतीय में गुरू--बंधु सौख्या बंधु अनुकूल पराक्रम उद्योग में यश द्रव्यलाभ।

चतुर्थ में गुरू--राज तुल्य सुख व ऐश्वर्य सर्व कुछ अनुकूल सब प्रकार का पूरा २ सुख।

पंचम में गुरू--वेदान्त शास्त्र मंत्र विद्या में निपुण संतति सुख राज मंडल में प्रवेश।

षष्ठम में गुरू--स्त्री पुत्रादि सुख द्रव्य लाभ उद्योग में यश रोग से कष्ट गुप्त शत्रु व चोरों से त्रास।

सप्तम में गुरू--द्रव्य स्त्री पुत्रादि से सुख व्यापार में वृद्धि प्रवास में सत्कर्म।

अष्टम में गुरू--धनः व स्त्री पुत्रादि को कष्ट मृत्यु समपीड़ा व्याधि विरोध परदेश वास अन्त में राज सन्मान लाभ।

नवम मे गुरू -अधिकार स्त्री पुत्र द्रव्य वाहन लाभ व सुख वेदान्त शास्त्र की रूचि धार्मिक वृति।

दशम में गुरू--राज कृपा अधिकार उद्योग नौकरी स्त्री पुत्रादि से सुख लोग अनुकूल।

एकादश में गुरू—स्थावर भूमि वाहन द्रव्य प्राप्ति अधिकार संपन्न लोगों मे मैत्री नौकर-चाकर सुख व राजा से विरोध।

द्वादश में गुरू—सब प्रकार से लाभ परन्तु शरीर को कष्ट शत्रु से पीड़ा मानसिक चिन्ता।

गुरू महादशा राशि फल

मेष राशि—समाज में मान्यता वैभव स्त्री पुत्रादि सुख भाग्योदय समाधान।

वृष राशि—द्रव्य लाभ व संचय शत्रु पीड़ा प्रापंचिक व शारीरीक सुख मानसिक चिन्ता।

मिथुन राशि—बुद्धि व पराक्रम से सुख विद्यायोग स्त्री अथवा स्त्री सम्बन्ध से त्रास धार्मिक कर्म।

कर्क राशि—अधिकार व राज्य प्राप्ति मंत्री यह लाभ वैभव व ऐश्वर्य सुख।

सिंह राशि—विद्या में यश बुद्धि श्रेष्ठ संतति सौख्य पराक्रमी श्रीमान लोगों कि मैत्री राजसन्मान धन लाभ व कीर्ति।

कन्या राशि—उद्योग धधा में यश अधिकारी से मित्रता

अधिकार लाभ स्त्री पुत्रादि सुख नीच लोगो से त्रास विरोध अपमान के प्रसंग धन का व्यय ।

तुला राशि—उद्योग में अपयश स्त्री पुत्रों से त्रास चंचल वृत्ति स्वजाति से शत्रुत्व ।

वृश्चिक राशि—स्थावर जमीन घरबार स्टेट की प्राप्ति विद्या वृद्धि व यश प्राप्ति ।

धन राशि—चतुष्पाद वाहन व नौकर सुख वेद शास्त्र यज्ञ कर्म में प्रवेश ईश्वर भक्ति परोपकारीय कर्म ।

मकर राशि—परदेश वास शत्रु स्वजन विरोध गुप्त रोगों की वृद्धि द्रव्य चिन्ता दारिद्र योग स्त्री पुत्र के कष्ट संकट काल ।

कुम्भ राशि—तीव्र बुद्धि विद्या में यश मान सन्मान स्त्री सौख्य संतति का उत्कर्ष भाग्योदय राज कार्य में यश और प्रतिष्ठा ।

मीन राशि—कुटुम्बिक व उद्योगिक सुख राजदरबार में यश द्रव्य लाभ व ऐश्वर्य सुख ।

शनि महादशा भाव फल

प्रथम स्थान—मानसिक बाधा बात विकार रोग वृद्धि राज कोप उद्योग में अपयश द्रव्य का अभाव ।

द्वितीय स्थान—कौटुम्बिक आपत्ति द्रव्य नाश नेत्र पीड़ा उष्णविकार दुःखदायक प्रसंग राजभय स्त्री को कष्ट मातृ कष्ट व वियोग मृत्यु ।

तृतीय स्थान- बन्धु पर संकट व बुद्धिमान स्वजन पर छाप उद्योग धंधा के लिये अनुकुल।

चतुर्थ स्थान—मातृ पीड़ा शत्रु से त्रास राजा से संकट स्थावर नाश वाहन से अपघात अग्नि से गृह नाश शस्त्र से पीड़ा।

पंचम स्थान—बुद्धि को अनिष्ट संतति को कष्ट विद्या में विघ्न स्त्री को कष्ट द्रव्य की कमी।

षष्ट स्थान—शारीरिक व्याधि मानसिक संकट स्वजातिय व अन्य शत्रुओं पीड़ा गृह भूमि का नाश द्रव्य लाभ के लिये साधारण।

सप्तम स्थान- स्त्री को कष्ट भाग्योदय में आपति स्थावर संपति का नाश मातृ कष्ट स्त्री से दुख मूत्र कृच्छादि रोग।

अष्टम स्थान—शारीरिक कष्ट रोग मृत्यु सम पीड़ा अपमान के प्रसंग संकट ग्रस्त स्थिति का पिछा सांपतिक नीच स्थिति।

नवम स्थान—बड़े लोगों को मरणसम दुःख शत्रु प्रवास श्रेष्ठ द्रव्य लाभ परन्तु संकट काल।

दशम स्थान- स्त्री पुत्र नौकर आदि से त्रास उद्योग व व्यापार में विघ्न कार्य का नाश द्रव्य नाश।

एकादश स्थान—श्रीमान व अधिकार संपन्न लोगों से मैत्री अनेक प्रकार से धन लाभ गृह भूमि नौकर की प्राप्ति भाग्योदय काल सांपतिक उत्कर्ष।

द्वादश स्थान—राजकीय संकट द्रव्य नाश अपयश शरीर

कष्ट दारिद्र दुः ऋण ग्रस्त स्थिति चौर राजदंड राजकोप कैद शत्रु से त्रास।

शनि महादशा राशि फल

मेष राशि—मस्तक में पीड़ा रक्तदोष खुजली आदि की व्याधि मंदाग्नि दुष्ट प्रसंग।

वृष राशि—युद्ध व वादविवाद में जय स्त्रियों से मैत्री पराक्रम में यश तीव्र बुद्धि सांपतिक लाभ।

मिथुन राशि—स्त्री सौख्य ष आराम विलासमें मग्न बुद्धि के बल लोगों पर छाप।

कर्क राशि—नेत्र पीड़ा अस्थिर मन शारीरिक व्यथा।

सिंह राशि—मानसिक अस्वस्थता वाद-विवाद विरोध व वियोग स्त्री पुत्र से कलह अनेक संकट।

कन्या राशि—उद्योग धंधा व्यापार में यश द्रव्य की वृद्धि शत्रु का नाश।

तुला राशि—आकस्मिक स्थावर घरवार जमीन स्टेट गज हाथी वाहन-सुवर्ण-रत्न अधिकार राज वैभव राजसन्मान ऐश्वर्य आदि की प्राप्त सभी प्रकार के सुख।

वृश्चिक राशि—इच्छित कार्य मे यश साहस के कार्य भ्रमण प्रवास मे यश व धन लाभ परन्तु नीच लोगों की संगति व मैत्री।

धन राशि—शत्रु का नाश स्त्री पुत्र का सुख अनुकूल बातें अधिक खर्च।

कर राशि—अधिक कष्ट व अल्प लाभ विश्वासघात से द्रव्य हानि विषय सुख में रमण द्रव्य की कमी लोकोपवाद आपति के प्रसंग।

कुम्भ राशि—विद्या में यश कौटुम्बिक सुख मित्र योग सन्मान में वृद्धि हो अधिकार प्राप्ति व ऊँचा पद।

मीन—राशि—बुद्धि के बल सब प्रकार के स्वामी अनेक गावों का मालिक व अधिकारी।

बुध महादशा भाव फल

प्रथम भाव—राजा से सन्मान ऐश्वर्य सुख समाधान खेती से लाभ द्रव्य लाभ आरोग्य प्रतिष्ठा।

द्वितीय भाव—विद्या में यश भाग्योदय व सम्मान वक्तृत्व कार्य में यश कीर्ति धन लाभ।

तृतीय भाव—बन्धु को यशप्रद व सुखकारक मित्रता से लाभ मानसिक त्रास प्रवाद आदि।

चतुर्थ भाव—उद्यागिक संकट स्थावर स्टेट का नाश नौकरों से वेवनाव अपयश।

पंचम भाव—अस्थिर बुद्धि पराधीनता कार्य में अधिक कष्ट व कम लाभ शारीरिक व मानसिक चिन्ता।

षष्ट भाव—आशक्त प्रकृति रोगों की वृद्धि मंदाग्नि रोग चिड़चिड़ा स्वाभाव।

सप्तम भाव—गृह स्त्री पुत्र द्रव्य लाभ व सुख व्यापार से लाभ।

अष्टम भाव—वातरोग मृत्यु सम पीड़ा द्रव्यनाश संकट काल।

नवम भाव—भाग्योदय धर्म की बृद्धि तीर्थ यात्रा सत्संग समुद्र यात्रा।

दशम भाव—श्रेष्ठ अधिकार प्राप्ति मंत्री पद राजा से मान द्रव्य लाभ आदि।

एकादश भाव—वाहन सौख्य धन सपन्न ऐश्वर्य अनेक प्रकार से धन लाभ।

द्वादश भाव—शत्रु से त्रास लोगों से सहायता द्रव्य का व्यय संकट मय परन्तु आखरी में यश।

बुध महादशा राशिफल

मेष राशि—बुरे लोगों की संगत-पाप कृत्य जूवा चोरी व्यसन में प्रवीण।

बृष राशि—उद्योग हानि द्रव्य नाश स्त्री पुत्र व आप्त वर्ग से त्रास दुःखमय स्थिति।

मिथुन राशि—माता को कष्ट विद्या में यश प्रापंचिक सुख लेखन व वक्तृत्व शक्ति आदि।

कर्क राशि—लेखनादि कला कोशल्या से धन लाभ चित्र-कार परदेश चिन्ता दुःख व अनिष्ट।

सिंह राशि—अस्वस्थ मन स्थिति स्त्री पुत्र से कष्ट बुद्धि भ्रष्ट प्रसंग पर विपरीत बुद्धि पर धैर्य।

कन्या राशि—ईश्वर भक्त विद्वान गुणी सदाचारी लेखक भाग्यवान कार्यकर्ता सब प्रकार के सुख।

तुला राशि—व्यापार में धन नाश स्त्री सौख्य कारीगरी या कला कौशल्या से प्राप्ति।

वृश्चिक राशि—परदेश वास स्वजनों से विरोध शरीर कष्ट परवशता धन का नाश।

धन राशि—स्वजनों से कलह द्रव्य की कमी कार्य के आरम्भ में आपति।

मकर राशि—असत्य भाषण दुष्ट लोगों से मित्रता अधिक खर्च कार्य का नाश।

कुम्भ राशि—द्रव्य हानि मित्रों से अपमान दुःख उद्योगिक परतंत्रता।

मीन राशि—शरीर को कष्ट चंचल वृत्ति कुबुद्धि द्रव्य लाभ साधारण।

केतु महादशा भाव व राशिफल

प्रथम स्थान—ज्वर कलश अतिसार आदि की बिमारी अशक्तता रक्त का नाश।

द्वितीय स्थान—धन नाश वाणि दोष ऋण प्रसत परवशता।

तृतीय स्थान—बन्धु विरोध स्वतंत्र वृति कलह पराक्रम से भाग्योदय प्राप्ति उद्योग से लाभ।

चतुर्थ स्थान—अग्निभय स्त्री पुत्रादिकों को कष्ट या मृत्यु दारिद्र लोकोपवाद स्टेट का नाश दुःखदायक प्रसंग।

पंचम स्थान--विद्या में अपयश लोगों से विरोध संतति नाश बुद्धि भ्रष्ट अपमान कारक प्रसंग।

षष्ठ स्थान--शारीरिक कष्ट मातृ पक्ष सुख के नाश शत्रु नाश पराक्रम में यश स्वपराक्रम से धन लाभ अधिकारी लोगों से मित्रता।

सप्तम स्थान--स्त्री पुत्रादि का नाश मूत्ररोग परदेश वास दुःख का समय।

अष्टम स्थान--क्षय ज्वर खाँसी दमा की बिमारी से शरीर को अत्यन्त कष्ट कुटुम्ब में मृत्यु अपमान कारक प्रसंग धन लाभ असंतोष जनक।

नवम स्थान--ईश्वर भक्ति परोपकार वृत्ति कार्य में आपत्ति।

दशम स्थान--दशा के प्रथम भाग में हर प्रकार के कष्ट अन्त में अनुकूल तथापि पितृ नाश मान हानि साधारण धन लाभ।

एकादश स्थान--विद्या में यश अधिकारियों से मित्रता यश कीर्ति व्यापार में लाभ ऐश्वर्य वैभव स्थावर स्टेट वाहन प्राप्ति व सुख।

द्वादश स्थान--नेत्र पीड़ा धन नाश दूर यात्रा स्थानांत्तर लोगों से निन्दा शारीरिक मानसिक आपत्ति

धन राशि केतु--कार्य में यश परन्तु और आरम्भ में कष्ट परोपकार बुद्धि ऐश्वर्य सुख।

मिथुन राशि केतु--इससे विपरीत फल दुःखदायक प्रसंग।

शुक्र महादशा भाव फल

लग्न में शुक्र—शरीर सुख लोक मान्य ऐष आराम व श्रीमान लोगों से मैत्री राजमान्य यशस्वी ।

धन में शुक्र--स्त्री को कष्ट धन का व्यय दशा के आखीर में उत्कर्ष पूर्ण द्रव्य लाभ सन्मान उद्योग में यश ।

तृतीय में शुक्र--बन्धु सुख स्थानांतर यात्रा बन्धु का उत्कर्ष समाधान बृत्ति ।

चतुर्थ में शुक्र—अधिकार वाहन खेती प्रतीष्ठा राजा से सन्मान कीर्ति कारक प्रसग ।

पंचम में शुक्र—दैविक अनुकूलता विद्या में यश व्यापार में यश संतति सुख ।

षष्ठ में शुक्र—शारीरिक रोग की बृद्धि कार्य का नाश स्त्री पुत्रादि को ज्वर कष्ट चिन्ता जनक आर्थिक स्थिति ।

सप्तम में शुक्र—स्त्री को व्याधि दुःखदायक प्रसंग कौटुम्बिक आपति उद्योग व्यापार के लिए प्रतिकूल समय ।

अष्टम में शुक्र—शारीरिक मानसिक प्रापंचिक राजकीय व औद्योगिक वगैरह के लिये प्रतिकूल द्रव्य नाश चिन्ता आपति ।

नवम भाव—दैव अनुकूल भाग्योदय सब प्रकार के सुख विद्या ऐश्वर्य नौकर वाहनादि सुख ।

दशम भाव—विद्या में यश व लाभ व्यापार से लाभ मंत्री मंडल या राजकीय लोगों में मान्यता पूर्ण धन लाभ ।

एकादश भाव—स्त्री सुख राज दरबार में सन्मान राजा से

पदवी की प्राप्ति संनति लाभ सुखादि कारक।

द्वादश भाव--मानसिक व्याधि माता की मृत्यु या वियोग धन नाश सांयषिक आपत्ति।

शुक्र महादशा राशिफल

मेष राशि—स्त्री सुख उद्योग में यश प्रवास अनेक प्रकार के सुख।

वृषम राशि—घरबार जमीन वाहन पशु से सुख वृद्धि दयालु व परोपकारी।

मिथुन राशि—ग्रन्थ कर्ता उत्साही विद्वान लोगों की मित्रता।

कर्क राशि—मन का चंचल स्वावलंबी उद्योगी कार्य में कुशल व्यवहार में चतुर।

सिंह राशि—संतति से अल्प सुख स्त्रियों से अल्प द्रव्य लाभ वाहन से अपघात साहसी कार्य में यश।

कन्या राशि—गुदा रोग शारीरिक क्लेश अल्प धन लाभ अपयश कष्ट।

तुला राशि—खेती व व्यापार से द्रव्य लाभ स्त्री पुत्रादि सौख्या शत्रु नाश नेता।

वृश्चिक राशि—वेधड़क घातिका अविचारी साहसी परोपकार में निमग्न ऋण मुक्त वादविषाद प्रिय परदेशवासी।

धनु राशि—शत्रु से त्रास भाग्यचिन्ता परन्तु दशा के मध्यभाग में सब प्रकार के सुख।

मकर राशि—सत्ता व अधिकार परदेश में वास वाहन से त्रास स्त्री से द्वेष संतति की चिन्ता शत्रु का पराभाव।

कुम्भ राशि—विद्या में यश कला कौशल्य में प्रवीण उद्योग व व्यापार से धन लाभ संतति सुख।

मीन राशि—श्रीमान प्रापंचिक सुख वाहन नौकर चाकर सुख वैभव मंत्री पद प्राप्ति राजमंडल का मुख्य प्रधान राज समान सुख व ऐश्वर्य।

उपर लिखे अनुसार जन्मस्थ ग्रह दशा का फल जन्म कुण्डली में वे जिस राशि और भाव में स्थित हों उस राशि भाव के फल पर अवलंबित है यह पाठकों के ध्यान में सहज आ सकता है। परन्तु फलित का निष्कर्ष इन दोनों में से जो अधिक बली व प्रबल हों उसी पर अधिकतर निर्भर है। तथापि यह निश्चय करते समय अन्य शुभाशुभ ग्रहों की व युक्ति का भी विचार करना चाहिये. जिससे प्रत्येक ग्रहों के महादशा का शुभाशुभ फल मिलना संभव है। परन्तु महादशा काल में इन ग्रहों के अन्तर्गत अन्य ग्रहों के अन्तर दशा का किस तरह का फल मिलेगा यह पाठकों को मालूम हो सके। इस हेतु से महादशा के अन्तर्गत अन्तर दशा का फल संक्षिप्त में नीचे लिखा है।

रवि महादशा की अन्तर दशा

प्रत्येक ग्रह के महादशा का काल इन्हीं नव ग्रहों में विभाजित है जिसे अन्तर दशा कहते हैं।

रवि—राज मैत्री धैर्य ऐश्वर्य अधिकार मान्यता।

चन्द्र—अधिकार व द्रव्य लाभ परदेश गमन प्रापंचिक सुख।

मंगल—शत्रु नाश अनुकूल समय रत्न लाभ कीर्त्ति की वृद्धि।

राहु—शरीर व्याधी पराधीनता द्रव्य नाश प्रतिकूल कार्य।

गुरू—विद्या में सन्मान द्रव्य लाभ अधिकार प्राप्ति संकट नाश।

शनि—गुप्त शत्रु स्त्री पुत्रादि पीड़ा विद्या में अपयश संकट।

बुध—धन नाश कफ बात विकार लोगों की अनुकूलता।

केतु—रोग बृद्धि चिन्ताजनक स्थिति उद्योग में अपयश देश त्याग।

शुक्र—कौटुम्ब सुख का नाश अधिक खर्च परदेश वास।

चन्द्र महादशा की अन्तर दशा

चन्द्र—स्त्री पुत्रादि लाभ एष आराम सांपत्तिक सुस्थिति।

मंगल—रक्त दोष बन्धु कलह पित्त विकार भूमि लाभ।

राहु—रोजगार व द्रव्य की हानि दुखदायक प्रसग।

गुरू—शरीर सुख द्रव्य लाभ धन संचय स्त्री पुत्रादि सुख।

शनि—कलह शोक शत्रुत्व भय अपमान कार्य नाश।

बुध—विद्या अधिकार व्यापार स्त्री पुत्र धन लाभ व सुख।

केतु—बन्धु नाश द्रव्य नाश संकट दारिद्र भंगचित।

शुक्र—स्त्री सुख स्त्रियों की प्राप्ति व्यभिचार कन्या संतति योग।

रवि—द्रव्य लाभ रिपु नाश अधिकार प्राप्ति अधिकारी

मंगल महादशा की अन्तरदशा

मंगल—शूर वीरता वेश्या अथवा पर स्त्री संग अधिकार की प्राप्ति।

राहु—शारीरिक कष्ट आपत्ति धन नाश परदेश वास।

गुरु—व्यापार में यश संतति सुख द्रव्य लाभ तीर्थयात्रा।

शनि—धन हानि दुःख व त्रास संकट संतान पीड़ा।

बुध—शत्रु से त्रास अग्नि से भय संकट।

केतु—स्त्री संतान पीड़ा वियोग द्रव्य की हानि।

शुक्र—स्त्री को कष्ट नीचों की संगति देशान्तर वास।

रवि—राजदंड भय द्रव्य लाभ वाहन सुख।

चन्द्र—धन संचय भाग्योदय स्त्री सुख पुत्र प्राप्ति संकट नाश।

राहु महादशा की अन्तर दशा

राहु—देशान्तर में भाग्योदय मान सन्मान द्रव्य क्षय।

गुरु—अधिकारी वर्ग से मैत्री द्रव्य लाभ कार्य में यश।

शनि—राजकोप मृत्यु सम कष्ट बन्धु नाश प्रतिकूल समय।

बुध—अल्प कष्ट अधिक लाभ तीव्र बुद्धि चिन्ता का नाश।

केतु—भयंकर पीड़ा अपमृत्यु द्रव्य नाश नीच स्थिति।

शुक्र—पर स्त्री संग, स्त्री से द्रव्य लाभ, परस्पर में द्वेष।

रवि—अपमान कारक हीना वस्था स्थावर नाश चिन्ता कारक बंधु कष्ट।

चन्द्र—द्रव्य का अभाव दुःख चिन्ता कष्ट।

मंगल—भयंकर हानि देशान्तर लोकोपवाद अनेक संकट शारीरिक कष्ट दुःख।

गुरू महादशा की अन्तरदशा

गुरू—विद्या में यश धन पुत्र लाभ उत्कर्ष ऐश्वर्य वैभव।

शनि—नीच व्यसनी पर स्त्री संग धन हानि।

बुध—दैविक चमत्कार पुत्र लाभ सत्कर्म मान्यता।

केतु—विरोध मतभेद प्रवास चंचल वृत्ति।

शुक्र—स्त्रियों के प्रसंग से धन नाश नुकसान कलह।

रवि—विद्या स्त्री पुत्र सुख व अधिकार प्राप्त।

चन्द्र—राजवर्ग से मित्रता उच्चपदवी वाहन क्षेत्र लाभ।

मंगल—शत्रु नाश द्रव्य लाभ विजय यश स्त्री पुत्र सुख।

राहु—मृत्यु सम पीड़ा स्थानांतर वैर बन्धु विरोधी।

शनि महादशा की अन्तरदशा

शनि—उद्योग हीन परदेश वास ऋण ग्रस्त बन्धु नाश।

बुध—द्रव्य लाभ स्त्री पुत्रादि सुख व्यापार में लाभ नौकरी में लाभ व अधिकार।

केतु—राजदंड अपघात के प्रसंग द्रव्य नाश।

शुक्र—शत्रु नाश स्वजन बंधु मित्र अनुकूल धन प्राप्ति व सर्व प्रकार के सौख्य।

रवि—धन हानि मृत्यु भय स्त्री पुत्र को कष्ट।

चन्द्र—गुप्त रोग स्त्री विरह अन्य स्त्री संभव संतान कष्ट।

मंगल—दारिद्र दुःख हानि अपयश। मानहानि परदेश वास।

राहु—बंधु द्वेष कलह कम सुख पुत्र कष्ट।

बृ०—सकटों का नाश संतति सुख स्थावर नौकर द्रव्य लाभ।

बुध महादशा की अन्तरदशा

बुध—विद्या सुवर्ण रत्नादि लाभ स्त्री पुत्रादि सुख।

केतु—शरीर कष्ट मनोभ्रंश बुद्धि में भ्रम धन नाश।

शुक्र—तीव्र बुद्धि विद्या में यश स्त्री पुत्रादि सुख धन लाभ।

रवि—वाचन शक्ति राज में प्रतिष्ठा ऐश्वर्य सर्व सुख।

चन्द्र—विशेष द्रव्य लाभ धर्म कृत्य सुबुद्धि स्थावर लाभ।

मंगल—कर्ण रोग शास्त्र अग्निभय स्त्री पुत्र को कष्ट।

राहु—गुप्त शत्रु धन नाश अकस्मात संकट दुःख पीड़ा।

बृ०—अति कष्ट अल्प लाभ शत्रु भय व्याधि ग्रस्त शरीर।

श.न—द्रव्य लाभ स्त्री लंपट कामी गुप्तकर्म अनेक लाभ के प्रसंग।

केतु महादशा की अन्तरदशा

केतु—बुद्धि नाश लोक निन्दा संकट बन्धु नाश।

शुक्र—संपत्ति की हानि स्त्री रोग पराधीनता।

रवि—परदेश वास यात्रा में कष्ट शारीरिक कष्ट।

चन्द्र—धन चिन्ता अधिक प्रयत्न व अल्पलाभ दुर्बुद्धि व्यसनी।

मंगल—व्यापार में हानि अपयश दुष्टों की संगति।

राहु—स्त्री को घातक मानसिक चिन्ता कष्ट दूर यात्रा या देश त्याग।

बृ०—सौख्य उच्च पदवी ईश्वर निष्ठा स्थिर वृत्ति।

शनि—दुष्ट संग सबसे विरोध आत्म घात।

बुध—व्यापार या नौकरी में यश धन लाभ परन्तु वृथा खर्च।

शुक्र महादशा की अन्तरदशा

शुक्र—व्यापार में यश द्रव्य लाभ व सुन्दर स्त्रियों की प्राप्ति

रवि—भाग्य वृद्धि स्त्री को कष्ट शरीर रोग कैद दंड।

चन्द्र—स्त्री से मैत्री सौख्य पर स्त्री गमक लोक प्रतिकूल।

मंगल—रक्त दोष रक्त नाश दुष्ट संग स्त्री को मारक धन का व्यय।

राहु—सुख नाश कर्ज संकट दारिद्र अपमान।

बृ०—विद्या अधिकार द्रव्य स्थावर स्टेट व पुत्र लाभ।

शनि—वृद्ध स्त्री से संग अपकीर्त्ति स्त्री पुत्र कष्ट।

बुध—पूर्ण धन लाभ स्थिर बुद्धि स्त्री सुख ऐश्वर्य।

केतु शरीर कष्ट विपत्ति शत्रु से भय अपयश लाभ।

महादशा व अन्तर दशा के फल का वर्णन उपर लिखे अनुसार है। परन्तु फल कब मिलेगा यह जानने के लिए इसका स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। जैसे मानलो कि केतु महादशा में चन्द्र अन्तर दशा का फल अशुभ दिया है किन्तु इस फल का अनुभव चन्द्र अन्तर दशा में अशुभग्रह की विदशा जब आवेगी तभी यह फल अनुभव में आयेगा। परन्तु यह निश्चय करते समय यदि गोचर शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा अन्तर दशा और विदशा ग्रहों पर हो तो फल की तीव्रता कम होकर कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी संभव है। इससे विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त व दृष्ट हों तो उपर दिये हुए फल की तीव्रता अधिक बढ़ेगा यह भी ध्यान में रखना चाहिये। इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुण्डली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है और अनुभव से यह सिद्ध होगा इसमें संदेह नहीं। ग्रह दशा का नर्णय करते समय यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि ग्रह दशा और अन्तर दशा दोनों ग्रहों का किस तरह का सम्बन्ध है शत्रु है या मित्र। और वर्त्तमान समय में गोचर ग्रह गुरू शनि, राहु शुभ फलदायी है अथवा अशुभ फलदायी। दशा ग्रह और अन्तरदशा ग्रह दोनों परस्पर शत्रु हो तो अधिक अशुभ मित्र हो तो शुभ सम हो तो साधारण फल मिलना संभव है। उसी तरह जन्म ग्रह दशा और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हो तो शुभ फल प्रतिकूल हो तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसर प्रतिकूल हो

तो मध्यम फल मिलना स्पष्ट है। इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय विद्या व्यापार नौकरी धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

कुण्डली निर्णय विचार

फलित ज्योतिष शास्त्र या भविष्य कथन विद्या यह जन्म ग्रहों के स्थिति अनुसार मनुष्य के विकास तथा संकोच इन दो मुख्य तत्वों का का दिग्दर्शन मात्र है। और शुभ ग्रह या अशुभ ग्रह इस वर्गीकरण में इन्हीं दो तत्तों का प्रतिबिंब पूर्ण रूप से दिखाई देता है। जिन भाव राशि या ग्रहों से मनुष्य को हर्ष आनन्द व लाभ होता है उसे विकास कहते हैं। और जिनसे मनुष्य को हानि दुःख व संकट प्राप्त होता है उसे संकोच कहते है। अर्थात् विकास और संकोच इन दो तत्वों पर शुभ और अशुभ ग्रहों की व्यवस्था अवलंबित है। और इन दो तत्वों के रूपान्तर या नामान्तर पर फल ज्योतिष शास्त्र का महल खड़ा है तात्पर्य प्राचीन महर्षियों ने अपने तपस्या व आत्मवल पर इन तत्वों का सूक्ष्म विचार ग्रह राशि नक्षत्र योगादि द्वारा निश्चित कर उनका सूक्ष्म परिणाम फलित शास्त्र में वर्णन किया है।

कुण्डली का फल निर्णय करने के पूर्व प्रथम यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस तरह कुटुम्ब या समाज में मार्जियन मनुष्य के मर्जी के मुताबिक कुटुम्ब या समाज के प्रत्येक मनुष्य को अपने व्यक्तिगत अधिकार का विचार न करते कार्य करना

पड़ता है उसी तरह कुण्डली में बलिष्ट या प्रभावशाली ग्रह के प्रभावानुसार अन्य ग्रहों को अपने व्यक्तिगत अधिकार का विचार न करते शुभाशुभ फल देने का कार्य करना पड़ता है। यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

फलित वर्त्तते समय मुख्यतः तीन बातों का अवश्य विचार करना चाहिये। जैसे—

(१) जन्म ग्रह स्थिति (२) जन्म ग्रह दशा (३) वर्त्तमान ग्रह स्थिति कुण्डली का फलित निर्णय करना यह एक बड़ा विकट प्रश्न है। परन्तु पाठकों को कुछ अंश से क्यों न हो इसे अवगत करने में विशेष कष्ट उठाना न पड़े इस हेतु से उदाहरणार्थ नीचे लिखे हुए कुण्डली का विचार किया है।

जन्म कुण्डली
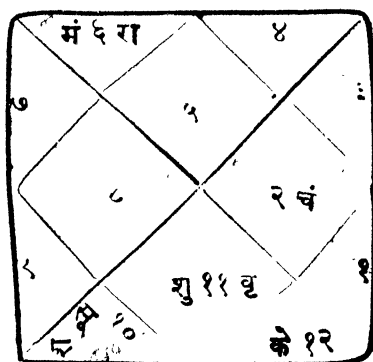
जन्म तारीख ७–२–१९०३ सम्बत् १९५९ शाके १८२४ माघ शुक्ल दशमी शनिवार २३।१८ रोहिनी नक्षत्र १५।४ सूर्यः ९।२४ इष्टम् ३४।३५।

प्रश्न व उत्तर

(१) प्र० कुण्डली किस लग्न की है।

उ०—कुण्डली सिंह लग्न की है क्योंकि सिंह का अंक ५ कुण्डली के प्रथम स्थान या लग्न में है।

(२) प्र० कुण्डली किस राशि की है।

उ०—कुण्डली वृषभ राशि की है क्योंकि वृषभ राशि के अंक में जन्म समय चन्द्र स्थित है।

(३) प्र०द्वादश भावों के स्वामी किन भावों में स्थित है।

उ०—(१) लग्नेश सूर्य षष्ट भाव में है।

(२) धनेश व लाभेश बुध षष्ठ भाव में है।

(३) तृतीयेश व दशमेश शुक्र सप्तम भाव में है या केन्द्र में।

(४) चतुर्थेश व नवमेश मंगल द्वितीय स्थान में है।

(५) पंचमेश व अष्टमेश गुरू सप्तम स्थान में है।

(६) अष्टमेश व सप्तमेश शनि षष्ट स्थान में है।

(७) द्वादशेश चन्द्रमा दशम स्थान में है।

(४) प्र० केन्द्र और त्रिकोण में कौन २ से ग्रह है।

उ०—केन्द्र में चन्द्र. गुरू. शुक्र है।

(५) प्र० ग्रहों की दृष्टि किन २ भावों पर है और उसका क्या फल मिलेगा।

उ०—मंगल की दृष्टि पंचम स्थान पर। सप्तम दृष्टि अष्टम स्थान पर। अष्टम दृष्टि नवम स्थान पर पड़ती है। अतः

संतान के सुख कम मृत्यु में बाधा दीर्घायु भाग्य में बाधा।

(२) शनि की तृतीय दृष्टि अष्टम स्थान पर सप्तम दृष्टी व्यय भाव पर दशम दृष्टि तृतीय भाव पर पड़ती है। अतः फल दीर्घायु खर्च का कम होना भ्रातृ वर्ग से कम प्रेम याने प्रेम होते हुए भी मन में द्वेषता।

(३) गुरू की पंचम दृष्टि एकादश भाव पर सप्तम दृष्टि लग्न पर नवम दृष्टि तृतीय भाव पर पड़ती है। अतः फल लाभ का अधिक होना मान प्रतिष्ठा शरीर स्वस्थ रहना पराक्रम में बृद्धि।

(४) सू. बु. सप्तम दृष्टि द्वादश भाव पर पड़ती है। अतः शुभ कर्म में व्यय होना।

(५) चन्द्र की सप्तम दृष्टि चतुर्थ भाव पर पड़ती हैं। अतः फल पूर्ण सुख होना।

(६) शुक्र की सप्तम दृष्टि लग्न पर पड़ती है अतः स्वास्थ का सुन्दर होना।